सहकर्मी शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण मापदण्ड

राष्ट्रीय ऐडस रोकथाम संस्थान
स्वास्थ्य तथा परिवार कल्याण विभाग
भारत सरकार,
6वीं तथा 9वीं मंजिल, चन्द्रालोक
बिल्डिंग,

भूमिका

उच्च जोखिम समूह (एच०आर०जी०) तथा आम जनता में नयें संक्रमणों की रोकथाम पर राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण कार्यालय (एन०ए०सी०पी०) III का बड़ा जोर है। एच०आई०वी० प्रसार को कम करने का सबसे कारगर साधन है कि लक्षित हस्तक्षेप (टी०आई०) के कार्यान्वयन के माध्यम से एच०आई०वी०/एडस् के लिए अतिसंवेदनशील लोग जैसे महिला यौन कार्यकर्ता (एफ०एस०डबल्यू०), ट्रक चालक, प्रवासीयाँ, पुरूष जिन्होनें पुरूषों से यौन व्यवहार किया (एम०एस०एम०) तथा सुई से नशा करने वालों (आई०डी०यू०)। राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण कार्यालय (एन०ए०सी०पी०) तथा राज्य टी०आई० परियोजनाओं द्वारा उच्च जोखिम समूह पर पूर्ण आवरण रखते हैं।

एन०ए०सी०पी०) III के अन्तर्गत टी०आई० दृष्टिकोण समुदाय आधारित संगठनों (सी०बी०ओ०) या गैर सरकारी संगठनों ग्रामीण तथा शहरी दोनों क्षेत्रों में सहकर्मी के नेतृत्व वाले उपायों को प्रोत्साहित करती है। सभी टी०आई० सही आधार के दृष्टिकोण का अनुपालन करके समुदाये को मजबूत बनाने, हरेक की जानकारी तथा सेवाओं जैसे मौलिक अधिकारों जो कि उसकी एच०आई०वी० की अतिसंवेदनशीलता को कम करने की मांग है तथा उसे जरूरी देख-रेख, उपचार तथा सहायता प्रदान हेतू रचित किये जाते हैं। इस तरह रोकथाम कार्यनीतियों को देख-रेख तथा उपचार से जोड़ा जाता है तथा समुदाये को कलंकित और भेदभाव के विरूध मजबूत बनाने की कोशिश की जा सकती है।

उच्च स्तरीय आवरण पाने तथा कार्यक्रम लागू करने की गुणवत्ता को बनाये रखने के लिए जमीनी स्तर पर कार्यरत गैर सरकारी संगठनो/सी०बी०ओ० पर गुणवत्तापूर्ण अध्ययन अवसरों को प्रदान करवाने की आवश्यकता है।

इस प्रशिक्षण मापदण्ड का उद्देश्य टी०आई० परियोजनाओं के सहकर्मी प्रशिक्षकों (पी०ई०) को लाभ पहुँचाना है। वे परियोजना की रीढ़ की हड्डी हैं तथा यह उनकी वचनवद्धता तथा योगदान है जोकि परियोजनाओं के सफल परिणामों को पाने में लम्बे समय तक रहेगा।

मापांक का प्रारूपः

यह प्रशिक्षण मापदण्ड सहकर्मी शिक्षा पर प्रशिक्षण के लिए एक व्यापक पाठ्यक्रम के आवश्यकता पड़ने के उत्तर में विकसित किया गया। यह सामग्री विष्य वस्तु प्रारूप की एक व्यापक विस्तृत श्रेणी भागीदारों की सहकर्मी शिक्षक होने की भूमिका के दृष्टिकोण को विकसित तथा विस्तृत करने को आवर्ति करती है। इस प्रशिक्षण का केन्द्र बिन्दु पी०ई० के जानकारी तथा कौशल निमार्ण पर है।

यह प्रशिक्षण पुस्तिक दो भागों में विभाजित है:

भाग 1: एफ०एस०डबल्यू० तथा एम०एस०एम० पी०ई० के प्रशिक्षण के लिए
भाग 2: आई०डी०यू० तथा पी०ई० के प्रशिक्षण के लिए

भाग 2 में कुछ सत्र भाग 1 के समान हैं तथा कुछ नये सत्र आई०डी०यू० समूह के लिए अपूर्व हैं।

अनुसूचित करना:

यह मापदण्ड एफ०एस०डबल्यू० के लिए 4-दिन तथा आई०डी०यू० पी०ई० की 3 दिन की प्रशिक्षण कार्यशाला के लिए बनाया गया है। यह बेहतर होगा कि भागीदार यह समय एक खण्ड में प्रशिक्षण कार्यशाला में समर्पित करें।

हर सत्र खुले विचार-विमर्श के लिए समय तथा भागीदारों के साथ अनुभव सांझे करने के लिए योजनाबद्ध किया गया है। मूलभूत शिक्ष के बेहतर यादयास्त के लिए बातचीत के तरीकों जैसे कि समूह कार्य, दिमागी कार्य तथा खेल प्रशिक्षण पुलिन्दे में प्रमुख स्थानों पर शामिल किया गया है। इस पुस्तिका में सुकारक की सहायता के लिए टिप्पणीयाँ मौजूद हैं।

कार्यशाला से पहले

एक प्रशिक्षण कार्यशाला के लिए व्यापक तैयारी की आवश्यकता होती है तथा सुकारक को यह समय से पहले ही निश्चित कर लेना चाहिए। निम्नलिखित सूची सुकारक को इसके लिए मदद कर सकती है।

क्रमांक	विवरण	स्थिति (√ अथवा X)
1.	नियम पुस्तिक तथा एन०ए०सी०ओ० परिचालनात्मक दिशा निर्देशों को पढ़ें	

2.	प्रशिक्षण की तैयारी के लिए प्रशिक्षण पुस्तिका को पूरी तरह से पढ़ें	
3.	पी०ई० तथा ओ०आर०डब्लयू० की भागीदार को टी०आई० परियोजना के साथ श्रृंखलाबद्ध करते हुए सुनिश्चित करें (पी०ई० को समझाने तथा योजना को पूर्ण करने, उपकरणों को लागू तथा निगरानी करने के लिए विशेष सहायता करने के लिए)	
4.	भागीदारों को साथ ले जाने वाले पुलिन्दे (फलिॅप बुक्स 5) के लिए तैयार करें।	
5.	सत्र की आवश्यकता के लिए सारी सामग्री (खेल तथा अभ्यास के लिए) तैयार करें	
6.	सत्रो की आवश्यकता सम्बन्धी संसाधन के लिए स्थानीय व्यक्ति से जुडें रहें (जैसे कि पी०एल०एच०आई०वी० अथवा डाक्टर)	

सुविधाजनक कैसे बनायें:

कार्यशाला के प्रशिक्षक अथवा सुकारक अध्ययन की अनुभवात्मक तथा भागीदारी रूपों परिचित होने चाहिए। उनमें शुरूआत में खुले प्रश्न पूछने की क्षमता होनी चाहिए तथा सभी भागीदारों की शामिल करने के प्रति संवेदनशील होना चाहिए खासकर यह देखते हुए कि समूह विभिन्न रूपरेखा के है।

सुकारक को परामर्श सम्बन्धी प्रश्नों का उत्तर देने के लिए तकनीकी तौर पर सामर्थ होना चाहिए। विभिन्न विषयों के रूपान्तरों स्थानीय आवश्यकताओं तथा प्राथमिकताओं के अनरूप बनाया जा सकता है।

जबकि उपकरणों की एक श्रृंखला जैसे कि बुद्धिशीलता वाले खेल तथा इसी तरह की चीज़ें पुस्तिका में प्रदान किये गये हैं, सुकारक इससे हट कर दूसरी कुछ चीजें सत्र के विषय से सम्मलित शामिल कर सकते हैं जैसे कि तर्क-वितर्क तथा प्रश्नोत्तरी। यह दैनिक आधार पर राय रूपों की समीक्षा के लिए सहायक होगा ताकि किसी भी महत्वपूर्ण मुद्दों का उत्तर दे सकें जैसे कि महत्वपूर्ण मुद्दों में समझ की कमी अथवा विष्यों तथा मुद्दों पर प्रयोज्जता की कमी की समझ, यदि है।

यह प्रतिभागियों के लिए सभी स्तरों पर महत्वपूर्ण होगा कि वे उनके कक्षा शिक्षण को क्षेत्र स्तरीये अध्ययन से परस्पर संबधित कर सकें।

मडयूल को कैसे प्रयोग करें।
हर सत्र निम्नलिखित जानकारी प्रदार करता है।
उद्देश्यः सुकारक सत्र के अन्त तक क्या पाने की उम्मीद रखते हैं।
अपेक्षित परिणामः परिणाम सत्र के परिणामास्वरूप अपेक्षित किए जा सकत हैं।
अवधिः हर सत्र द्वारा लिया जाने वाला अनुमानित समय।
कार्यप्रणालीः अध्यापन कार्यप्रणाली तथा तकनीक जो कि प्रयोग किया जाना चाहिए।
सामग्री/तैयारी जो आवश्यक है: सत्र को चलाने के लिए जो सामग्री की आवश्कयता है उसके चार्ट पेपर, मार्कर पैन, इस्तहार इत्यादि तथा कोई भी और तैयारी जिसकी आवश्यकता है।
प्रणालीः गतिविधियों को लागू करने तथा सत्र चलाने के लिए चरणबद्ध निर्देश। इसमें टिप्पणीयों के रूप में विस्तृत जानकारी सम्मलित है जो कि सुकारक सत्रों के लिए उपयोग कर सकता है।

इसके इलावा हरेक दिन के आखिर में दैनिक प्रतिपुष्टि प्रपत्र प्रदान किये जाते हैं। सुकारक को यह निश्चित करना होता है कि ये हर दिन के अन्त में भरे जाते हैं। यदि आवश्यकता पड़े तो सुकारक को पी०ई० के उपयुक्त ढंग से अपनी प्रतिपुष्टि देने के लिए हर सत्र का शीर्षक प्रतिपुष्टि प्रपत्र में अवश्य पढ़ना चाहिए।

इस पुस्तिका में एनाईजरज़ पर एक अलग खण्ड प्रदान किया गया है जिसे सुकारक अपने विवेक से उपयोग कर सकता है।

कार्यशाला से ले जाने योग्यः

भागीदार फिलिपबुक्स ले जा सकते हैं जो वे समुदायिक सदस्यों के साथ क्षेत्र स्तर पर एक-एक सत्र के लिए कार्य सहायक के रूप में उपयोग कर सकते हैं। इसके इलावा, कोई भी भागीदार जो आई०डी०यू० प्रशिक्षण में उपस्थित होता है पॉवरी पुआईंट प्रस्तुतियाँ ले जा सकता है।

सुकारक के नाते याद रखने वाले प्रमुख मुद्देः

करने योग्यः

- कार्यशाला से पहले प्रशिक्षण पुस्तिका को अच्छी तरह पढ़ लें।
- लचीला रहें। भागीदारों की आवश्यकताओं के अनुसार समयबद्धता को बदलना पड़ सकता है।
- भागीदारी बढ़ाने तथा रूचि बनाये रखने के लिए शिक्षण की विभिन्न विधियों को उपयोग करना।
- शिक्षण की उपलब्ध सारी सामग्री का उपयोग करना जैसे कि हस्त-पुस्तिका, चित्र इत्यादि।
- प्रतिभागियों के स्थानीय जानकारी का सम्मान।
- सहयोगियों को भागीदारी तथा प्रस्तुतियाँ बनाने के लिए प्रोत्साहित करना।
- प्रशिक्षण के बाद सुनिश्चित करें कि निरंतरता बढ़ी है।
- ज्ञात रहे यह एक भागीदार कार्यशाला है तथा आपकी भूमिका सुविधाजनक बनाने की है।

न करने योग्यः

- किसी भी व्यक्ति को विचार-विमर्श का प्रभुत्व करने दें।
- भागीदारों से अधिक बोलें - भागीदारों को मंथन तथा चर्चा करने देना।
- मोबाईल फोन के उपयोग तथा भागीदारों के बीच बातचीत जैसे विकर्षण को अनुमति देना।
- प्रशिक्षण को एक उबाऊ बनाना - सत्रों में स्फूर्तिदायकों से भरना।
- पॉवर प्रस्तुतियों में से पढ़ना - खुद को अच्छे से तैयार करें प्रस्तुतियों को प्रासंगिक बिदुओं के विस्तृतिकरण के तौर पर उपयोग करें।

भाग 1 :
एफ०एस० / एम०एस०एम० / आई०डी०यू० / पी०ई० को प्रशिक्षित करने के लिए नियम पुस्तिका

लेख सूची

क्रमांक	विवरण	पृष्ठ संख्या
भूमिका		
दिन 1		
सत्र 1	शुरूआत 1ए०: भूमिका 1बी: कार्यसूची की उम्मीदें और साझेदारी 1सी: बुनियादी नियम निर्धारित करना	
सत्र 2	सहयोगी शिक्षा 2ए०: सहयोगी शिक्षा की अवधारणा तथा तात्पर्य 2बी: पी०ई० की भूमिका तथा गुण	
सत्र 3	पी०ई० की आवश्यकताएँ तथा महत्वत्ता	
सत्र 4	समुदाय को समझना 4ए० जोखिम तथा कमजोरियों को समझना 4बी० ताने-बाने को समझना	
दिन 2		
सत्र 1	आउटरीच तथा आउटरीच योजनाबद्धता, घटनास्थल विश्लेषण, हॉटस्पाट पर बहुतायत का मानचित्रण	
सत्र 2	यौन सम्बन्ध से होने वाले संक्रमण 2ए० यौन सम्बन्ध से होने वाले संक्रमणों को समझना 2बी० एस०टी०आई० की रोकथाम तथा नियंत्रण में पी०ई० की भूमिका	
सत्र 3	आई०सी०टी०सी० तथा ए०आर०टी० को साकारात्मक रोकथाम तथा संदर्भ	
दिन 3		
सत्र 1	गर्भ निरोधक प्रचार	
	1ए० पुरूष तथा स्त्री गर्भ निरोधक 1बी० गर्भ निरोधक की माँग तथा आपूर्ति गर्भ निरोधक की पहुँच तथा उपलब्धि का मानचित्रण गर्भ निरोधक आंकलन गर्भ निरोधक अन्तराल विश्लेषण	
सत्र 2	अनिसंवेदनशीलता को बताने हेतू संचार	

	2ए० बातचीत के आधार पर आपसी संचारण 2बी० पी०ई० द्वारा एक-एक आधार पर बातचीत	
दिन 4		
सत्र 1	निगरानी तथा दस्तावेजीकरण उपकरण 1: मौका अन्तराल विश्लेषण उपकरण 2: वरिष्ठता प्राथमिकता उपकरण 3: सहयोगी मानचित्रण उपकरण 4: पी०ई० की सप्ताहिक योजना तथा गतिविधि पर्ण	
सत्र 2	संकट प्रबंधन	
सत्र 3	एच०आई०वी० से आगे (सामान्य स्वास्थ्य, स्वंय सहायता समूह, सामाजिक अधिकार)	
सत्र 4	प्रशिक्षण मूल्यांकन	

दिन 1

दिन 1

सत्र की योजना

सत्र 1: शुरूआत (30 मिनट)

- 1ए० भूमिका 10.00 सुबह – 10.10 सुबह – 10 मिनट
- 1बी० कार्यसूची से अपेक्षायें तथा साझेदारी 10.10 सुबह – 10.20 सुबह – 10 मिनट
- 1सी० बुनियादी नियमों की स्थापना 10.20 सुबह – 10.30 सुबह – 10 मिनट

सत्र 2: सहयोगी शिक्षण

- 2ए० सहयोगी शिक्षण की अवधारणा तथा अर्थ 10.30 सुबह – 11.15 सुबह – 45 मिनट
  - अवधारणा पर प्रस्तुतिकरण
  - विचारावेश – सहयोगी शिक्षण के लाभ तथा हानियाँ।

चाय/कॉफी अन्तराल 11.15 सुबह – 11.30 सुबह – 15 मिनट

सत्र 2 जारी.....

- पी०ई० की भूमिका तथा गुण 11.30सुबह – 12.00 दोपहर – 30 मिनट
  - विषय अध्ययन तथा भूमिका
  - विचारावेश – पी०ई० की भूमिका, जिम्मेवारी तथा गुण

सत्र 3: पी०ई० की आवश्यकता तथा महत्वता 12.00दोपहर – 1.00 दोपहर – 1 घंटा

- चलचित्र (फिल्म)
- फिल्म में प्रस्तुत: मुद्दों पर विचार – विमर्श

दोपहर का भोजन 1.00दोपहर – 1.45 दोपहर – 45 मिनट

सत्र 4: समुदाय को समझना (2 घंटे)

- 4ए० जोखिम तथा अतिसंवेदनशीलता को समझना 1.45दोपहर – 2.45 दोपहर – 1 घंटा
  - प्रस्तुतियाँ – जोखिम तथा अतिसंवेदनशील कारक
  - समूह कार्य – जोखिम तथा अतिसंवेदनशील कारक
  - समूहों द्वारा प्रस्तुतिकरण
  - समूह कार्य – पी०ई० की भूमिका

- समूहों द्वारा प्रस्तुतिकरण

- 4बी ताने बाने को समझना 2.45दोपहर – 3.45 दोपहर – 1 घंटा
  - सम्पर्क मानचित्रण – विवरण तथा अभ्यास
  - भौगोलिक तथा सामाजिक ताना – बाना – संकल्पना

दिन 1 का आंकलन 3.45दोपहर – 4.00 दोपहर – 15 मिनट

सत्र 1 : शुरूआत

ए० भूमिका

बी० कार्यसूची से अपेक्षायें तथा साझेदारी

सी० बुनियादी नियम स्थापित करना

सत्र 1 ए० भूमिका

उद्देश्य: भागीदारों तथा सुकारकों को एक दूसरे को जानने में मदद करना तथा अध्ययन के लिए आरामदायक वातावरण स्थापित करना।

अपेक्षित परिणाम: सभी भागीदार तथा सुकारक एक-दूसरे को परिचय करवायेंगे।

अवधि: 10 मिनट

कार्य प्रणाली: खेल/अभ्यास

सामग्री/आवश्यक तैयारी: जैसे कि नीचे अभ्यास में दर्शाया गया है।

प्रक्रिया:

- सभी भागीदारों को 4-दिनी प्रशिक्षण कार्यक्रम में स्वागत है, सभी भागीदारों को उनके प्रशिक्षण में रूचि दिखाने के लिए धन्यवाद।
- भागीदारों को बताइए कि आरम्भ में वे एक दूसरे को जानने का प्रयास करेंगे तथा तत्पश्चात् प्रशिक्षण कार्यक्रम में आगे बढ़ेंगे। उन्हें वर्णित करें कि वे एक खेल खेलेंगे जिसके द्वारा वे एक-दूसरे के बारे में जाने सकेंगे।
- नीचे दिये गये में से एक उपयुक्त खेल/अभ्यास चुनें तथा इन्हें दी गई निर्देशों अनुसार प्रबन्धित करें।

खेल/अभ्यास विकल्प 1 - जोड़ों में भूमिका

(आयोजित करें यदि भागीदार एक दूसरे को जानते न हों अथवा यदि प्रशिक्षण विभिन्न संगठनों के मिले-जुले समूहों के लिए है)

- कागज़ की चिन्हित पर्चीयाँ बनायें जैसे कि फूल, फल, जानवर अथवा कोइ वस्तु। हर चिन्ह की दो-दो पर्चीयाँ होनी चाहिए।
- भागीदारों की गिनती का ध्यान रखते हुए पर्याप्त संख्या में पर्चीयाँ बनायें तथा इन पर्चीयों को एक कटोरे में डालें।
- भागीदारों को गोलाकार खड़ें होने के लिए कहें।
- कटोरे को आगे पकड़ाते हुए हर भागीदार को एक पर्ची उठाने के लिए कहें।
- हर भागीदार को पर्ची पर बना चिन्ह देखने के लिए समय दें तथा तत्पश्चात् दूसरे व्यक्ति को पहचानने में जिसके पास कि वैसे ही चिन्ह वाली पर्ची है।
- एक बार जब भागीदार अपने सहयोगियों को पहचान लें, उन्हें अपने सहयोगी से बाते करके उसके बारे में जानकारी लेनी चाहिए। जानकारी में नाम, स्थान जहाँ से वे आये हों, कार्य जिसमें वे शामिल हों, परियोजना के साथ जुडें हुए वर्षों की संख्या तथा शौक अथवा व्यक्ति की विशेषज्ञता शामिल हो।
- इस परस्पर बातचीत के लिए जोडों को 2 मिनट दें।
- दो मिनट के बाद, हर जोड़ा आगे आये तथा बाकी समूह को एक दूसरे के बारे में जानकारी दें।

खेल/अभ्यास विकल्प 2 - परिवार

(आयोजित करें यदि भागीदार पहले से ही एक दूसर को जानते हों अथवा भागीदार एक ही संगठन से हों जो कि एक दूसरे को काफी समय से जानते हों)

- जानवरों परिवारों के नाम की कागज़ की पर्चीयाँ बनायें जैसे कि यदि एक जानवर हाथी है, तो वहाँ पर हाथीयों की 5-6 पर्चीयाँ होनी चाहिए, एक माता हाथी की, एक पिता हाथी की, एक बच्चा हाथी की तथा इस तरह हाथी परिवार बनायें।
- भागीदारों की गिनती का ध्यान रखते हुए पर्याप्त संख्या में पर्चीयाँ बनायें।
- भागीदारों को गोलाकार में खड़ा करें।
- कटोरे को आगे पकड़ाते हुए हर भागीदार को एक पर्ची उठाने के लिए कहें।
- भागीदार पर्ची को देखें, तथा जानवर की आवाज़ निकालें, फिर बाकी परिवार के सदस्य को ढूँढें। एक परिवार के सभी सदस्य (जैसे कि हाथी परिवार) एक दूसरे के पास आयें।
- जैसे ही परिवार इक्कठे हों, सुकारक एक परिवार को परिचय के लिए आगे बुला सकता है। परिवार के वरिष्ठ सदस्य अपने आप को परिचित करवायेगा तथा बाकी के परिवारिक सदस्य यह बता कर:
  - उस विशेष परिवार में वे व्यक्ति कौन है? (जैसे कि माता हाथी)
  - उसका वास्तविक नाम क्या है?

- परियोजना में वह किस कार्य में कार्यरत है?

- सत्र का खेल के सारांश तथा इसका वर्तमान प्रशिक्षण से औचित्य बताते हुए समापन करें।
  - किसी भी कार्य को आरम्भ करने से पहले एक दूसरे को जानना अच्छा होगा।
  - यह परिचय उम्मीदवश सभी भागीदारों को दोनो ही, सत्र के दौरान तथा सत्र के बाद एक दूसरे से अधिक आजादी से बातचीत करने में प्रोत्साहित करेगा।
  - समूह भाग ले रहे व्यक्तियों की विशिष्ठता के साथ संपन्न हो गया। यह गुण भी परियोजना के कामयाबी की तरफ बढ़ने में सहायक होंगे।

सत्र 1 बी: कार्यसूची से अपेक्षांए तथा साझीदारी

उद्देश्य: यह समझना कि इस प्रशिक्षण कार्यशाला से भागीदार क्या पाने की अपेक्षा रखते हैं?

अपेक्षित परिणाम: भागीदारों की अपेक्षाओं की सूची

अवधि: 10 मिनट

कार्यप्रणाली: विचार–विमर्श, साझीदारी, सूचीकरण

सामग्री/आवश्यक तैयारी: 2 चित्रपट, चिन्हक पैन, प्रशिक्षण कार्यक्रम की सूची

प्रणाली:

- भागीदारों से पूछें: वे यहाँ क्यों आये हैं? वे यहाँ आकर क्या अपेक्षा रखते हैं?
- हरेक को उनके विचार सांझे करने के लिए एक मौका दें।
- जैसे कि वे सांझा करना आरम्भ करें, भागीदारों की अपेक्षाओं को संक्षेप लिखें।
- इसे चित्रपट पर लिखते हुए, जानकारी तथा कौशल के बीच अन्तर करने की कोशिश करें।
- एक चित्रपट पर जानकारी से सम्बधित अपेक्षाएँ लिखें तथा दूसरे पर कौशल से सम्बधित अपेक्षाएँ
- अपेक्षाएँ को पड़ें तथा भागीदारों को बतायें अपेक्षाएँ इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में पूरी की जायेंगी तथा किन का बाद में निवारण किया जायेगा।
- प्रशिक्षण कार्यक्रम का अभिप्राय सांझा करते हुए तथा कार्य सूची पढ़ते हुए सत्र का समापन करें।

सत्र 1 सी: बुनियादी नियम निर्धारित करना

उद्देश्य: प्रशिक्षण कार्यशाला के दौरान अपनाये जाने वाले नियमों को सूचीबद्ध करना। इक्कठा रहने तथा सीखने के लिए गैर-धमकी वाला माहौल पैदा करने में सहायता करना।

अपेक्षित परिणाम: हर एक द्वारा अपनाए जाने वाले बुनियादी नियमों की सूची विकसित करना।

अवधि: 10 मिनट

कार्यप्रणाली: विचार-विमर्श, सूचीकरण

सामग्री/आवश्यक तैयारी: 2 चित्रपट, चिन्हक पैन

प्रक्रिया:

- पिछले सत्र से सदंर्भ लेते हुए, भागीदारों को बतायें कि वे सब रुकेंगे तथा एक साथ वे विषय सीखेंगे जो पिछले सत्र में सांझे किये गये थे।
- इसके लिए यह जरूरी है कि वे नियत नियमों का पालन करें, जो कि प्रशिक्षण प्रक्रिया को बेहतर बनाने में उन सब की सहायता करेंगे। यह नियमों का निर्णय भागीदार स्वंय करेंगे।
- भागीदारों को नियमों का पालन अवश्य करने के लिए प्रोत्साहित करें। (जैसे कि कोई भी किसी की आलोचना न करे, हर कोई जितने वह चाहे प्रश्न पूछ सकता है, मोबाईल मौन अवस्था अथवा बन्द रखें, हरेक को समय का पालन करना चाहिए)।
- भागीदारों के सांझाकरण का संक्षेप लिखें।
- यह वे नियम हैं जिनका प्रशिक्षण कार्यशाला के दौरान पालन किया जायेगा।
- ध्यान रहे कि ये विशेष नियम भागीदारों द्वारा बनाये गये हैं। यदि नहीं तो पहले इसे विचार-विमर्श के लिए आगे रखें तथा यदि सब सहमत हो, तो इसे नियम बनायें जैसे कि प्रशिक्षण कार्यशाला के दौरान की गई साझेदारी गुप्त रखी जायेगी।
- मुद्दों को पढ़ते हुए सत्र का समापन करें तथा इन्हीं मुद्दों पर सभी भागीदारों की आम सहमति लें।

- चित्र पट जिस पर कि बुनियादी नियम लिखें हैं इसे प्रस्तुति पट या प्रशिक्षण हॉल में दीवार पर प्रदर्शित करना चाहिए। यद्यपि आवश्यकता हो तो गैर पढ़े-लिखे पी०ई० के लिए नियमों को चित्रों सहित प्रदर्शित करना चाहिए जैसे कि मोबाईल प्रतिबद्धता को मोबाईल के चित्र पर काटा लगा कर किया जाये।
- यह प्रर्दशन भागीदारों को उनके द्वारा बनाये नियम अपनाने के लिए याद दिलाता रहेगा।

सत्र 2 : सहयोगी शिक्षा

ए० टी०आई० में सहयोगी शिक्षा की संकल्पना तथा अर्थ

बी० टी०आई० में पी०ई० की भूमिका तथा गुण

सत्र 2 ए० टी०आई० में सहयोगी शिक्षा की संकल्पना तथा अर्थ

उद्देश्य: भागीदारों को शब्दों 'सहयोगी', 'शिक्षक', 'सहयोगी शिक्षक' तथा 'सहयोगी शिक्षा' को समझना चाहिए तथा खुद को अपने बारे में सहयोगी शिक्षक की तरह सोचना चाहिए।

अपेक्षित परिणाम: सभी भागीदार तथा सुकारक एक-दूसरे को परिचय करवायेंगे।

अवधि: 45 मिनट

कार्य प्रणाली: खेल/स्पष्टीकरण

सामग्री/आवश्यक तैयारी: चित्र पट, चिन्हक पैन

प्रक्रिया:

- भागीदारों को पूछिये 'सहयोगी शिक्षक कौन है'? विचार-विमर्श को प्रोत्साहित कीजिए।
- भागीदारों के साथ सहयोगी, शिक्षक तथा सहयोगी शिक्षक शब्दो का अर्थ सांझा करें।

सहयोगी:

- एक व्यक्ति जो एक ही समूह से हो जैसे कि
  - स्कूल की संरचना में - विद्यार्थी सहयोगी हो सकते हैं।
  - औद्योगिक संरचना में - कर्मी सहयोगी हो सकते हैं।
  - अस्पताल संरचना में - डाक्टर सहयोगी हो सकते हैं।
- इसी तरह यौन कर्मी संरचना में - सभी यौन कर्मी (किसी भी श्रेणी से सम्बधित हों, गली, घर, लॉज अथवा वैशालय पर आधारित) सहयोगी होंगे तथा एम०एस०एम० संरचना में - सभी पुरूष जिनका यौन सम्बन्ध जिन पुरूषों से है, सहयोगी होंगे तथा

आई०डी०यू० संरचना में – सभी पुरूष तथा स्त्रियाँ जो कि नशीली दवाओं के टीके लेते हैं, सहयोगी हैं।

- इस तरह सहयोगी वह व्यक्ति है जो उसी समूह से सम्बन्ध रखता है तथा इस तरह समूह को तथा इसके मुद्दों को बेहतर ढंग से समझता है।

शिक्षक:

- शिक्षक वह व्यक्ति है जो शिक्षा/जानकारी प्रदान करता है अथवा बदलाव के लिए जागरूकता पैदा करता है।
- शिक्षा आवश्यक नहीं कि औपचारिक ही हो तथा एक-एक की परस्परता को भी शामिल किया जा सकता है।

सहयोगी शिक्षा:

- पी०ई० वह व्यक्ति है जो उसी समूह से है तथा दूसरे सदस्यों के लिए शिक्षक की भूमिका अदा कर रहा है तथा अपने साथीयों के साथ प्रवृति तथा स्वभाविक बदलाव को प्रभावित बनाने के लिए कार्य कर रहा है।
- इस तरह, एक एफ०एस०डबल्यू/एम०एस०एम०/आई०डी०यू० सहयोगी शिक्षक वह व्यक्ति है जो एफ०एस०डबल्यू/एम०एस०एम०/आई०डी०यू० से सम्बन्ध रखता है तथा अपने समूह के साथ कार्य करता है।
- ए०पी०ई० एक लक्षित हस्तक्षेप (टी०आई०) परियोजना है तथा एस०टी०आई०, एच०आई०वी०/एडस् पर तथा सहयोगियों में क्षति कटौति और गर्भ निरोधक के उपयोग के लिए जानकारी देने के लिए जिम्मेवार है जो कि अन्त:त परिणामस्वरूप स्वभाविक बदलाव के लिए सहयोगी प्रभाव पैदा करता है।
- ए०पी०ई० गर्भ निरोधक, चिकना करने वाले पदार्थों सूईया तथा सिरंजों के वितरण के लिए जिम्मेवार है।
- वह परियोजना की निगरानी तथा उन्नति के लिए बुनियादी आंकड़े प्रदान करता है।
- ए०पी०ई० को उसके समुदाय से महामारी को खत्म करने के लिए उसके द्वारा टी०आई० परियोजना के योगदान सम्बधी दिशा निर्देश के लिए गैर सरकारी संगठन/सी०बी०ओ० के अनुरूप शुकराना शुल्क प्रदान किया जाता है।
- ए०पी०ई० व्यक्तिगत अतिसंवेदनशीलता को समझने के लिए जिम्मेवार होता है तथा स्वस्थ तथा फलप्रद जीवन सुनिश्चित करने के लिए दूसरे सदस्यों के साथ अतिसंवेदनशीलता पता लगाने पर कार्य करता है।

('सहयोगी शिक्षकों के उपयोग के लिए प्रशिक्षण मापदण्ड', केयर इंडिया से रूपान्तरित)

- स्पष्टीकरण के उपरान्त 2 चित्रपट निम्नलिखित शीर्षक के साथ लगाईये।

- सहयोगी शिक्षा के क्या लाभ हैं?
- सहयोगी शिक्षा की क्या हानियाँ हैं?

- भागीदारों को उनकी सोच को आजादी से व्यक्त करने दें तथा चित्र पट पर संक्षेप लिखें।
- इस अभ्यास के अन्त में समूह को इस मुद्दे एक सहमति पर आने में सहायता करें कि सहयोगी शिक्षा अथवा समुदाय द्वारा चलाया गया आउटरीच उत्तम तथा चिरस्थायी है हालांकि इसमें कुछ कमियाँ हैं:
  - लक्षित हस्तक्षेप में सहयोगी शिक्षक अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।
  - समुदायिक सदस्य होते हुए वे अपने सहयोगी साथीयों से बातचीत करते हैं तथा इस तरह वे अपनी बुनियादी सच्चाईयों की गहरी समझ के द्वारा परियोजना में योगदान देते हैं।
  - वे परियोजना कर्मीयों तथा समुदाय के बीच दोहरी कड़ी का कार्य करते हैं।
  - वे जीवन तथा कार्य कौशल को भी विकसित करते हैं तथा इस तरह स्वाभिमान, आत्म सम्मान तथा आत्मविश्वास प्राप्त करते हैं।
  - यह उनको अपनी पहचान दुबारा बनाने तथा स्वाभिमान में वृद्धि, आत्म सम्मान तथा सहयोगी शिक्षकों का उत्साह जो समुदायिक सशक्तिकरण की प्रक्रिया की सुविधा प्रदान करते हैं, के समर्थ बनाता है।
- सत्र का इसमें विचारी गई अवधारणाओं तथा उनके औचित्य के सभी महत्वपूर्ण तथ्यों को दोहराते हुए समापन करें।

सत्र 2 बी०: सहयोगी शिक्षकों की भूमिका तथा गुण

उद्देश्य: भागीदारों को समझने में सहायता तथा सहयोगी शिक्षकों की भूमिका को समझना

अपेक्षित परिणाम: एक सहयोगी शिक्षक के रूप में क्या करना चाहिए, की स्पष्टता। ये अन्ततः उनको उनकी भूमिका बेहतर ढंग से निभाने में सहायता करेगा।

अवधि: 30 मिनट

क्रार्य प्रणाली: भूमिका, सूचीकरण
शिक्षक इस सत्र को अलग से लेने का निणर्य ले सकता है अथवा पिछले सत्र के साथ संयोजन के रूप में।

सामग्री/आवश्यक तैयारी: चित्र पट, चिन्हक पैन

प्रक्रिया: पिछले सत्र का संदर्भ लेते हुए (जहाँ पर भागीदार सहयोगी शिक्षण का अर्थ समझे हैं), उन्हें बताइए कि अगले सत्र में वे सहयोगी शिक्षक की भूमिका के बारे में सोचने तथा विचार विमर्श करने जा रहे हैं।
तीन स्वंय सेवकों को बुलाईये तथा उनके साथ निम्नलिखित मामला अध्ययन को सांझा करें।

मामला अध्ययन 1:
एक सहयोगी शिक्षक, जो कि परियोजना के साथ एक वर्ष से है तथा सम्बन्धित आउटरीच समुदायिक सदस्य को मिलता है जो कि अभी अभी सहयोगी शिक्षक नियत हुआ है। नयां सदस्य उसके द्वारा की जाने वाली भूमिक के बारे में जानना चाहेगा तथा उनकी व्याख्या पुराने सहयोगी शिक्षक द्वारा दी जायेगी।

- उन्हें तैयारी के लिए 5 मिनट दीजिए।
- भूमिका प्रदर्शन के समय, सहायक उपकारक सहयोगी शिक्षक की भूमिका को सूचीबद्ध करेगा जैसा कि भूमिका प्रदर्शन में दिखाया गया है।
- भूमिका प्रदर्शन खत्म होने के बाद, सहायक उपकारक द्वारा सूचीबद्ध की गई सहयोगी शिक्षक की भूमिका तथा जिम्मेवारीयाँ पढ़कर सुनाईये तथा भागीदारों से कहिये कि

ऐसी कोई भी चीज़ जो वे समझते हैं कि भूमिका प्रदर्शन में सम्मिलित नहीं की गई है उसे सम्मिलित कर लें।

- यदि भागीदारों द्वारा कुछ भी महत्त्वपूर्ण रह गया हो, उसे विचार-विमर्श के लिए रखीये तथा भागीदारों की सहमति के बाद सम्मिलित कीजिए।
- सहयोगी शिक्षकों की भूमिका की सूची को परिपूर्ण करके बोर्ड पर प्रदर्शित करें। निम्नलिखित सूची को संदर्भ हेतू उपयोग करें।

सहयोगी शिक्षक की भूमिका

- आउटरीच आयोजित करना।
  - O नये समुदायिक सदस्यों की पहचान तथा उसके ताने-बाने के साथ सम्पर्क बनाये रखना
    - ▪ एफ०एस०डबल्यू/एम०एस०एम० पी०ई० के मामले में 60 समुदायिक सदस्य
    - ▪ आई०डी०यू० पी०ई० के मामले में 40 समुदायिक सदस्य
  - O दिये गये महीने में उनसे सप्ताहिक अथवा अर्द्धसप्ताहिक आधार पर सम्पर्क करना।
- उसके सभी सम्पर्कों करे 15 दिन में कम से कम एक बार मिलने तथा उनसे लगातार सम्पर्क स्थापित करना महत्त्वपूर्ण क्यों है, बताने में सामर्थ होना।
- समुदायिक सदस्यों को बातचीत पर आधारित आई०पी०सी० प्रदान करना - एस०टी०आई०, एच०आई०वी०/एडस्, एन०एस०ई०पी०, ओ०एस०टी०, गर्भ निरोधक के उपयोग इत्यादि पर जिनकी जैसे और जब आवश्यकता हो।
- ओ०आर०डब्लयू के साथ, उन्हे बताने के लिए हर व्यक्ति की अतिसंवेदनशील योजना को समझना।
- सेवा तथा वस्तु उद्ग्रहण को प्रोत्साहित करना -
  - O समुदायिक सदस्यों को डी०आई०सी० आने के लिए प्रेरित करना तथा बताना की उन्हें डी०आई०सी० क्यों आना चाहिए।
  - O गर्भ निरोधक का वितरण
  - O सूईयाँ तथा सिरंजें वितरित करना (केवल आई०डी०यू० के मामलों में)
  - O बीमार समुदायिक सदस्यों को संदर्भित करना।
- ओ०आर०डब्लयू० तथा समुदाये में सत्ता संरचना की पहचान करना, जिनका समुदायिक सदस्यों के जीवन पर या तो सकारात्मक या नाकारात्मक प्रभाव हो।
- नये पी०ई० का परियोजना के अन्तर्गत तथा बाहय् प्रशिक्षण।
- डी०आई०सी का अनुरक्षण

- कल्याणकारी परियोजनाओं के लिए मांग उत्पन्न करना तथा हिताधिकारीयों की पहचान की सुविधा प्रदान करना।
- जानकारी एकत्रित करने तथा सेवा उत्तमता के लिए गर्भ निरोधक डिपो पर नियमित दौरा।
- प्राथमिक समूहों के लिए उनके उच्च जोखिम व्यवहार को समझते तथा आंकलन करते हुए कौशल निमार्ण तथा गर्भ निरोधक उपयोग, गर्भ निरोधक व्यवस्था और एस०टी०आई० की पहचान इत्यादि।
- समीक्षा बैठकों में भाग लेना।
- ओ०आर०डब्लयू० की दैनिक सूचनाओं को तैयार करना तथा प्रदर्शित करना।
- लागू की गई गतिविधियों की सूचनायें तैयार करना।
- सभी प्रशिक्षण, कार्यशालाओं तथा गोष्ठीयों में भाग लेना।

(एन०ए०सी०पी० III से - लक्षित हस्तक्षेप के परिचालन सम्बन्धी दिशा निर्देश)

- इसके बाद भूमिकाओं का संदर्भ लेते हुए सहयोगी शिक्षक के क्या गुण होने चाहिए, इसपर विचार-विमर्श तैयार कीजिए।
- यदि आवश्यकता हो तो सूची में अनुवद्धियाँ सुझाईये। निम्नलिखित गुणों को संदर्भ के रूप में उपयोग कीजिए।

सहयोगी शिक्षक के गुण:

- समय के संदर्भ में स्वंय की उपलब्धता
- परियोजना के लक्ष्यों तथा उद्देश्य के प्रति वचनबद्ध
- समुदाये के मूल्यों के प्रति संवेदनशील
- समुदाये के प्रति उत्तरदायी
- दूसरे के सुझावों तथा व्यवहार के प्रति उदार तथा आदरकारी
- एक अच्छा श्रोता
- अच्छा संचार तथा पारस्परिक कौशल
- आत्म विश्वास
- नेतृत्व के गुण
- क्षेत्र में सीखने तथा प्रयोग के लिए तैयार
- संकट के समय समुदायिक सदस्यों को सुलभता के लिए प्रतिबद्धता
- जिम्मेवारीयों को सांझा करना

- परियोजना के लिए लाभदायी जिम्मेवारीयों के लिए समुदायिक सदस्यों को प्रोत्साहित करना।

(एन०ए०सी०पी० III से - लक्षित हस्तक्षेप के परिचालन सम्बन्धी दिशा निर्देश)

- सत्र का समापन
  - O एक टी०आई० में पी०ई० ने भूमिकायें निर्धारित की होती है जो कि उन्हें एक अन्तर लाने तथा परिवर्तन लाने के लिए निभानी होती हैं।
  - O परन्तु पी०ई० के लिए सबसे महत्वपूर्ण भूमिका उच्च जोखिम वाले समूहों के सदस्यों जिनका वे प्रतिनिधित्व कर रहे हैं में विश्वास बनाने तथा विश्वनीयता स्थापित करने की होती है।
  - O पी०ई० में कुछ बुनियादी गुण होने चाहिए जो कि उनके कार्य में उनकी सहायता करें। जिनमें ये गुण नहीं हैं यद्यपि वे सहयोगी शिक्षक हैं, उन्हें इन गुणों को ग्रहण करने के लिए कठिन प्रयास करना चाहिए क्योंकि ये उन्हें उनकी भूमिका बेहतर करने में सहायता करेंगे।

सत्र 3 : सहयोगी शिक्षक की आवश्यकता तथा महत्वता (फिल्म आवरण)

सत्र 3: सहयोगी शिक्षक की आवश्यकता तथा महत्वता (फिल्म आवरण)

उद्देश्य: प्रेरणा पैदा करना कि पी०ई० अपने सहयोगी के जीवन में परिवर्तन ला सकता है।

अपेक्षित परिणाम: प्रतिभागी अपने कार्य के जनून तथा प्रतिबद्धता के प्रति प्रेरित हों।

अवधि: 1 घंटा

कार्यप्रणाली: फिल्म प्रदर्शन, विचार-विमर्श

यह फिल्म एक वेश्यालय की स्थापना पर आधारित है तथा एफ०एस०डब्लयू० पी०ई० के लिए अति उपयुक्त है।

एम०एस०एम० पी०ई० के प्रशिक्षण के लिए सुकारक एम०एस०एम० के इर्द-गिर्द के मुद्दों को अच्छी तरह विचार-विमर्श के लिए इस फिल्म को प्रदर्शित करना चुन सकता है।

आई०डी०यू० पी०ई० के प्रशिक्षण के लिए प्रशिक्षक सजीवित फिल्म प्रदर्शित कर सकता है जो कि आई०डी०यू० के साथ कार्यरत लोगों को प्रशिक्षित करने वाले पुलिन्दे का भाग है।

सामग्री/आवश्यक तैयारी: फिल्म - "कमला दीदी तथा सहकर्मी शिक्षक बनाना", प्रक्षेपक यन्त्र (प्रोजैक्टर) तथा पर्दा

प्रक्रिया:

- सुकारक को पी०ई० की भूमिका दर्शाने तथा क्षेत्र स्तर पर सामना की जाने वाली चुनौतियाँ, पी०ई० को उनके सहयोगीयों के लिए कार्य करने की प्रेरणा वाली फिल्म प्रदर्शित करनी चाहिए।
- यह पहले एक खण्ड में प्रदर्शित की जानी चाहिए। विचार-विमर्श की खातिर फिल्म को दुबारा खण्डों में प्रदर्शित की जा सकती है जिसमें यदि आवश्कता हो तो सुकारक अत्यन्त महत्वपूर्ण संगमों पर रूक पर इस पर विचार-विमर्श कर सकता है।
- विचार-विमर्श इनके इर्द-गिर्द किये जाने चाहिये।

- फिल्म में दशार्ये गये कुछ मुद्दे क्या हैं (समुदायिक सदस्यों को पी०ई० के नियमित दौरों से चिढ़ना, सुरक्षित यौन सम्बन्धों के लिए प्रमुख संदेशों की पुनरावृति करना, अच्छे पी०ई० का चुनाव, एक पी०ई० की भूमिका तथा गुण, समुदायिक सदस्यों द्वारा सामना किये जाने वाले दूसरे मुद्दों के समाधान सम्बन्धी पी०ई० की भूमिका, सामूहिकीकरण इत्यादि)
- क्या यह मुद्दे क्षेत्र स्तर पर पैदा होते हैं?
- हम पी०ई० के नाते इन चुनौतियों का सामना कैसे करेंगे। क्या कमला ने स्थिति को उपयुक्त ढंग से संभाला? क्या उसने स्थिति को संभालने के लिए कुछ अलग किया?
- कमला द्वारा प्रतिबिंबित पी०ई० के कुछ प्रमुख गुण क्या हैं?
- दूसरे मुद्दे जो फिल्म में सम्मिलित नहीं हैं वे क्या हैं, क्या पी०ई० क्षेत्र स्तर पर सामना कर सकता है? इन मुद्दों के समाधान हेतू कुछ हल क्या हैं?
- सुकारक इस बात जोर देते हुए समाप्ति कर सकता है कि फिल्म में दशार्ये गये मुद्दे अगले चार दिन विभिन्न सत्रों में चर्चित किये जायेंगे।

सत्र 4: समुदाय को समझना

ए० जोखिम तथा अतिसंवेदनशील को समझना

बी० ताने–बाने को समझना

सत्र 4 ए०: जोखिम तथा अतिसंवेदनशीलता को समझना

उद्देश्य: प्रतिभगियों को यौन कार्य/सूईयों के सांझा करने में शामिल जोखिम तथा अतिसंवेदनशीलता कारकों तथा दोनों में अन्तर समझाना।

अपेक्षित परिणाम: प्रतिभागियों को /एस०टी०आई० तथा एच०आई०वी०/ एडस् के प्रति अतिसंवेदनशील कारकों पर स्पष्टता होगी तथा जोखिम और अतिसंवेदनशील कटौती कार्यनीतियाँ सीखेंगे।

अवधि: 1 घंटा

कार्यप्रणाली: चर्चा, समूह कार्य, विचारावेश

सामग्री/आवश्यक तैयारी: चित्र पट और चिन्हक

प्रक्रिया:

- सुकारक को अब प्रतिभागियों के बीच चर्चा करनी चाहिए कि एफ०एस०डब्लयू/ एम०एस०एम०/आई०डी०यू० को आर०टी०आई०/एस०टी०आई० तथा एच०आई० वी०/एडस् के संक्रमण के प्रति अतिसंवेदनशील कौन बनाता है।
- पहले उदारहण सहित व्याख्या आरम्भ करें, जोखिम कारक क्या हैं तथा अतिसंवेदनशील कारक क्या हैं?

जौखिमपूर्ण व्यवहार:

यह व्यवहार ही है जो किसी को सीधे तौर पर आर०टी०आई०/एस०टी०आई० तथा एच०आई० वी०/एडस् के संक्रमण के प्रति जोखिम में डालता है। मुख्य जोखिम कारक ये हैं: –

- असुरक्षित गुदा, योनि अथवा मौखिक यौन व्यवहार
- प्रयुक्त सूई/सिरिंज को सांझा करना।

अतिसंवेदनशील कारक:

अतिसंवेदनशील कारक वे हैं जो कि जोखिम व्यवहार को और संभवत: करते हैं अत: जो कि किसी को अप्रत्यक्ष रूप से एस०टी०आई०/एच०आई०वी० संक्रमण के जोखिम में डालता है। अतिसंवेदनशील कारकों के उदाहरण:-

- समूह यौन व्यवहार करना
- गरीब होना (और इसलिए अधिक पैसों के लिए बिना गर्भ निरोधक के यौन व्यवहार, अथवा नई सिंरजों की जगह सिंरजों को सांझा करना)
- स्त्री होना (और इसलिए हिंसा पर झुकना तथा गर्भ निरोधक के बिना जबरदस्ती यौन सम्बन्ध)

जोखिम तथा अतिसंवेदनशील कारकों के बीच महत्वपूर्ण अन्तर है कि अतिसंवेदनशील कारक अपने आप एच०आई०वी० संक्रमण का नेतृत्व नहीं करते। वे केवल जोखिम कार्यों में वृद्धि की संभावना बना सकते हैं। विशेष एच०आर०जी० के लिए अतिसंवेदनशील कारकों के कुछ और उदाहरण:

एफ०एस०डब्लयू की अतिसंवेदनशीलता:

- वेशाल्य के मालिक का दबाव
- नियमित सहयोगी पर निर्भरता
- वित्तीय संसाधनों की कमी
- मादक द्रव्यों का सेवन
- ग्राहकों की भरमार
- हिंसा झेलना (घरेलू भी) इत्यादि

एम०एस०एम० की अतिसंवेदनशीलता:

- गुण्डा तथा दूसरे उत्पीड़न
- वित्तीय संसाधनों का अभाव
- मादक द्रव्यों का सेवन
- साथीयों की संख्या
- नियमित सहयोगी पर निर्भरता इत्यादि

आई०डी०यू० की अतिसंवेदनशीलता:

- पुलिस द्वारा उत्पीड़न
- वित्तीय संसाधनों का अभाव
- सूईयाँ सांझी करने वाले साथीयों की संख्या

- प्रतिभागीयों को उप-समूहों में बाँटीये। हरेक समूह को एफ०एस०डब्लयू० अथवा एम०एस०एम० की एक किस्म दीजिए जैसे कि वेशालय आधारित यौन कार्यकर्ता, गलीयों पर आधारित यौन कार्यकर्ता, गुप्त रूप से कार्यरत यौन कार्यकर्ता, लॉज पर आधारित यौन कार्यकर्ता, कोठा, पांथी, दोहरे कार्यकर्ता इत्यादि। किस्म के आधार पर आई०डी०यू० के लिए कोई विभाजन नहीं है।
- हर समूह को जोखिम व्यवहार तथा अतिसंवेदनशील कारकों को लिपिबद्ध करना चाहिए जोकि विशेष रूप से उस एच०आर०जी० किस्म के हों। संदर्भ के लिए सभी तीनो एच०आर०जी० के उदाहरण नीचे दिये गये हैं।

एच०आर०जी० तथा इसकी प्रकार: गलीयों पर आधारित यौन कार्यकर्ता

जोखिम व्यवहार:

- असुरक्षित यौन कार्य - योनि, गुदा तथा मौखिक

अतिसंवेदनशील कारक:

- अक्समात् पुलिस का छापा
- गलीयों में रिक्शा चालक, गुंडों इत्यादि द्वारा हिंसा से सामना
- अनचाहे विविध साथी जैसे कि एफ०एस०डब्लयू को एक व्यक्ति द्वारा ले जाकर समागम स्थान जैसे कि होटल के कमरे में कई पुरूषों से जबरदस्ती यौन कार्य।
- गर्भ निरोधक ले जाने में मुश्किल

एच०आर०जी० तथा प्रकार: कोठा (एम०एस०एम०)

जोखिम व्यवहार:

- असुरक्षित यौन कार्य - योनि, गुदा तथा मौखिक

अतिसंवेदनशील कारकः

- रहस्योद्घाटन का खतरा तथा इसलिए तुरंत जोकि उच्च जोखिम है
- मूत्रालयों/बस अड्डों इत्यादि पर गर्भ निरोधकों का न मिलना जहाँ पर कि यह त्वरित समागम होते हैं।
- गुण्डों द्वारा हिंसा इत्यादि।

एच०आर०जी० तथा प्रकारः कोठा (एम०एस०एम०)

जोखिम व्यवहारः

- सूईयां/सिरिंजें सांझा करना
- असुरक्षित यौन कार्य - योनि, गुदा तथा मौखिक

अतिसंवेदनशील कारकः

- वित्तीय संसाधनों की कमी के चलते हर समागम के लिए नहीं सूई/सिरिंज की कमी।
- नशीली अवस्था उच्च जोखिम पूर्ण यौन कार्य का नेतृत्व करती है।
- समाज, पारिवारिक सदस्यों द्वारा कलंकित

- प्रतिभागियों को विचारावेश के लिए प्रोत्साहित करना तथा जितने हो सकें आश्यों को सूचीबद्ध करना। यह कारक एफ०एस०डब्लयू०, एम०एस०एम० तथा आई०डी०यू० का प्रत्यक्ष रूप से आर०टी०आई०/एस०टी०आई० अथवा एच०आई०वी०/एडस् के प्रति जोखिम बड़ा सकते हैं अथवा अप्रत्यक्ष रूप से अतिसंवेदनशीलता बढ़ा सकता है (सुनिश्चित करें एक व्यक्ति जो कि लिख सकता है हरेक समूह में उपस्थित हो)।
- हरेक उप-समूह के एक भागीदार से सूची को बड़े समूह से सांझा करने के लिए कहें। कोई भी जोखिम व्यवहार अथवा अतिसंवेदनशीलता कारक यदि छूट गया हो तो बड़े समूह को इसे शामिल करने के लिए प्रोत्साहित करें।
- जोखिम/अतिसंवेदनशीलता को सूचीबद्ध करने के उपरान्त अब प्रतिभागियों से कहें कि उनके अनुसार कौनसी कार्यनीति जोखिम/अतिसंवेदनशीलता को कम करेगी तथा पी०ई० के नाते उनकी भूमिका क्या होनी चाहिये। यह चित्रपट् पर जौखिम व्यवहार तथा अतिसंवेदनशीलता के आगे लिखा जाना जाना चाहिए।

एच०आर०जी० के प्रकार: गलीयों वाले यौन कार्यकर्ता	
जोखिम व्यवहार	पी०ई० की भूमिका - जोखिम कटौती कार्यनीति
असुरक्षित यौन - योनि, गुदा अथवा मौखिक	• हर प्रकार के यौन सम्बन्ध के लिए गर्भ निरोधक के नियमित उपयोग को प्रोत्साहन दें। • पर्याप्त मात्रा में गर्भ निरोधक उपलब्ध करायें। • गर्भ निरोधक का प्रर्दशन करें तथा इसे दुहरायें।
अतिसंवेदनशील कारक:	
- अक्समात् पुलिस छापे - गलीयों में रिक्शा चालकों तथा गुण्डों द्वारा हिंसा - गर्भ निरोधक साथ रखने में मुश्किल	• ओ०आर०डब्लयू को साथ लेकर स्थानीय पुलिस से सलाह मशवरा करें। • ऐसे छापों के ग्रिफतार एफ०एस०डब्लयू० के लिए यदि सम्भव हो तो उपलब्ध रहें। • एफ०एस०डब्लयू० सड़क पर जब कार्यरत हों तो उन्हें एक-दूसरे को देखते रहने के लिए प्रोत्साहित करें। यदि आवश्यकता हो तो छोटे सहायक समूह बनायें। • घटनास्थल पर गर्भ निरोधक डिपो उपलब्ध करायें। यह एक दलाल अथवा पान की दुकान भी हो सकती है।

एच०आर०जी० के प्रकार: कोठा (एम०एस०एम०)	
जोखिम व्यवहार - असुरक्षित गुदा अथवा मौखिक यौन सम्बन्ध	पी०ई० की भूमिका - जोखिम कटौती कार्यनीति • हर तरह के यौन व्यवहार के लिए गर्भ निरोधक के सही तथा नियमित उपयोग को प्रोत्साहित करें। • पर्याप्त मात्रा में गर्भ निरोधक तथा चिकनाहट युक्त पदार्थ उपलब्ध करवायें। • गर्भ निरोधक का प्रर्दशन करें तथा इसे

अतिसंवेदनशील कारक: - जोखिम का भय तथा त्वरित समागम उच्च जोखिम हो सकता है। - मुत्रालयों/बस अड्डों इत्यादि पर गर्भ निरोधक की उपलब्धता न होना जहां पर ये त्वरित समागम होते हैं। - गुण्डों द्वारा हिंसा इत्यादि।	दुहरायें। • आत्म-सम्मान बढ़ाने के लिए समूह में कार्य करें तथा कामुकता स्वीकार करें। • अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थानों जैसे कि मुत्रालय, सब अड्डों इत्यादि पर गर्भ निरोधक डिपो स्थापित करें। • कोठीयों के कार्यरत समय पर एक दूसरे का ध्यान रखने के लिए प्रोत्साहित करें। यदि आवश्यकता हो तो छोटे समूह बनायें।

एच०आर०जी० के प्रकार: आई०डी०यू०)

जोखिम व्यवहार: - सूईयों/सिरिंजों की सांझ - असुरक्षित यौन सम्बन्ध - योनि, गुदा अथवा मौखिक	पी०ई० की भूमिका - जोखिम कटौती कार्यनीति: • पर्याप्त मात्रा में सूईयाँ/सिरिंजें उपलब्ध करवायें। • हर तरह के यौन व्यवहार के लिए गर्भ निरोधक के सही तथा नियमित उपयोग को प्रोत्साहित करें। • गर्भ निरोधक का प्रर्दशन करें तथा इसे दुहरायें।
अतिसंवेदनशील कारक:	
- वित्तीय संसाधनों की कमी के चलते हर समागम के लिए नहीं सूई/सिरिंज की कमी। - नशीली अवस्था उच्च जोखिम पूर्ण यौन कार्य का नेतृत्व करती है। - समाज, पारिवारिक सदस्यों द्वारा कलंकित	• सूई/सिरिंज विनिमय परियोजना की पहचान तथा प्रोत्साहन करायें ताकि हर उपयोग में नई सूई/सिरिंज का उपयोग सुनिश्चित हो। • आई०डी०यू० के कार्य में हर यौन समागम के लिए गर्भ निरोधक के प्रयोग में सहायता करें। • ओ०आर०डब्लयू को साथ लेकर स्थानीय पुलिस तथा आम जनता से सलाह मशवरा करें। • परिवारिक सलाह की शुरूआत के लिए

	आई०डी०यू० तथा परिवार को सलाहकार के साथ मिलाइये।

- एक बार जब समूह कार्य हो जाये, एक समूह को बुलाईये तथा उनके विचार विमर्श सब प्रतिभागियों से सांझे कीजिए। दूसरे प्रतिभागियों द्वारा अनुवृद्धियों को प्रोत्साहित करें तथा यदि कोई दुविधा हो तो चर्चा करें।
- निम्न को संक्षिप्त करते हुए सत्र का समापन करें:
    - जोखिम व्यवहार तथा अतिसंवेदनशील कारकों को समझे तथा समझाये बिना स्वभावविक बदलाव सम्भव नहीं है।
    - केवल जब अतिसंवेदनशीलतायें संबोधित की जाती हैं क्या लोग ज्ञान तथा जानकारी के प्रति पक्षपाती ढंग से उत्तर देते हैं?
    - इस तरह, पी०ई० के नाते यह समझना, स्वीकार करना तथा अतिसंवेदनशील कारकों का पता होना महत्त्वपूर्ण है।

सत्र 4 बी०: ताना-बाना समझना

उद्देश्य: सहयोगी प्रशिक्षकों की सहायता करने के लिए, एच०आर०जी० तक पहुँचने तथा ताने-बाने की किस्मों को समझना।
सहयोगी प्रशिक्षकों का सहायता उनके सम्पर्कों के मानचित्रण द्वारा

अपेक्षित परिणाम: पी०ई० में ताने बाने की किस्मों के बारे में स्पष्टता
पी०ई० द्वारा सम्पर्क तथा इन सम्पर्कों पर आधारित आउटरीचों के लिए योजना

अवधि: 1 घंटा

कार्यप्रणाली: अवधारणा पर प्रदर्शन, चर्चा, उपकरण का अभ्यास

सामग्री/आवश्यक तैयारी: चित्र पट और चिन्हक

प्रक्रिया:

- प्रतिभागियों को बतायें कि अब वे ताने-बाने की किस्मों पर चर्चा करने जा रहे हैं जो कि दोनो पी०ई० चुनाव तथा आउटरीच की योजना के लिए महत्वपूर्ण है।
- हरेक पी०ई० को सम्पर्क मानचित्रण अभ्यास को पूरा करने का निर्देश दें।

सम्पर्क मानचित्रण:

उद्देश्य: हरेक घटनास्थल पर यौनकर्ताओं/एम०एस०एम० के साथ सम्पर्कों का चित्रण इन सम्पर्कों पर आधारित आउटरीच के लिए योजना तैयार करें।

आवृति: हर छः महीने में यह सुनिश्चित करने के लिए कि हरेक घटनास्थल पर दोनो नयें तथा पुराने यौनकर्ता/एम०एस०एम० पहुँचे हैं।

निर्देश:

- कस्बे का एक नक्शा तैयार करें तथा सभी स्थान (स्थल चिन्हों सहित) तथा घटनास्थल नक्शे में चिन्हित करें। हर घटनास्थल में यौनकर्ताओं/ एम०एस०एम० की संख्या लिखें।
- हरेक औ०आर०डब्लयू तथा पी०ई० को एक संकेतिक रंग दें।

- अलग संकेतिक रंगों द्वारा हरेक औ०आर०डब्लयू तथा पी०ई० द्वारा जाने जाने वाले यौन कार्यकर्ताओं की संख्या को चिन्हित करें। जैसे कि पी०ई० लक्ष्मी को लाल रंग तथा उसके हरके घटनास्थल पर सभी यौन कार्यकर्ताओं के सम्पर्कों को लाल रंग से चिन्हित करें।
- तब हरेक घटनास्थल के लिए सम्पर्कों के नामों को सूचीबद्ध करें – पी०ई० तथा औ०आर०डब्लयू क्रमशः। यदि कोई भी पी०ई० लिख नहीं सकता, एक औ०आर०डब्लयू को उसके सभी सम्पर्कों को सूचीबद्ध करने सम्बन्धी उसकी मदद के लिए कहें।

जिला लक्षित हस्तक्षेप (टी०आई०) क्षेत्र कस्बे का नामः

तिथि

कस्बे में अंदाजन आई०डी०यू० की संख्या कस्बे में सम्पर्क किये गये आई०डी०यू० की संख्या

क्र. सं.	घटनास्थल का नाम	पी०ई० 1 सम्पर्कों की संख्या	पी०ई० 2 सम्पर्कों की संख्या	पी०ई० 3 सम्पर्कों की संख्या	पी०ई० 4 सम्पर्कों की संख्या
1					
2					
3					
4					
5					
6					
7					
8					
कुल					

जिलाः लक्षित हस्तक्षेप (टी०आई०) क्षेत्रः स्थितिः

घटनास्थलः

कस्बे में एफ०एस०डब्लयू अनुमानित की संख्या कस्बे में सम्पर्क किए गये एफ०एस०डब्लयू की संख्या

क्रमांक	पी०ई० 1 सम्पर्क का नाम	पी०ई० 2 सम्पर्क का नाम	पी०ई० 3 सम्पर्क का नाम	ओ०आर०डब्लयू० 1 सम्पर्क का नाम	ओ०आर०डब्लयू० 2 सम्पर्क का नाम
1					
2					
3					
4					
5					
6					
7					

8					
9					
10					
11					
12					
13					
14					
15					
समपर्कों की संख्या जो अच्छी तरह मालूम हों:					
न०					

- जो सम्पर्क एक से अधिक सूचीयों में एक से हैं उन्हें रंगों द्वारा चिन्हित करें।
- निम्न पर विचार विमर्श करें।
  - कौन से घटनास्थल पर सम्पर्क सीमित हैं।
  - आउटरीच कहाँ पर घटित नहीं है? हम आउटरीच को कैसे बढ़ा सकते हैं?
  - हर घटनास्थल के सम्पर्क कौन हैं? परियोजना किन तक नहीं पहुँच रही है?
  - याद रहे: सम्पर्क परस्पर अनन्य नहीं हो सकते। एक से समुदायिक सदस्य दो बार गिने नहीं जा सकते।

- यदि कोई निम्न आउटरीच सम्पर्कों के कारणों पर चर्चा करता है, भुगौलिक तथा सामाजिक विष्यों को प्रस्तावित कीजिए।

भुगौलिक ताना-बाने की परिभाषा एक निश्चित भुगौलिक स्थिति में एच०आर०जी० का ताना-बाना/पहुँच से है। इस अवधारणा द्वारा पी०ई० को एच०आर०जी० सदस्य जो किसी एक खास स्थिति में कार्यरत हों, तक पहुँचने की जिम्मेवारी दी जाती है, भले ही उसकी उनसे घन्ष्ठिता अथवा सम्बन्ध कुछ भी हो। व्यवहारिक रूप से इसका मतलब यह है कि सहकर्मी को दोस्त बनाने के लिए किसी विशेष घटनास्थल (भुगौलिक स्थिति) पर सब एच०आर०जी० सदस्यों के पास जाना ही पड़ेगा, चाहे उनकी उम्र, कार्य का समय इत्यादि कुछ भी हो। इस सब के लिए उसे अपने सामान्य यौन कार्य के समय से अलग कार्य करना पड़ सकता है, स्त्रीयों/पुरूषों को मिलने के लिए प्रयत्न अथवा किसी दूसरे ढंग से परिचित होना पड़ सकता है।

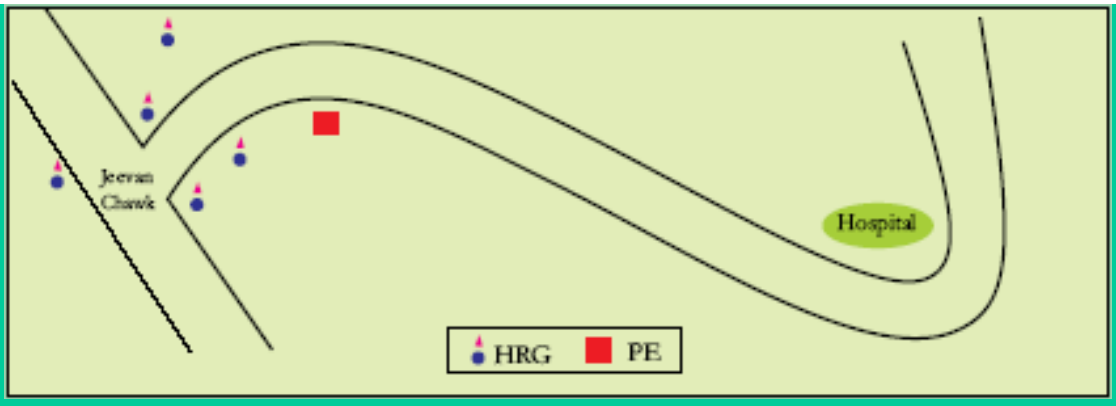

सामाजिक ताने-बाने को एक सामाजिक परिक्रमा में एच०आर०जी० के ताने-बाने/पहुँच से परिभाषित किया गया है। इस आवधारणा के प्रयोग से पी०ई० को उसके मित्रों तक पहुँचने की जिम्मेवारी दी जाती है भले ही उसका भुगौलिक क्षेत्र कुछ हो। इसका व्यवहारिक रूप से यह मतलब यह है कि सहकर्मी को कई घटनास्थलों पर जाना पड़ेगा, उसका अपना कार्य तथा परियोजना का कार्य भी करना पड़ेगा। परियोजना में एक घटनास्थल/भुगौलिक स्थिति पर एक से अधिक सहकर्मी नियुक्त करने पड़ सकते हैं।

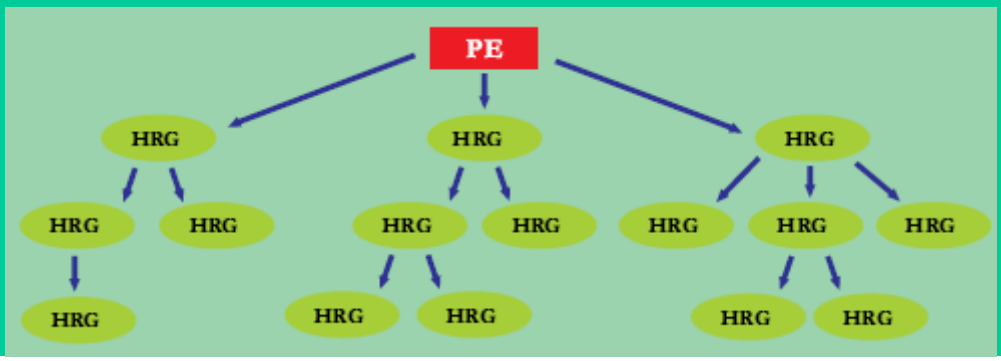

- प्रतिभागियों को दोनों ताने-बानों के लाभ तथा हानियाँ की चर्चा के लिए प्रोत्साहित करें।
- चर्चा का निम्न अनुसार संक्षेप करें।
  - O दोनों ही नैटवर्कों पर सहकर्मी नियुक्त करने तथा आउटरीच योजनाबद्धता के लिए गौर करना महत्वपूर्ण है।
  - O सहकर्मी नियुक्ति स्थिति पर निर्भर करती है तथा चाहे दोनों की कार्यनीतियों को संयुक्त रूप से उपयोग करने की आवश्यकता है। परियोजना के प्रारम्भिक चरण में सामाजिक नैटवर्क अधिक कार्यक्षम हो सकता है बेशक इसमें समय लगता है।
  - O एक बार जब हरेक सहकर्मी/स्वंयसेवी के सभी सामाजिक सम्पर्क परियोजना से परिचित हो जायें तथा हर सहकर्मी द्वारा उसके समूह में दूसरों से घनिष्ठता बन जाये, परियोजना सामाजिक नैटवर्क की और चलनी चाहिए।

- परियोजना को यह निर्णय लेना चाहिए कि क्या अपनाना है तथा इसे परियोजना की आवश्यकताओं तथा उस समय इनकी पहुँच के आधार पर तय करना चाहिए।

दिन 1 का आंकलन

तिथि: प्रतिभागी का नाम (विकल्प):

सत्र	विवरण	प्रतिपुष्टि			टिप्पणी
		☺अच्छी	😐ठीक	☹घटिया	
आज के सत्र को कुल मिलाकर प्रतिक्रिया					
1 ए०	भूमिका				
2 बी०	कार्यसूची को सांझा करना तथा अपेक्षा				
1 सी०	बुनियादी नियम स्थापित करना				
2 ए०	टी०आई० में सहयोगी शिक्षण की अवधारणा तथा गुण				
2 बी०	टी०आई० में पी०ई० की भूमिका तथा गुण				
3	सहयोगी शिक्षक की आवश्यकता तथा महत्त्ता (फिल्म प्रदर्शन)				
4 ए०	जोखिम तथा अतिसंवेदनशीलता को समझना				
4 बी०	नैटवर्कों को समझना				

और कोई टिप्पणीयाँ:

.....

.....

कृप्या अवधि, विष्य वस्तु, कार्यप्रणाली तथा चलचित्र विज्ञापन पर टिप्पणी करें।

दिन 2

दिन 2

सत्र योजना

दिन 1 की पुनरावृति	10.00 सुबह – 10.15 सुबह	15 मिनट
सत्र 1: आउटरीच तथा आउटरीच योजनाद्धता (2 घण्टे)	10.15 सुबह – 11.15 सुबह	1 घण्टा
– आउटरीच तथा आउटरीच योजनाद्धता पर भूमिका		
– व्यापक मानचित्रण		
चाय/कॉफी अन्तराल	11.15 सुबह – 11.30 सुबह	15 मिनट
सत्र 1 जारी.....	11.30 सुबह – 12.30 दिन	1 घण्टा
– घटनास्थल विश्लेषण – व्याख्या तथा अभ्यास		
– घटनास्थल पर दबाव का मानचित्रण – व्याख्या तथा अभ्यास		
सत्र 2: यौन संचरित संक्रमण (1 घण्टा 30 मिनट)		
2ए०: यौन संचरित संक्रमण को समझना	12.30 सुबह – 1.30 दिन	1 घण्टा
– अवधारणा पर प्रस्तुतियाँ		
– चर्चा		
भोजन अन्तराल	1.30 सुबह – 2.15दिन	45 मिनट
सत्र 2 जारी.....		
2 बी० एस०टी०आई० की रोकथाम तथा नियंत्रण में पी०ई० की भूमिका	2.15 सुबह – 2.45दिन	30 मिनट
– चर्चा – अनउपचारिक एस०टी०आई० के कारण		
– समूह कार्य – पी०ई० की भूमिका		
– समूह कार्य का प्रस्तुतिकरण		
सत्र 3: आई०सी०टी०सी० तथा ए०आर०टी० के लिए साकारात्मक रोकथाम तथा संदर्भ	2.45सुबह – 3.45दिन	1 घण्टा
– अवधारणा की परिचय		
– विचारावेश – साकारात्मक रोकथाम तथा इसके मुद्दों की आवश्यकता		

- विचारावेश - पी०एल०एच०आई०वी०
  के लिए सेवाएँ
- चर्चा - आई०सी०टी०सी० तथा ए०आर०टी०
  के लिए संदर्भ

दिन 2 का आंकलन 3.45सुबह - 4.00दिन 15 मिनट

सत्र 1 : आउटरीच तथा आउटरीच योजबद्धता
(घटनास्थल विश्लेषण, घटनास्थल दबाव मानचित्रण)

सत्र 1 आउटरीच तथा आउटरीच योजनाबद्धता

उद्देश्य: प्रतिभागियों को क्षेत्र में स्थिति को समझने की महत्वता को महसूस करने तथा फलस्वरूप अपना कार्य योजनाबद्ध करने में सहायता करना।

अपेक्षित परिणाम: प्रतिभागियों को अपने कार्य को योजनाबद्ध करने के लिए विभिन्न क्षेत्र स्थितियों के मानचित्रण की स्पष्ट समझ।

अवधि: 2 घण्टे

कार्य प्रणाली: चर्चा, मानचित्रण, प्रस्तृतिकरण, व्याख्या

सामग्री/आवश्यक तैयारी: चित्रपट, चिन्हक, अलग-अलग रंगों की अलग-अलग बिंदियाँ। इस अभ्यास के लिए ओ०आर०डब्लयू की उपस्थिति आवश्यक है। सुकारक को यह सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि एक ओ०आर०डब्लयू समूह कार्य अभ्यास के दौरान 6-8 पी०ई० के समूह के साथ कार्य करने के लिए उपस्थित हो।

प्रक्रिया:

- प्रारम्भ में प्रतिभागियों से कहें कि यदि आउटरीच को कामयाब होना है तो क्षेत्र की स्थिति तथा तद्नुसार कार्य को योजनाबद्ध करने का अध्ययन करना तथा समझना महत्वपूर्ण है।
- आउटरीच की आवश्यकता तथा आउटरीच योजना की चर्चा करें।

आउटरीच

यह उच्च जोखिम वाले समूहों को एस०टी०आई० तथा एच०आई०वी० रोकथाम सेवाएँ देने के लिए एक सुनियोजित पद्धति है। आउटरीच का उद्देश्य कुल मिला कर एच०आर०जी० में

एस०टी०आई०/आर०टी०आई० तथा एच०आई०वी०/एडस् के संचरण तथा दूसरे खून के विषाणुओं (खासतौर पर आई०डी०यू० की आबादी में) की रोकथाम है।

आउटरीच में शामिल है:

- एच०आर०जी० समुदायिक सदस्यों से सम्पर्क
- उनके साथ घनिष्ठता कायम करना
- उनको जानकारी तथा सेवायें/सामग्री उपलब्ध करवाना जो कि उनमें एस०टी०आई० तथा एच०आई०वी०/एडस् की रोकथाम कर सके
- उनको स्वास्थ्य तथा दूसरी सेवाओं से जोड़ना

आउटरीच योजनाबद्धता:

यह एक प्रक्रिया है जो एच०आर०जी० समुदायिक सदस्यों के व्यक्तिगत जोखिम तथा अतिसंवेदनशील रूपरेखा पर आधारित है, जो कि विभिन्न उपकरणों के उपयोग द्वारा व्यक्तिगत स्तर की योजना तथा सेवा उद्ग्रहण की निरंन्तरता को सुगम बनाती है।

1) पी०ई० की कार्यविधि के लिए परिभाषित क्षेत्र - जब स्थान निर्धारित तथा उस स्थान की जिम्मेवारी एक पी०ई० के पास हो तो प्रयासों के दुहराव तथा जिम्मेवारयों के विसरण को टाला जा सकता है।
2) मासिक आवरण के लिए पुन: दौरा: पी०ई० दिये गये स्थान के मासिक आवरण के दौरों की निगरारी कर सकता है।
3) व्यक्तिगत निगरानी: पी०ई० निगरानी कर सकता है कि कितने एच०आर०जी० सदस्य दिये गये महीने में विभिन्न सेवाओं के लिए पहुँचते हैं (चिकित्सालय/शिविर उपस्थिति, एक से एक सत्र, सम्पर्क, सामूहिक सत्र तथा गर्भ निरोधक वितरण)।
4) आंकड़ों को एकत्रित करना, विश्लेषण करना तथा उस पर कार्यवाई करना - पी०ई० की दैनिक गतिविधि जानकारी के उपयोग से, पी०ई० आंकड़े उत्पन्न कर सकता है तथा कम कम सेवायें अपने क्षेत्र के सभी एच०आर०जी० को उपलब्ध करा सकता है।
5) पी०ई० का क्षेत्र प्रबन्धक बनना - पी०ई० अपने क्षेत्र में आयोजित की जाने वाली गतिविधियों के आय-व्यय लेखा को निर्धारित है तथा अपने क्षेत्र के सभी एच०आर०जी० को सेवा प्रदान करने की जिम्मेवारी सुनिश्चित करता है।

- प्रतिभागियों को 3 या 4 के समूहों में बाँटीये। आप इस उप-समूह बांट को सभी अभ्यासों के लिए जारी रख सकते हैं अथवा हर अभ्यास के लिए समूहों की बांट फिर से कर सकते हैं।

- प्रतिभागीयों को जहां वे कार्य करते हैं उस क्षेत्र को मानचित्र तैयार करने के लिए कहें। हर समूह को चित्रपट तथा रंगदार चिन्हक तथा विभिन्न प्रकार की बिन्दीयाँ प्रदान करें।
- प्रतिभागीयों को जहाँ वे कार्य करते हैं उस क्षेत्र को चित्रपट पर चित्रित करने के लिए कहें तथा इसमें आस-पास के महत्वपूर्ण स्थानों जैसे कि स्कूल, अस्पताल, पेड़, कुछ दुकानें, ठेके इत्यादि शामिल करें।
- जब वे यह चित्र पूरा कर लें तो उन्हें उन क्षेत्रों को चिन्हित करने के लिए कहें जहाँ पर एच०आर०जी० स्थित हैं (एफ०एस०डब्लयू०, एम०एस०एम० अथवा आई०डी०यू०) तथा हर स्थान पर कितने हैं यह भी निश्चित करें। उदाहरण के तौर पर यदि यह वेशालय है क्षेत्र है तो वे घर चित्रित कर सकते हैं तथा हर वेशालय की स्त्रीयों की संख्या डाल सकते हैं। यदि यह स्थान एम०एस०एम० के लिए है, जैसे कि सार्वजनिक शौचालय, तब उन्हें यह ज्ञात करना होगा कि वहाँ पर कितने एम०एस०एम० हैं।
- क्षेत्रों तथा एच०आर०जी० की संख्या ज्ञात करने के साथ प्रतिभागियों से उनके समय तथा एच०आर०जी० के उस क्षेत्र में पाया जाना भी ज्ञात करने को कहें।
- यह क्षेत्र का एक व्यापक मानचित्रण है जिसमें हरेक पी०ई० कार्य करता है। प्रतिभागियों से कहें कि यह उपकरणों में से मात्र एक है जिसे वह उनके कार्य के लिए उपयोग कर सकते हैं।
- आगे, एक-एक करके विभिन्न उपकरणों पर चर्चा कीजिए जो पी०ई० द्वारा उनके कार्य क्षेत्र तथा योजना को समझने में उपयोग किये जा सकते हैं।
- पहले घटनास्थल विश्लेषण की व्याख्या कीजिए - उपकरण को उपयोग करने के लिए जिन उद्देश्यों तथा प्रक्रिया का पालन किया जाना चाहिए।

घटनास्थल विश्लेषण

लक्ष्य: शहरी स्थिति के दौरान एकत्र जानकारी का संकलन तथा योजना बनाने के लिए परियोजना क्षेत्र के हरके उच्च जोखिम स्थल/स्थान के लिए मूल्यांकन की आवश्यकता।

अवृत्ति: हर 6 महीने में क्योंकि बुनियादी सच्चाईयाँ बदल सकती है।

दिशा निर्देश:

- निम्नलिखित घटनास्थल की खास जानकारी स्थल के लिए योजना विकसित करने के लिए उपलब्ध होनी चाहिए।
  - ग्राहकों की मात्रा - उच्च मात्रा (10 ग्राहक प्रति सप्ताह से अधिक), मध्यम मात्रा (5-9 ग्राहक प्रति सप्ताह), निम्न मात्रा (4 ग्राहक प्रति सप्ताह से कम)

- यौन कर्मीयों की प्रकार - घर पर आधारित, गलीयों पर आधारित, वैशालय पर आधारित, लॉज पर आधारित, ढाबे पर आधारित

  एम०एस०एम० - कोठी, दोहरा प्रतिरूप इत्यादि।
- यौन कर्मी/एम०एस०एम० की आयु: 20 वर्ष से कम, 20-30 वर्ष, 40 वर्ष से अधिक
- कार्यवाही का समय: सुबह (6 बजे - 10 बजे), दोपहर (10 बजे - 2 बजे), शाम (2 बजे - 8 बजे) तथा रात (8 बजे - 6 बजे)
- कार्यवाही की आवृत्ति: दैनिक, सप्ताहिक, मासिक

- निम्नलिखित को दिमाग में रखना चाहिए:
  - ग्राहकों की मात्रा - योजना में सुनिश्चित होना चाहिए कि ग्राहकों की अधिक मात्रा वाले यौन कर्मी/एम०एस०एम० प्राथमिकता पर पहुँचे।
  - किस्म: योजना में यौन कार्य की किस्म शामिल होनी चाहिए तथा हरेक किस्म की आवश्यकतायें निश्चित होनी चाहिए। गलीयों पर आधारित यौन कर्मी याचना स्थल तथा सेवा स्थल पर पहुँच सकते हैं। आउटरीच कर्मी उनके साथ सीधे कार्य कर सकत हैं अथवा नैटवर्क कार्यक्रम द्वारा उन तक पहुँच सकते हैं। दूसरे हाथ में, लॉज पर आधारिक यौन कर्मीयों को लॉज मालिकों से सलाह मशवरा करके लॉज के लड़कों द्वारा ही कार्य करना चाहिए। लॉज आधारित यौन कर्मी भी सेवा स्थलों यानि कि लॉज में पहुँच सकते हैं।
  - आयु - यौन कर्मीयों/एम०एस०एम० की आवश्यकतायें आयु के अनुसार अलग होती हैं इसलिए योजना में यह वर्णित होना चाहिए।
  - कार्यवाही का समय/दिन: कार्यवाही का समय तथा दिन की समझ उस समय के अनुसार आउटरीच को योजनाबद्ध करने में सहायता करेगा। उदाहरण के तौर पर, महीने में कुछ दिन ऐसे अवश्य होते हैं जब अधिक यौन कर्मी/एम०एस०एम० किसी एक स्थल पर आते हैं जैसे कि बाजार। महीने के उन दिनों के लिए आउटरीच को मजबूत करने की आवश्यकता है।

    इसी तरह, कई स्थलों पर शाम तथा रातें बहुत व्यस्त होती हैं। इसलिए परियोजना में सुनिश्चित होना चाहिए कि आउटरीच को दिन के उस समय के दौरान योजनाबद्ध किया गया है।

जिला | लक्षित हस्तक्षेप (टी०आई०) क्षेत्र | घटनास्थल | स्थान | विश्लेषण की तिथि

उच्च मात्रा	किस्म/प्रकार											
	गली			घर			वैश्यालय			बसेरा		
	आयु			आयु			आयु			आयु		
	>20	20-30	30-40	>20	20-30	30-40	>20	20-30	30-40	>20	20-30	30-40
	दैनिक सप्ताहिक	दैनिक सप्ताहिक	दैनिक सप्ताहिक	दैनिक सप्ताहिक	दैनिक सप्ताहिक	दैनिक सप्ताहिक	दैनिक सप्ताहिक	दैनिक सप्ताहिक	दैनिक सप्ताहिक	दैनिक सप्ताहिक	दैनिक सप्ताहिक	दैनिक सप्ताहिक
	समय	समय	समय	समय	समय	समय	समय	समय	समय	समय	समय	समय
	M A E N	M A E N	M A E N	M A E N	M A E N	M A E N	M A E N	M A E N	M A E N	M A E N	M A E N	M A E N
मध्यम मात्रा	किस्म/प्रकार											
	गली			घर			वैश्यालय			बसेरा		
	आयु			आयु			आयु			आयु		
	>20	20-30	30-40	>20	20-30	30-40	>20	20-30	30-40	>20	20-30	30-40
	दैनिक सप्ताहिक	दैनिक सप्ताहिक	दैनिक सप्ताहिक	दैनिक सप्ताहिक	दैनिक सप्ताहिक	दैनिक सप्ताहिक	दैनिक सप्ताहिक	दैनिक सप्ताहिक	दैनिक सप्ताहिक	दैनिक सप्ताहिक	दैनिक सप्ताहिक	दैनिक सप्ताहिक
	समय	समय	समय	समय	समय	समय	समय	समय	समय	समय	समय	समय
	M A E N	M A E N	M A E N	M A E N	M A E N	M A E N	M A E N	M A E N	M A E N	M A E N	M A E N	M A E N
निम्न मात्रा	किस्म/प्रकार											
	गली			घर			वैश्यालय			बसेरा		
	आयु			आयु			आयु			आयु		
	>20	20-30	30-40	>20	20-30	30-40	>20	20-30	30-40	>20	20-30	30-40
	दैनिक सप्ताहिक	दैनिक सप्ताहिक	दैनिक सप्ताहिक	दैनिक सप्ताहिक	दैनिक सप्ताहिक	दैनिक सप्ताहिक	दैनिक सप्ताहिक	दैनिक सप्ताहिक	दैनिक सप्ताहिक	दैनिक सप्ताहिक	दैनिक सप्ताहिक	दैनिक सप्ताहिक
	समय	समय	समय	समय	समय	समय	समय	समय	समय	समय	समय	समय
	M A E N	M A E N	M A E N	M A E N	M A E N	M A E N	M A E N	M A E N	M A E N	M A E N	M A E N	M A E N

एम० – सुबह, ए० – दोपहर, ई० – शाम, एन० – रात

- संक्षेप के बाद, समूहों को उपकरण के उपयोग से अभ्यास करने के लिए प्रेरित करें। इसके लिए प्रतिभागी संचित्र किताबे, चिन्हक पैन तथा बिन्दीयाँ उपयोग कर सकते हैं।
- उपकरण को पूरा करने के बाद, समूहों में से किसी एक को बड़े समूह के लिए प्रस्तुति बनाने के लिए प्रोत्साहित करें।
- निम्न पर चर्चा को प्रोत्साहित करें:
    - समूह द्वारा क्या प्रक्रिया अपना गई?
    - अभ्यास का क्या प्रतिफल रहा?
    - यह अभ्यास आउटरीच योजनाबद्ध करने में किस प्रकार सहायता करता है?
    - इस उपकरण को पूरा करते समय सामान्य गल्तीयाँ क्या हैं?
    - इन गल्तीयों के क्या नतीजे हैं?
- इसके बाद अगले उपकरण पर विचार विमर्श करें – घटनास्थल के बोझ का मानचित्रण

घटनास्थल के बोझ का मानचित्रण

लक्ष्य:

- एफ०एस०डब्लयू०/एम०एस०एम० के दैनिक दबाव को नये सम्पर्कों की संख्या तथा नियमित सम्पर्कों की संख्या के अध्ययन द्वारा एफ०एस०डब्लयू०/एम०एस०एम० के अनुमान में अन्तर को समझीये।
- सम्भावित नियमित सम्पर्कों पर भी जानकारी प्राप्त करें: टी०आई० संघ द्वारा एक महीने में सम्पर्क किये जा सकने वाले सम्भावित एफ०एस०डब्लयू०/एम०एस०एम० की संख्या।

दिशा निर्देश:

- उस क्षेत्र में यौन कार्यस्थलों को स्पष्ट तौर पर दर्शाते हुए टी०आई० क्षेत्र का मानचित्र बनायें (घटनास्थल जिस पर एफ०एस०डब्लयू०/एम०एस०एम० अपने ग्राहकों को लेते हैं/उकसाते हैं)
- एफ०एस०डब्लयू० की किस्म के आधार पर घटनास्थल को रंगों द्वारा चिन्हित करें जैसे कि घर पर आधारित स्थल, वैशालय आधारित स्थल, गली आधारित स्थल इत्यादि।
- हर स्थल के अतिरिक्त एफ०एस०डब्लयू०/एम०एस०एम० की संख्या लिखिए जो एक सामान्य दिन में हमेशा उपलब्ध होते हैं।
- आगे एफ०एस०डब्लयू०/एम०एस०एम० की संख्या लिखिए जो एक सप्ताह में इन स्थलों पर उपलब्ध होते हैं।

- सप्ताह में किन्हीं भी विशिष्ट दिनों जब एफ०एस०डब्लयू०/एम०एस०एम० काफी मात्रा में उपलब्ध हों तथा इसके कारण दर्ज करें जैसे कि एक बाजारी दिवस पर ज्यादा एफ०एस०डब्लयू०/एम०एस०एम० उपलब्ध हों
- एक बार जब उपरोक्त अभ्यास हो जाये, मासिक आधार पर इन स्थलों पर उपलब्ध एफ०एस०डब्लयू०/एम०एस०एम० की संख्या दर्ज कीजिए तथा महीने में खास दिन जहाँ पर व्यापार उच्च हो तथा इसके कारण जैसे कि वेतन वाले दिन अधिक एफ०एस०डब्लयू०/एम०एस०एम० उपलब्ध होते हैं।
- सभी घटनास्थलों पर दैनिक, सप्ताहिक तथा मासिक व्यापार का जोड़ करें तथा एक टी०आई० क्षेत्र में एफ०एस०डब्लयू०/एम०एस०एम० के व्यापार का चित्र बनाइये।
- इन चित्रों को उनके अनुमानों, अपूर्व सम्पर्कों तथा नियमित सम्पर्कों से तुलना कीजिए तथा निम्न का विश्लेषण कीजिए:
  - क्या इन घटनास्थ्लों/टी०आई० क्षेत्रों में सभी एफ०एस०डब्लयू०/एम०एस०एम० अपूर्व सम्पर्कों तथा नियमित सम्पर्कों से अधिक या कम हैं? क्यों?
  - क्या सप्ताहिक तथा मासिक उच्च व्यापार किसी भी प्रकार के विशिष्ट यौनकार्य के साथ सम्बधित है? क्यों?
  - क्या यौनकर्मी क्षेत्र के बाहर से हैं?
  - क्या वहाँ विशिष्ट स्थल हैं जहाँ अपूर्व सम्पर्क तथा नियमित सम्पर्क, मासिक व्यापार से कम हैं? क्यों?
  - टी०आई० क्षेत्र में वे कौन से घटनास्थल हैं (तथा एफ०एस०डब्लयू० की किस्म) जिन्हें कि सकेन्द्रित आउटरीच की आवश्यकता है। इन विशिष्ट घटनास्थलों के लिए कौन (आउटरीच संघ) जिम्मेवार है? उन्हें उच्च सम्पर्क सुनिश्चित करने के लिए क्या आउटरीच में क्या सुधार करने चाहिए?

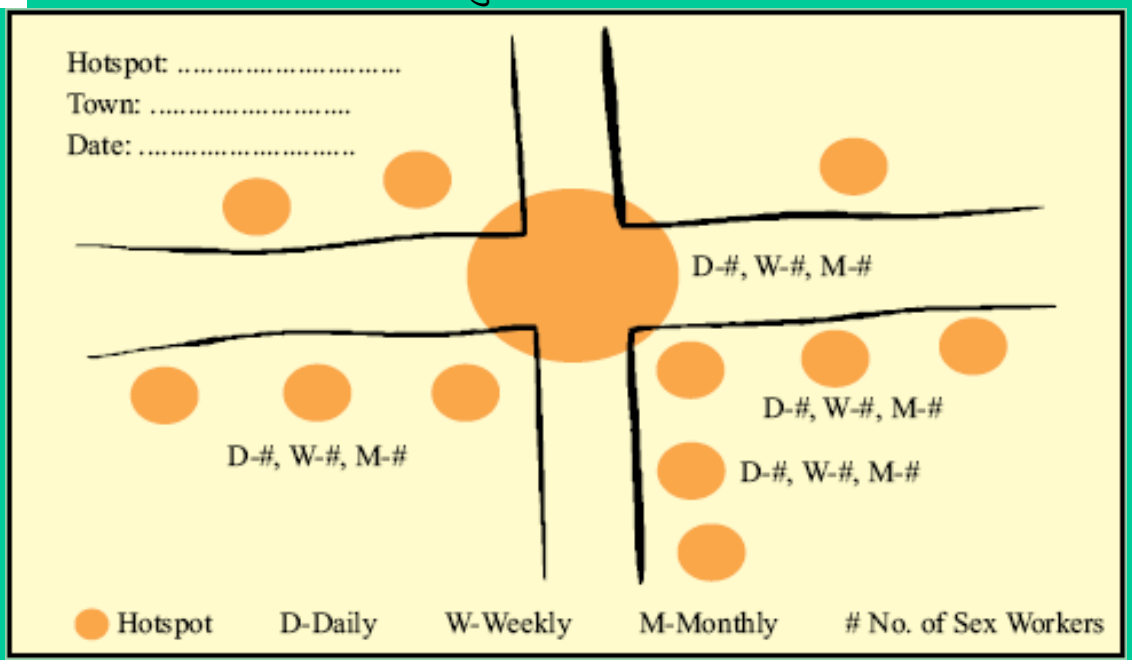

- संक्षेप के बाद, समूह को उपकरण के अध्यास के लिए प्रोत्साहित कीजिए। प्रतिभागी इसके लिए सचित्र किताबें, चिन्हिक पैन तथा बिन्दी का उपयोग कर सकते हैं।
- हर उपकरण को पूरा करने के बाद, समूहों में से किसी एक को बड़े समूह पर प्रस्तुति बनाने के लिए प्रोत्साहित करें।
- निम्न पर चर्चा को प्रोत्साहित करें:
  - समूह द्वारा क्या प्रक्रिया अपना गई?
  - अभ्यास का क्या प्रतिफल रहा?
  - यह अभ्यास आउटरीच योजनाबद्ध करने में किस प्रकार सहायता करता है?
  - इस उपकरण को पूरा करते समय सामान्य गल्तीयाँ क्या हैं?
  - इन गल्तीयों के क्या नतीजे हैं?

सत्र 2 : यौन संचरित संक्रमण (एस०टी०आई०)

ए० यौन संचरित संक्रमण के बारे में समझना

बी० एस०टी०आई० की रोकथाम तथा नियंत्रण में भूमिका

सत्र 2ए० यौन संचरित संक्रमण के बारे में समझना

उद्देश्य: प्रतिभागियों को एस०टी०आई० पर बुनियादी जानकारी देना।
एस०टी०आई० से सम्बधित मिथको तथा गल्तफहमियों को दूर करना।

अपेक्षित परिणाम: प्रतिभागी एस०टी०आई० की किस्मों, चिन्हों तथा लक्षणों, एस०टी०आई० के संचरण तथा उपचार और एस०टी०आई० तथा एच०आई०वी० में सम्बध पर जानकारी प्राप्त करेंगे,

अवधि: 1 घण्टा

कार्य प्रणाली: चर्चा, प्रस्तुति, व्याख्या

सामग्री/आवश्यक तैयारी: कार्ड चित्र - एस०टी०आई० (आगे-पीछे छपाई), चित्रपट तथा चिन्हक पैन
जैसे कि यह तकनीकी सत्र है, यदि आवश्यकता हो तो सुकारक संसाधन व्यक्ति होने के नाते डाक्टर की व्यवस्था कर सकता है।

प्रक्रिया:

नोट: जितना ज्यादा हो सके स्थानीय शब्दावली का उपयोग करें जो कि भागीदारों को विषय-वस्तु को समझने तथा अध्ययन करने में सहायता करेगी।

- आरम्भ में प्रतिभागियों को पूछें यदि उनके दिमाग में एस०टी०आई० के बारे में कोई प्रश्न है अथवा इससे सम्बधित कोई अनुभव जिसे वे सांझा करना चाहते हों।
- प्रश्न प्राप्त करने के बाद अथवा हालात को सुनने के बाद, प्रतिभागियों से एस०टी०आई० के बारे में महत्वपूर्ण तथ्य सांझा कीजिए जो कि इस सत्र में शामिल किये जायेंगे। हर विषय पर विस्तार से चर्चा कीजिए।
- प्रतिभागियों को यदि कोई दुविधा हो तो पूछें। हर दुविधा को पूर्ण करने का प्रयत्न करें।

एस०टी०आई० का फैलाव एफ०एस०डब्लयू०/एम०एस०एम०/आई०डी०यू० उच्च होता है तथा ये यौन कार्य व्यवसाय में एक व्यवसायिक बाधा होता है। एस०टी०आई० की उच्च रफतार के जिम्मेवार कारक एफ०एस०डब्लयू०/एम०एस०एम०/आई०डी०यू० में एस०टी०आई० की निम्न स्तर की जानकारी है। इस मुश्किल के इलावा, इन समुदायों में एस०टी०आई० के बारे में बहुत सी कल्पित बातें तथा गल्त धारणायें हैं। इसके इलावा अधिकतर एफ०एस०डब्लयू० के अनपढ़ होने के कारण वे वैज्ञानिक तथा तकनीकी जानकारी को समझ नहीं पाते, इसलिए वे एफ०एस०डब्लयू० के बारे जानने के इच्छुक नहीं हैं। उपरोक्त मुद्दों को ध्यान में रखते हुए एस०टी०आई० पर सही जानकारी तथा एफ०एस०डब्लयू०/एम०एस०एम०/आई०डी०यू० समुदाय में इसके लक्षणों का प्रचार अत्यावश्यक है।

एस०टी०आई० का अर्थः

एस०टी०आई० का अर्थ है यौन संचरित संक्रमण। यह विषाणु, जीवाणु अथवा फफूंदीय सूक्ष्मजीव जो कि संक्रमित साथी से संभोग के समय संचरित हो जाते हैं, के द्वारा होता है।

एस०टी०आई० के लक्षणः

पुरूषों में एस०टी०आई०ः

मूत्रमार्ग रिसाव

मूत्रमार्ग रिसाव

- मूत्राशय के समय दर्द अथवा जलन
- मूत्राशय की बारम्बारता
- मूत्राशय छिद्र में से क्रीम अथवा पीले रंग का रिसाव आना
- रिसाव बलगम की तरह गाढ़ा अथवा पतला हो सकता है।

दर्दनाक अण्डकोश सूजन

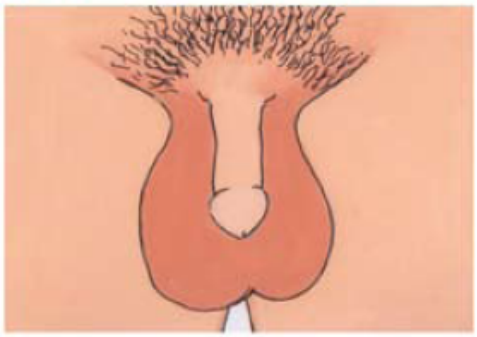

दर्दनाक अण्डकोश सूजन

- ऊसंधि क्षेत्र में सूजन तथा दर्द
- मूत्राशय के समय दर्द अथवा जलन
- प्रणालीगत लक्षण जैसे कि अस्वस्थता, बुखार
- मूत्राशय रिसाव की पाया जाना

वंक्षण गिल्टी

वंक्षण गिल्टी

- वंक्षण क्षेत्र में सूजन जो कि दर्दनाक हो सकती है
- पूर्ववर्ती जननांग फोड़ा अथवा रिसाव
- प्रणालीगत लक्षण जैसे कि अस्वस्थता, बुखार

स्त्रियों में एस०टी०आई०:

योनि रिसाव

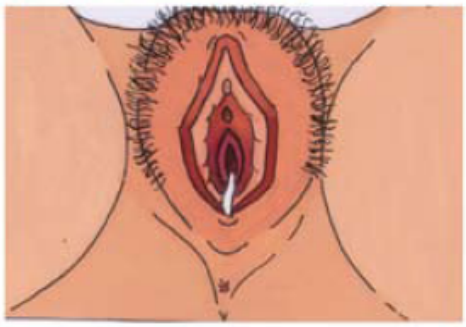

योनि रिसाव

- योनि रिसाव (पनीर, सफेद)
- रिसाव की प्रकृति तथा प्रकार - मात्रा, रंग तथा बास
- जननांग के इर्द-गिर्द खुजली

ग्रीवा रिसाव

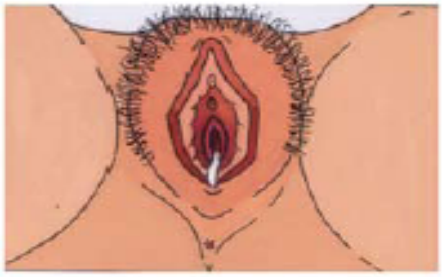

ग्रीवा रिसाव

- बदबूदार पीला रिसाव
- रिसाव की प्रकृति तथा प्रकार - मात्रा, रंग तथा बास
- मूत्राशय के समय जलन - बार बार आना

पेट के निचले हिस्से में दर्द

पेट के निचले हिस्से में दर्द

- पेट के निचले हिस्से में दर्द
- बुखार
- योनि रिसाव
- माहवारी में अनियमितता जैसे भारी, अनियमित योनि रक्तश्राव
- रक्तश्राव के समय दर्द
- पीठ के निचले हिस्से में दर्द
- ग्रीवा की गतिविधि में कोमलता

मौखिक तथा गुदा एस०टी०आई०

एस०टी०आई०

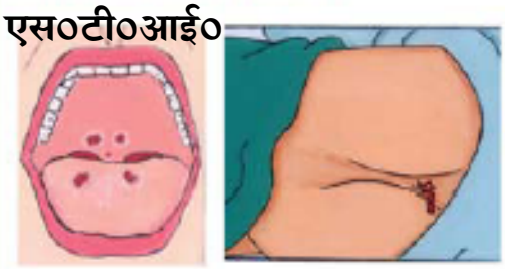

मौखिक तथा गुदा

- गिल्टी, घाव, छाले, रिसाव, मुँह तथा/अथवा गुदे में विकास

दूसरे एस०टी०आई०

- मस्से (एकल अथवा एकाधिक, कोमल दर्दहीन विकास, जो कि गोभी के फूल की तरह हो)
- जननांग का बुरा फैलाव (खुजली तथा खराश जोकि सारे शरीर में जननांग क्षेत्र में ही हो)
- मोलसकम कानटाजिओसॅम (एकाधिक, कोमल, दर्दहीन चिकनाहटयुक्त, मोती जैसी सूजन)
- जननांग खुजली (जननांग में खुजली, खास कर रात के समय)

संचरण तथा रोकथाम:

अधिकतर समय में एस०टी०आई० का संभोग के दौरान सचरण होता है। सिफालिस, हिपाटाईटिस बी, एच०आई०वी० इत्यादि जैसे बीमारियों का संचरण संक्रमित रक्त-आधान से हो सकता है अथवा संक्रमित सूईयाँ/सिरिंजों के उपयोग से। हालांकि, इनतें से अधिकत्तर को उपयुक्त साधनों द्वारा रोका जा सकता है। इन बीमारियों के लिए खून की जाँच एक महत्वपूर्ण कदम है।

इलाज

एस०टी०आई० का जितना जल्दी हो सके उपचार हो जाना चाहिए। अधिकत्तर एस०टी०आई० उपचारिक होती हैं (एच०आई०वी० तथा हिपाटाईटिस के इलावा)। जैसे ही कोई लक्षण दिखाई दें, एक निपुण डाक्टर के पास जाना महत्वपूर्ण है। परन्तु डाक्टर के पास परीक्षण के लिए हर महीने नियमित जाना सुरक्षित है (खासकर एफ०एस०डब्लयू० तथा एम०एस०एम० के मामले में)। जब डाक्टर आपको एस०टी०आई० की दवाई देता है, तो

दवाई का पूरा क्रमानुसार लेना महत्वपूर्ण है। यदि यौन सम्बन्ध टालना सम्भव नहीं तो गर्भ निरोधक का इस्तेमाल सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

गैर – इलाज एस०टी०आई०:

- यह गंभीर बीमारी का कारण बन सकती हैं।
- ये एच०आई०वी० के सम्पर्क के अवसर बढ़ा सकती हैं (नासूर एस०टी०आई०)।
- उपचार से वंचित साईफिलिस दिमागी निष्क्रियता का नेतृत्व कर सकती है।
- यदि माँ गर्भवती हो तो कुछ एस०टी०आई० दूसरी पीढ़ी तक पहुँच जाती हैं (साईफिलिस, गनोहिरया)
- लम्बे समय की गनोहिरया मूत्र मार्ग को संकुचित कर सकती है यहाँ तक की इसे रोक सकती है।
- चिरकालिक सरवीसाईटिस निष्फलता का कारण बन सकती है।

लक्षणात्मक तथा गैर लक्षणात्मक एस०टी०आई०:

कुछ एस०टी०आई० बाहरी चिन्ह तथा लक्षण नहीं दिखाती, परन्तु चिन्ह अन्दर हो सकते हैं तथा इस लिए डाक्टर द्वारा अन्दरूनी जाँच आवश्यक है। कई बार साईफिलिस के लक्षण भी मिट जाते हैं तथा रक्त-जाँच ही इसकी उपस्थिती का पता कर सकती है।

स्त्रियों को पुरूषों की अपेक्षा संक्रमण का अधिक खतरा होता है:

- **शारीरिक कारक:**
  - स्त्रियों में प्रजनन क्षेत्र में व्यापक चिकना क्षेत्र तथा वीर्य को योनि में लम्बी अवधि तक रहना।
  - स्त्रियों के प्रजनन अंगों की गुप्त प्रवति के कारण लक्षण काफी देरी से प्रकट होते हैं।

- **सामाजिक कारक:**
  - परिवार स्वास्थ्य मुद्दों तथा जननी स्वास्थ्य को अनदेखा अथवा असावधानी कर देता है, खास कर जब वे निम्न आर्थिक सामाजिक स्तर से सम्बन्ध रखते हों। यहां तक कि स्त्रियाँ अपने द्वारा भी मुश्किल से अपने स्वास्थ्य पर ध्यान देती हैं।
  - बीमारी के बारे में जानकारी की कमी।
  - स्त्रियों का अपने जननी स्वास्थ्य पर कम नियंत्रण
  - एस०टी०आई० की यौन व्यवहार से सलंग्नता होती है तथा इसी लिए स्त्री का अपनी बीमारी बताना सामाजिक तौर पर स्वीकारणीय नहीं होता।

साथी के उपचार की महत्वता

यदि किसी भी साथी को एस०टी०आई० है, तो दुबारा संक्रमण से बचने के लिए दोनो को डाक्टर के सुझाव से दवाई लेनी चाहिए। यह तब भी किया जाना चाहिए यदि साथी को एस०टी०आई० के लक्षण नहीं हों।

(सलाहकार के लिए एस०टी०आई०/आर०टी०आई० क्लीनिक की प्रशिक्षण पुस्तिका, एन०ए०सी०ओ० तथा पी०ई० की बुनियादी प्रतिशक्षण पुस्तिका, पाथफाईंडर अन्तराष्ट्रीय मुक्त परियोजना द्वारा रूपान्तरित)

- यदि यह प्रतिभागियों का एक एफ०एस०डब्लयू० समूह है, आन्तरिक जाँच की आवश्यकता तथा महत्वता पर भी चर्चा करें।
- वर्णन कीजिए कि स्त्रियों में एस०टी०आई० कई बार लक्षण रहित होती है इसलिए मासिक स्वास्थय जाँच अति आवश्यक है। इस तथ्य पर जोर डालने के लिए एक छोटा खेल आयोजित करें।

आन्तरिक परीक्षा के महत्व पर खेल (एफ०एस०डब्लयू० समूह के लिए)

- चिन्हक पैन लीजिए (प्राथमिकता से लाल रंग) तथा अपनी दायीं बाजू के अन्दर की तरफ जोड़ पर एक बिन्दु लगायें (थोड़ा सा बायीं और)। बिन्दु इस प्रकार लगाया जाये ताकि जब आप कुहनी के जोड़ को बन्द करें यह दिखाई न देना चाहिए।
- अब अपने बाजु के अगले हिस्से को कन्धे की तरफ लाते हुए अपनी कुहनी के जोड़ को बन्द कीजिए।
- अपनी बन्द की हुई बाजु की इस रचना की बायीं तरफ दिखाते हुए प्रतिभागियों से कहें कि योनि मुख जैसा दिखता है (उन्हें असल योनि मुख तथा बाजु की इस रचना के बीच समानता देखने के लिए प्रोत्साहित करें जो कि दो बन्द होंठो की तरह दिखती है)
- प्रतिभागियों से पूछें कि क्या वे इस बन्द बाजु रचना अथवा योनि (जिसे यह दर्शा रही है) की रचना को बाहर से कुछ भी अलग देख रहे हैं
- तब, धीरे से (नाटकीय ढंग से) दूसरे हाथ दो उंगलीयों से योनि (बाजु रचना) के होंठों को कुछ इस तरीके से खोलिए कि जो लाल बिन्दु आपने पहले लगाया था वह दिखाई दे।
- अब प्रतिभागियों से पूछें कि क्या वे योनि अन्दर कुछ देख सकते हैं।
- आवश्कयक उत्तर पाने के बाद (एक लाल बिन्दु, फुन्सी इत्यादि) निम्नलिखित का विवरण दीजिए।

- कोई एक योनि के बाहर कुछ न देख सके (जैसे कि कोई पहले लाल बिन्दु न देख सका हो), पर इसका अर्थ यह नहीं कि वह एस०टी०आई० से पीड़ित नहीं है।
- योनि को खोल कर अन्दर देखने से कोई भी छाले अथवा रिसाव देख सकता है जो कि बाहर से नहीं दिखता। यह लक्षण रहित एस०टी०आई० है।

  यह केवल आन्तरिक जाँच द्वारा ही देखे जा सकते हैं।
- इसलिए चिकित्सालय में नियमित आन्तरिक जाँच करवाना बहुत आवश्यक है।

- निम्नलिखित पर जोर डालते हुए सत्र का अन्त करें।
  - पी०ई० द्वारा एस०टी०आई० पर यह सारी जानकारी समुदायिक सदस्यों को प्रदान करना जरूरी है।
  - बाद के एक सत्र में, पी०ई० यह सीखेंगे कि उनकी समुदायिक सदस्यों से मुलाकात के दौरान सचित्र सहायता (सचित्र किताब) का उपयोग कैसे किया जाये।

सत्र 2ब० सहकर्मी शिक्षक का एस०टी०आई० की रोकथाम तथा नियंत्रण पर भूमिका।

उद्देश्य: प्रतिभागियों को समुदायिक सदस्यों में एस०टी०आई० के नियंत्रण की उनकी भूमिका के बारे में सोचने अथवा स्पष्टता के लिए सहायता करना।

अपेक्षित परिणाम: प्रतिभागी एस०टी०आई० की रोकथाम तथा नियंत्रण के लिए अपनी भूमिका को सूचीबद्ध कर सकेंगे।

अवधि: 30 मिनट

कार्य प्रणाली: समूह कार्य, चर्चा

सामग्री/आवश्यक तैयारी: चित्रपट, चिन्हक पैन

प्रक्रिया:

- बहुत से एफ०एस०डब्लयू०/एम०एस०एम०/आई०डी०यू० को अनाउपचारिक एस०टी०आई० होती है, इसलिए प्रतिभागियों को इसके पीछे कारण पूछिये।
- जैसे कि प्रतिभागियों द्वारा कारण बताये गये हैं, उन्हें सूचीबद्ध कीजिए।
- एस०टी०आई० के जल्द उपचार के महत्व को ध्यान में रखना (पिछले सत्रों का संदर्भ) तथा प्रतिभागियों द्वारा सूचीबद्ध किये कारण, प्रतिभागीयों से कहें कि समूह कार्य में वे चर्चा करेंगे कि हालात को सुधारने में पी०ई० क्या सकता है।
- प्रतिभागियों को चार समूहों में बांटें तथा हर समूह को पी०ई० की भूमिका पर विचारावेश करने दें।
- हर समूह को बड़े समूह के समक्ष अपना विचार-विमर्श प्रस्तुत करने दें।
- प्रतिभागियों के साथ विचार-विमर्श के बाद कोई भी भूमिका शामिल करें, तथापि एस०टी०आई० प्रबन्धन में पी०ई० की भूमिका की एक विस्तृत सूची बनायें।

एस०टी०आई० प्रबन्धन में पी०ई० की भूमिका:

- समुदाय के अधिमान्य नैटवर्क उपलब्ध करवाने वालों पहचान करके समपर्क बनाना।
- एस०टी०आई० के सम्बन्ध में यौन कर्मीयों/एम०एस०एम०/आई०डी०यू० तथा उनके ग्राहकों के बीच जानकारी का प्रसार करना।

- उनको स्वास्थ्य जाँच के लिए चिक्त्सालय जाने के लिए प्रोत्साहित करना।
- उनके साथ चिकित्साल्य जायें (यदि वे इच्छुक हो) ताकि वे होसला कर सकें।
- समुदायिक सदस्यों को साईफिलिस जाँच (साल में दो बार) के लिए प्रोत्साहित करें।
- उपचार की स्वीकृति के लिए उन्हें पूछताछ करें तथा सलाह दें।
- सहयोगियों को चिकित्साल्य लाने के लिए प्रयत्न करें।
- गर्भ निरोधक के नियमित उपयोग के लिए जानकारी तथा सलाह प्रदान करें।
- सेवाओं की गुणवत्ता की निगरानी करें - अनुरक्षण तथा गोपनीयता, पर्दा, परियोजना कर्मीयों द्वारा गैर-अनुमानित रवैया तथा दोस्ताना आचरण मोहईया कराये जाने पर ध्यान दें।
- चिकित्साल्य प्रबन्धन संघ के सक्रिय सदस्य बनें।
- चिकित्साल्य बैठकों में सक्रिय भाग लें तथा प्रतिपुष्टि दें जो कि चिकित्साल्य संघ तथा आउटरीच संघ द्वारा एकत्रित आंकडों को त्रिकोणीय ढंग से विश्लेषित करेगा।
- चिकित्साल्य संघ/एस०टी०आई० देखभाल प्रदान करने वालों तथा समुदायिक सदस्यों के बीच कड़ी का कार्य करें।
- समुदायिक सदस्यों/हॉटस्पाट जहां पर एस०टी०आई० चिकित्साल्य का कार्य कम हो, के लिए ओ०आर०डब्लयू के साथ एक आउटरीच योजना विकसित करें।
- सेवाऐं लेने के लिए नये समुदायिक सदस्यों को प्रोत्साहित तथा शामिल करें।

(पी०ई० की बुनियादी प्रतिशक्षण पुस्तिका, पाथफाईंडर अन्तराष्ट्रीय मुक्त परियोजना द्वारा रूपान्तरित)

सत्र 3 : आई०सी०टी०सी० तथा ए०आर०टी० के लिए साकारात्मक रोकथाम तथा संदर्भ

सत्र 3 — आई०सी०टी०सी० तथा ए०आर०टी के लिए साकारात्मक रोकथाम तथा संदर्भ

उद्देश्य: प्रतिभागियों को साकारात्मक रोकथाम की महत्वता, पी०एल०एच० आई०वी० के लिए क्षति कटौति परामर्श तथा पी०एल०एच०आई०वी० के यौन अधिकारों के सम्मान को समझने के लिए सहायता करना।

अपेक्षित परिणाम: प्रतिभागी साकारात्मक रोकथाम के विभिन्न पहलुओं को समझ सकेंगे तथा अपने सहयोगियों को साकारात्मक रोकथाम में परामर्श दे सकने के योग्य होंगे।

अवधि: 1 घण्टा

कार्य प्रणाली: पी०एल०एच०आई०वी० से अनुभव सांझा करना, चर्चा, प्रस्तुति, समूह कार्य, भूमिक निभाना, विचारावेश

सामग्री/आवश्यक तैयारी: स्थानीय सेवाओं पर जानकारी जो कि पी०एल०एच०आई०वी० के लिए तत्परता से उपलब्ध हों।

प्रक्रिया:

- एच०आई०वी० साकारात्मक समुदायक सदस्य के आने के लिए प्रबन्ध कीजिए तथा प्रतिभागीयों के अनुभव उसके अनुभव सांझे कीजिए।
  - उस समय के हालात जब किसी को साकारात्मक स्तर की जानकारी हो जाती है।
  - किसी के हालात जिनमें वो आज है।
  - वह किन अनुभवों से गुजरा है?
  - किसी ने चुनौतियों को सामना कैसे किया है?
  - उसने कहाँ से तथा किससे सहायता पायी है?

- यदि उपरोक्त सम्भव नहीं है, तक प्रतिभागियों से उनके आस-पास किसी एच०आई०वी० साकारात्मक जन के बारे में पूछें, उनके मित्र अथवा कोई भी और। उन्हे यह भी पूछिये कि उन्होंने क्या मुसीबतें झेली - सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, वित्तीय, देखभाल से सम्बधित इत्यादि।

साकारात्मक रोकथाम क्या है?

एच०आई०वी० द्वारा सवंमित लोगों की रोकथाम की आवश्यकताओं को पूरा करने को 'साकारात्मक रोकथाम' कहा गया है। यह स्वाभिमान, होसला बढ़ाने तथा एच०आई०वी० साकारात्मक लोगों को उनके स्वास्थ्य की सुरक्षा तथा दूसरों को संक्रमण के संचरण से बचाने पर लक्षित है।

- समूह के साथ निम्नलिखित प्रश्नों पर विचारावेश
  - पी०एल०एच०आई०वी० को एच०आई०वी० के संचरण की रोकथाम के बारे में जानकारी क्यों जरूरी है?
  - साकारात्मक रोकथाम के महत्वपूर्ण संदेश क्या हैं?
  - विपरीत-स्थिति वाले जोड़ों के कुछ मुद्दे क्या हैं (जैसे कि एक जोड़े में एक जन साकारात्मक तथा दूसरा नहीं है)।
  - विचारा-विमर्श का संक्षेप करें।

पी०एल०एच०आई०वी० को एच०आई०वी० के संचरण की रोकथाम के बारे में जानकारी क्यों जरूरी है?

एच०आई०वी० के साथ रहने वाले लोगों को सुरक्षित यौन सम्बन्ध तथा सुरक्षित टीकाकरण व्यवहार पर जानकारी तथा सहायता आवश्यक है। उनके सहयोगीयों को भी इस बारे में बताना आवश्यक है। पी०एल०एच०आई०वी० के पास चुनने के लिए व्यक्तिगत यौन स्वास्थ्य के अधिकार हैं:

- यौन क्रिया की जाये अथवा नहीं
- यौन सम्बन्ध का आनन्द तथा तसल्ली की विधि
- उनकी तथा उनके साथियों की सुरक्षा सुनिश्चित करना

लोगों को जोखिम का ज्ञान बदल सकता है जब उनकी स्वास्थ्य हालात सुधरते हैं तथा रोकथामों संदेशों का सृढ़डीकरण आवश्यक है।

साकारात्मक रोकथाम के महत्वपूर्ण संदेश क्या हैं?

पी०एल०एच०आई०वी० को इन पर जानकारी प्रदान की जानी चाहिए।

- यौन संचरण को जोखिम
- उपयुक्त ढंग
- उपलब्ध सेवांए

विपरीत–स्थिति वाले जोड़ों के कुछ मुद्दे क्या हैं (जैसे कि एक जोड़े में एक जन साकारात्मक तथा दूसरा नहीं है)?

यह जोड़े एच०आई०वी० के एक जैसे स्तर के नहीं हैं (एक एच०आई०वी० साकारात्मक है तथा दूसरा नहीं)। उनको जोखिम कम करने तथा अभिभावकीए विकल्पों पर गौर करना जरूरी है। कुछ मुद्दों पर गौर करना चाहिए।

- इक्कठे सलाह लेने में अरूचि
- गर्भ निरोधक के नियमित उपयोग में अड़चने
- नाकारात्मक साथी से सहायता के लिए स्वास्थय देखभाल प्रादाताओं द्वारा चर्चा तथा प्रोत्साहन

खासतौर पर आई०डी०यू० जनसंख्या के लिए:

- सुरक्षित सूई लगवाने के लिए योजना विकसित करने के लिए सहायता दें।
- सुरक्षित यौन कार्यों के लिए भी सलाह क्योंकि वे यौन व्यवहार द्वारा भी जोखिम में हैं।

(ए०आर०टी० सलाहकार के लिए पुनश्चर्या प्रशिक्षण, एन०ए०सी०ओ० द्वारा रूपान्तरित)

- पी०एल०एच०आई०वी० प्रवक्ता से कहें कि अब वह अति विशिष्ट मुद्दों पर बात करे:
  - आई०सी०टी०सी० में अनुभव, प्रक्रिया का पालन
  - ए०आर०टी० केन्द्र में अनुभव, प्रक्रिया का पालन
  - पी०एल०एच०आई०वी० के लिए उपलब्ध दूसरी सेवांए
- यदि प्रवक्ता उपलब्ध नहीं हो, तो समूह का एच०आई०वी० साकारात्मक लोगों के लिए उपलब्ध सेवाओं पर विचारावेश करने दें।
- इस सेवाओं को सूचीबद्ध करें। सूचीबद्ध करते समय सेवाओं को दो भागों में बांटें, वे जो कि परियोजना द्वारा प्रदान अथवा उपलब्ध करवायी गई तथा दूसरी सेवांए।

पी०एल०एच०आई०वी० के लिए संदर्भित सेवाएं:

एच०आई०वी०/एडस् एक बड़ी सामाजिक समस्या साथ ही एक तीव्र चिकित्सा चुनौती बनकर उभरी है। इस बीमारी के साथ जो कलंक जुड़ा है उससे सामाजिक पक्षपात तथा एच०आई०वी०/एडस् ग्रस्त व्यक्ति के प्रति स्नेहनिवृत्ति तथा उनके परिवारों को भी

सामाजिक बहिष्कार झेलना पड़ता है। नौकरी के लिए मना, घर तथा बुनियादी सुविधाएं, पी०एल०एच०आई०वी० अक्सर उनके परिवारों तथा समाज द्वारा बहिष्कृत कर दिये जाते हैं। यहाँ तक कि स्वास्थय देखभाल प्रादाता भी अक्सर उनके बहिष्कार के लिए जाने जाते हैं। यह सब उन व्यक्तियों तथा उनके परिवारों के पर अत्यधिक मनोवैज्ञानिक दबाव पैदा करता है जिससे कि गंभीर अवसाद तथा यहां तक कि आत्महत्या जैसी कोशिश हो जाती है। इसके इलावा अवसरवादी संक्रमण (ओ०आई०) जैसे कि टी०बी० इस बीमारी के बोझ को बढ़ाते हैं। एच०आई०वी०/एडस् के साथ जी रहे लोगों के लिए देखभाल तथा सहायता एच०आई०वी०/एडस् हस्तक्षेप परियोजना में एक महत्वपूर्ण चिंता बन चुकी है।

एच०आई०वी० साकारात्मक लोगों के लिए उपलब्ध सेवाएं:

- परियोजना के स्तर पर
  - O सलाह
  - O पी०ई० सहकर्मीयों द्वारा सहायता
  - O समूहों की सदस्यता जैसे कि पी०एल०एच०आई०वी० सहायता समूह
- दूसरे स्वास्थ्य केन्द्रों पर
  - O आई०सी०टी०सी० तथा ए०आर०टी० केन्द्रों पर – परीक्षण तथा उपचार
  - O सलाह सेवा
  - O डी०ओ०टी० सेवाएं – टी०बी० के इलाज के लिए
- सरकारी स्तर पर योजनाएं
  - O संजय गांधी निराधार योजना
  - O बीमा योजना

सहकर्मी शिक्षक की भूमिका:

- एच०आर०जी० तथा पी०एल०एच०आई०वी० में भी एच०आई०वी० की जागरूकता फैलाना।
- एच०आर०जी० को एच०आई०वी० की जाँच की आवश्यकता तथा यह कहाँ उपलब्ध है, के बारे में बताना।
- एच०आर०जी० को एच०आई०वी० जाँच के लिए आई०सी०टी०सी० (दृिवार्षिक परीक्षण) जाने के लिए प्रोत्साहित करना।
- यदि आवश्यकता हो तो एच०आर०जी० के साथ आई०सी०टी०सी० जायें।
- एच०आई०वी० स्तर की गोपनीयता सुनिश्चित करें।
- आई०सी०टी०सी० पर जाँच किये गये एच०आर०जी० की जाँच से पहले तथा जाँच के बाद की सलाह सुनिश्चित करें।

- एच०आई०वी० साकारात्मक व्यक्ति तथा उसके परिवार के साथ खड़े हों।
- सरकारी ए०आर०टी० केन्द्रों ए०आर०टी० से पहले पंजीकरण सुनिश्चित करें।
- पी०एल०एच०आई०वी० के लिए उचित उपचार हेतू स्वास्थ्य देखभाल प्रादाताओं से संपर्क
- एस०टी०आई० मरीज़ों तथा एच०आई०वी० के मरीज़ों की पत्नीयों को नियमित जाँच के लिए प्रोत्साहित करें।
- एच०आई०वी० स्तर से निपटें।
- डाक्टर तथा परामर्शदाता का संदर्भ दें।
- पी०एल०एच०आई०वी० के परिवारों को आज्ञा अनुसार परामर्श दें।

- **सत्र को संक्षेप करें:**
  - पी०ई० द्वारा एच०आर०जी० को आई०सी०टी०सी० पर एच०आई०वी० जाँच का उल्लेख जरूरी।
  - पी०ई० का ए०आर०टी० सेवाओं सहित सभी सेवाओं से जुडने में महत्वपूर्ण भूमिका ताकि पी०एल०एच०आई०वी० को प्रभावपूर्ण सहायता दी जा सके।

दिन 2 का आंकलन

तिथि: प्रतिभागी का नाम (विकलपित):

सत्र	विवरण	प्रतिपुष्टि			टिप्पणी
		☺अच्छी	😐ठीक	☹घटिया	
आज के सत्र का सर्वत्र प्रतिक्रिया					
1	आउटरीच तथा आउटरीच योजनाबद्धता (स्थल विश्लेषण, घटनास्थल पर बोझ का मानचित्रण				
2	यौन संचरित सक्रमण को समझना				
3	पी०ई० की एस०टी०आई० की रोकथाम तथा नियंत्रण में भूमिका				

कोई और टिप्पणी

.....

.....

*कृप्या अवधि, विष्य वस्तु, कार्यप्रणाली तथा सचित्र साधन पर टिप्पणी करें।

दिन 3

दिन 3

सत्र योजना

दिन 2 का संक्षप्ति	10.00सुबह – 10.15सुबह	15 मिनट
सत्र 1: गर्भ निरोधक प्रोत्साहन (2 घण्टे 30 मिनट)		
• ए० पुरूष तथा स्त्री गर्भ निरोधक O पुरूष तथा स्त्री गर्भ निरोधक – प्रस्तुतिकरण O गर्भ निरोधक के बारे में कल्पित बातें – चर्चा O गर्भ निरोधक प्रदर्शन	10.15सुबह – 11.15सुबह	1 घण्टा
चाय/काफी अन्तराल	11.15सुबह – 11.30सुबह	15 मिनट
सत्र 1 जारी.....		
• बी० गर्भ निरोधक माँग तथा आपूर्ति O प्रस्तुतिकरण तथा अभ्यास – गर्भ निरोधक की सुलभता तथा उपलब्धता मानचित्रण O प्रस्तुतिकरण तथा अभ्यास – गर्भ निरोधक अनुमान O प्रस्तुतिकरण तथा अभ्यास – गर्भ निरोधक अन्तर विश्लेषण	11.30सुबह – 1.00सुबह	1 घण्टा 10 मिनट
भोजन अन्तराल	1.00सुबह – 1.45सुबह	45 मिनट
सत्र 2: अतिसंवेदनशीलता बताने के लिए बातचीज		
• पी०ई० द्वारा बातचीत द्वारा व्यक्तिगत स्तर की चर्चा O प्रस्तुतिकरण – बातचीत आधारित सम्पर्क O समूह कार्य – अभ्यास उपकरण (शारीरिक मानचित्रण, यह ऐसा क्यों है?)	1.45सुबह – 2.45सुबह	1 घण्टा
• पी०ई० 1 से 1 स्तर की बातचीत	2.45सुबह – 4.15सुबह	1 घण्टा

30 मिनट

- O विचार विमर्श - बातचीत के विषय
- O समूह कार्य - बोलने वाले तथ्यों का अभ्यास (सचित्र पुतिका द्वारा)
- O बोलने वाले तथ्यों का प्रस्तुतिकरण

- दिन 3 का आंकलन 4.15सुबह - 4.30सुबह 15 मिनट

सत्र 1 : गर्भ निरोधक प्रोत्साहन
ए0 पुरूष तथा स्त्री गर्भ निरोधक
बी0 गर्भ निरोधक की माँग तथा आपूर्ति

सत्र 1 ए0 — पुरूष तथा स्त्री गर्भ निरोधक

उद्देश्य: प्रतिभागियों को गर्भ निरोधक का उपयोग तथा प्रदर्शन के लिए अभ्यास चरण पर पूरी जानकारी पाने में सहायता करना।

अपेक्षित परिणाम: प्रतिभागीयों को पुरूष तथा स्त्री के गर्भ निरोधक के प्रदर्शन के चरणों का पता चलेगा। प्रतिभागीयों को उस जानकारी की स्पष्टता होगी जो उनसे क्षेत्र स्तर पर अपेक्षित थी।

अवधि: 1 घण्टा

कार्य प्रणाली: चर्चा, प्रदर्शन, प्रस्तुति, व्याख्या

सामग्री/आवश्यक तैयारी: चित्रपट, चिन्हक, पुरूष तथा स्त्री गर्भ निरोधक, पुरूष जननाँग के नमूने, स्त्री जननाँग के नमूने (यदि उपलब्ध हों)

प्रक्रिया:

- गर्भ निरोधक पर बोलते हुए सत्र का आरम्भ करें। आप समूह तथा उनके रूझान के अनुसार पुरूष गर्भ निरोधक अथवा दोनो पुरूष तथा स्त्री गर्भ निरोधकों पर बोलना चुन सकते हैं।

पुरूष गर्भ निरोधक	स्त्री गर्भ निरोधक
रबड़-क्षीर के बने हुए।	रंगों के लिए प्रयुक्त होने वाले प्लासटिक से बने हुए।
तेल पर आधारित चिकने पदार्थों द्वारा उपयोगित नहीं।	दोनों ही पानी तथा तेल पर आधारित चिकने पदार्थों द्वारा उपयोगित नहीं।

सीधे लिंग पर लुढ़काना चाहिए।	उपयोग उत्थापन पर आधारित नहीं।
लिंग तथा महिला जननाँग का आंतरिक बचाव।	लिंग (आधार सहित), आंतरिक तथा कुछ बाहरी महिला जननाँग का बचाव
स्खलन के तुरन्त बांद हटाना चाहिए।	स्खलन के तुरन्त बांद हटाने की आवश्यकता नहीं।
रबड़-क्षीर गर्म तथा उमस में सड़ सकता है	गर्म तथा उमस से पोलीयुरीथेन पर कोई फर्क नहीं

पुरूष गर्भ निरोधक सम्बन्धी ध्यान रखने योग्य बातें:

1) गर्भ निरोधक डालते समय यदि यह लगे कि इसकी दिशा उल्टी है, तो इसकी दिशा बदल कर इसे दुबारा उपयोग नहीं करना चाहिये।
2) मौखिक यौन में संक्रमण के मौके कम होते हैं। परन्तु गर्भ निरोधक का इस्तेमाल तब भी महत्वपूर्ण है।
3) गर्भ निरोधक का इस्तेमाल एक कला है तथा किसी को भी इसके इस्तेमाल से ही आनन्द विकसित करना चाहिए।
4) गर्भ निरोधक को ठंडे तथा सूखे स्थान पर धूप तथा पानी से दूर रखना चाहिए।
5) गर्भ निरोधक के साथ चिकने पदार्थों को उपयोग करने की आवश्यक नहीं होती क्योंकि यह पहले से ही चिकनाहटयुक्त होते हैं, परन्तु यदि आवश्यकता हो तो आप पानी आधारित चिकने पदार्थ उपयोग सकते हैं (ना कि तेल)।
6) गर्भ निरोधक विभिन्न प्रकार के होते हैं जैसे कि सुगन्धित (जैसे कि चॉकलेट/स्टराबरी इत्यादि) तथा बनावट (जैसे कि बिन्दीदार/धारीदार इत्यादि)।
7) सरकार तथा विभिन्न कम्पनीयाँ गर्भ निरोधक बनाती हैं। सरकारी गर्भ निरोधक वितरण के लिए मुफ्त उपलब्ध होते हैं। वह भी वही गुणवत्ता वाले होते हैं (गुणवत्ता समान ख्याति वाली प्रयोगशालाओं से जाँची गई होती है)।
8) कुछ गर्भ निरोधकों का सामाजिक तौर पर बाजारीकरण किया जाता है। यह बाजारी मूल्यों से सस्ते होते हैं।
9) अब बाजार में स्त्री गर्भ निरोधक भी उपलब्ध हैं परन्तु वे बहुत मँहगे हैं। कुछ परियोजनायें इन्हें सामाजिक बाजारीकरण द्वारा उपलब्ध कराती हैं।

महिला गर्भ निरोधकों की विशेषतायें।

- अतिरिक्त पसन्द, एस०टी०आई०/एच०आई०वी०/एडस् तथा अनचाहे गर्भ से अतिरिक्त सुरक्षा।
- महिला तथा पुरूष को माननीय।
- महिलाओं के लिए सुरक्षा तथा नियंत्रण अनुभाव

- पसन्द तथा सुरक्षा में बढ़त।
- लाभ:
  - उपयोगित जब पुरूष गर्भ निरोधक को इस्तेमाल मुश्किल हो।
  - एस०टी०आई० /एच०आई०वी० /एडस् तथा अनचाहे गर्भ के प्रति प्रभावकारी
  - अविरूद्ध यौन
  - लम्बे समय तक चलना
  - यौन के समय आनन्द को बढ़ाना
  - यदि आवश्यकता हो तो साथी को बताये बिना भी उपयोग
  - माहवारी के समय उपयोग
  - महिलाओं को उनके स्वास्थ्य अपने हाथों में लेने के लिए सामर्थता
  - जिन्हें रबड़ से एलर्जी हो वे इसका उपयोग कर सकते हैं।

- गर्भ निरोधकों पर यह परिपेक्ष्य देने के बाद प्रतिभागियों से गर्भ निरोधकों तथा इनके उपयोग सम्बन्धी बड़ी-बड़ी कल्पित तथा अंधविश्वासों को सूची बनायें।
- इसे सूचीबद्ध करके आपके द्वारा सुनी गये अंधविश्वासों को इनमें शामिल करें। निम्नलिखित संदर्भ सूची का उपयोग करें।

गर्भ निरोधकों पर सामान्य कल्पित बातें तथा अंधविश्वास

- यौन के समय गर्भ निरोधक का उपयोग चिढ़ पैदा करता है।
- संभोग के समय गर्भ निरोधक फट सकता है।
- गर्भ निरोधक यौन को आनन्द को कम करता है।
- गर्भ निरोधक चिपचिपा तथा चिकना होता है।
- गर्भ निरोधक को उपयोग करने से पहले उत्थापन चला जाता है।
- दोहरा गर्भ निरोधक अधिक सुरक्षा प्रदान करता है।
- गर्भ निरोधक का उपयोग उसके साथी के प्रति उसके प्यार के भावनात्मक अनुभव में कमी करता है।
- गर्भ निरोधक दो साथीयों में "अविश्वास" का अवरोध है।

- इन कल्पित बातों को यह अभिव्यक्त करते हुए स्पष्ट करें।
  - O गर्भ निरोधक कोमल तथा चिकना होता है तथा गर्भ निरोधक का सही उपयोग चिढ़चिढ़ापन नहीं करता।
  - O एक समय दो गर्भ निरोधक कभी भी नहीं डालने चाहिये क्योंकि दोनों के फटने की संभावना बड़ जाती है।

- O गर्भ निरोधक किसी प्रकार की भावना के लिए अवरोध नहीं है।
- O गर्भ निरोधक डालने की प्रक्रिया भी एक आनन्दित एहसास है।
- O यदि ग्राहक गर्भ निरोधक इस्तेमाल करता है वह एस०टी०आई० अथवा एच०आई०वीं०/एडस् से संक्रमित होने सम्बन्धी बिना किसी तनाव के अथवा शंका के अधिक आन्नद महसूस करता है।

- इन कल्पित बातों को और कम करने के लिए गर्भ निरोधक वितरण करें तथा प्रतिभागियों को इनका उपयोग करने दें। उन्हें इसे फुलाने को कहें, हाथ पर रख कर इसमें कुछ पानी भरने के लिए कहें। यह सब करते समय, गर्भ निरोधक की लम्बाई तथा चौड़ाई के बारे में बतायें, यह कितना फैलाया जा सकता है, इसमें कितना पानी भरा जा सकता है इत्यादि।
- अब पुरूष गर्भ निरोधक के प्रदर्शन के लिए 2 पुरूष प्रतिभागियों को बुलायें। बाकी के प्रतिभागीयों के लिए प्रदर्शन को ध्यान से देखना जरूरी है।
- प्रदर्शन के बाद प्रतिभागियों से पूछें कि क्या ये ठीक से हुआ है। यदि हाँ तो स्वंयसेवीयों के प्रयत्नों की सराहना करें, यदि नहीं, तो दूसरे प्रतिभागियों से सुधार के लिए सुझाव देने को कहें।
- प्रतिभागियों को फिल्म "कमला दीदी का एक नया पी०ई० बनना" में गर्भ निरोधक के प्रदर्शन की याद दिलायें । उसमें छूट गये चरणों पर चर्चा करें।
- पुरूष गर्भ निरोधक प्रदर्शन के चरणों को विस्तार से विवेचना करें।

पुरूष गर्भ निरोधक प्रदर्शनः

चरण 1:– अन्तिम तिथि जांचइये (वे जो पढ़ तथा लिख सकते हैं आवरण पर अन्तिम तिथि देख सकते हैं)। वे जो पढ़ तथा लिख सकते हैं, देखें कि गर्भ निरोधक अन्दर की तरफ आसानी से जाता है, जब वेएक किनारे को पकड़ कर इसे बाहर खींचते हैं। यदि ऐसा नहीं हैं, तो ऐसा गर्भ निरोधक उपयोग नहीं करना चाहिए।

चरण 2:– आवरण को एक तरफ से ध्यान से काटिये, ताकि गर्भ निरोधक खराब न हो तथा गर्भ निरोधक को सावधानी से आवरण से बाहर खींचिये।

चरण 3 :– गर्भ निरोधक की सही दिशा जांचइये तथा गर्भ निरोधक को अंगूठे तथा तर्जनी से पकड़िये, ताकि हवा गर्भ निरोधक के निपल से निकल जाये। सुनिश्चित कीजिए कि गर्भ निरोधक की घूमती किनारी चोटी से बाहर की तरफ को घूमें।

चरण 4:– गर्भ निरोधक की चोटी पकड़े रखिये, गर्भ निरोधक को सीधे लिंग के ऊपरी हिस्से पर रखें, तथा गर्भ निरोधक को सावधानीपूर्वक लिंग के आधार की तरफ खोलते जायें। गर्भ निरोधक को साथी के मुँह, गुदे अथवा योनि के सम्पर्क में आने से पहले पहन लेना चाहिए।

चरण 5:– संभोग।

चरण 6:– स्खलन के बाद लिंग को योनि से बाहर खींचिए जबकि लिंग अभी भी सीधा है। लिंग को अपने साथी के शरीर से हटाते समय यह ध्यान रखें कि कंडोम फिसल न जाये। गर्भ निरोधक के कोर को लिंग के आधार की तरफ से पकडीये।

चरण 7:– गर्भ निरोधक के अन्दर के वीर्य को अपने साथी के कहीं भी योनि के पास, मुँह अथवा गुदे के ऊपर गिरने से बचाते हुए लिंग से निकालिये।

चरण 8:– वीर्य को फर्श पर गिरने तथा गडबड़ को कारण बनने से बचाने के लिए गर्भ निरोधक के खुल किनारे को गांठ लगाईये। बन्धे हुए गर्भ निरोधक को कागज में लपेट कर कूढ़े में फैंकिये।

(पाथफाईंडर मुक्ता परियोजना द्वारा रचित इश्तहार से रूपान्तरित)

- अब प्रतिभागियों को जोड़ों में बाँटीये तथा पहले चर्चित चरणों को दिमाग में रखते हुए हर जोड़े को प्रर्दशन के अभ्यास के लिए कहें।
- इस बात पर जोर रखते हुए जैसे कि प्रतिभागी क्षेत्र स्तर पर समुदायिक सदस्यों को शिक्षण दे रहे हैं, उन्हें इसे बिना गल्ती किये सीखना जरूरी है।
- जैसे कि प्रतिभागी अब गर्भ निरोधक के प्रदर्शन से स्वच्छंद हैं, उन्हें दूसरी तकनीकी चीजों की कोशिश के लिए कहें जैसे कि अन्धेरे में लिंग प्रतिरूप एक आँख बन्द करके गर्भ निरोधक चढ़ाना (जैसे कि अधिकांशतय जहाँ पर ग्राहकों को मनोंरजन किया जाता है, वहां अन्धेरा होता है तथा यह महत्त्वपूर्ण है कि गर्भ निरोधक तब भी ठीक डले)
- पुरूष गर्भ निरोधक के प्रदर्शन के बाद, यदि सुकारक को उचित लगे तथा यदि समूह उत्सुक हो, स्त्री गर्भ निरोधक के उपयोग का प्रदर्शन कीजिए।
- नोट: स्त्री गर्भ निरोधक के प्रदर्शन तथा अभ्यास के लिए, हर किसी को अलग गर्भ निरोधक नहीं मिल सकता, परन्तु सीखने के लिए, स्त्री गर्भ निरोधक दुबारा उपयोग किया जा सकता है।

स्त्री गर्भ निरोधक प्रदर्शन:

चरण 1: अन्तिम तिथि जाँचये। तीर के निशान से नीचे को फाडीये।

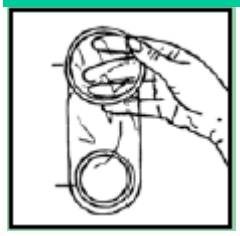

चरण 2: पुलिन्दे से गर्भ निरोधक को निकालिये।

चरण 3: अन्दररूनी कोर को अंगूठे तथा तर्जनी के मध्य पकडें। अन्दरूनी कोर से 8 का आकार बनायें अथवा अन्दरूनी को के किनारों को इक्कठा निचोडें तथा इसे मजबूती से पकड़ें।

चरण 4: स्त्री गर्भ निरोधक लगाने के लिए आरामदायक स्थिति में आईये। यह तीन स्थितियों में लगाया जा सकता है: बैठ कर, पालथी मार कर, लेट कर।

चरण 5: योनि के मुख को ढूँढीये तथा बाहरी होंठों को अलग कीजिए। अब जितना हो सके अन्दरूनी कोर योनि के अन्दर धकेलीये।

चरण 6: सूचक अथवा मध्य ऊंगली को स्त्री गर्भ निरोधक के अन्दर डाले करे इसे ठीक कीजिए। यह अभ्यास से आसान हो जायेगा।

चरण 7: आवरण का 1 इंच बाहरी कोर सहित आपके शरीर से बाह रहेगा।

चरण 8: स्त्री गर्भ निरोधक के बाहरी कोर को एक अथवा दो हाथों से पकड़ कर तथा आप यदि आप सुविधापूर्ण है तो लिंग को आवरण के अन्दर से योनि में संदर्शित कीजिए (अन्यथा यह हो सकता है कि लिंग योनि में जाते समय बाहरी कोर को योनि के अन्दर धकेल दे अथवा लिंग आवरण तथा योनि की भित्ति से होते हुए प्रविष्ट करे।

चरण 9: स्त्री गर्भ निरोधक को बाहर निकालने के लिए, बाहरी कोर को जकड़ कर पकड़िये, द्रव को बन्द करने के लिए इसे मोड़ कर लपेटिये तथा हल्के से हटाईये।

चरण 10: गर्भ निरोधक को किसी कागज अथवा खाली पुलिन्दे में रख कर कूढ़े में फैंकिये। इसे शौचालय में मत डालिये।

(www.condomdepot.com द्वारा रूपान्तिरित)

सत्र का समापन इससे कीजिए: –

- प्रतिभागियों को यह याद दिलाते हुए कियह ज्ञान उनको क्षेत्र स्तर पर समुदायिक सदस्यों से बांटना है।
- प्रतिभागियों को यह जानकारी देते हुए कि गर्भ निरोधक तथा गर्भ निरोधक के उपयोग पर जो जानकारी तथा संदेश उन्हें क्षेत्र स्तर पर सूचित करने हैं, अगले सत्र के समपर्क में विस्तार से चर्चित किये जायेंगे।

सत्र 1 ब० गर्भ निरोधक की माँग तथा आपूर्ति

उद्देश्य: प्रतिभागियों को गर्भ निरोधक की उपल्बधता का मानचित्रण तथा इसकी योजना पर सहायता करना।
गर्भ निरोधक की आपूर्ति की गणना पर हाथ निपुण करने के लिए सहायता (वितरण करने के लिए जरूरी गर्भ निरोधकों की संख्या)।
प्रतिभागियों को गर्भ निरोधक के विश्लेषण तथा अन्तर के कम करने में सहायता (माँग तथा आपूर्ति में अन्तर)

अपेक्षित परिणाम: प्रतिभागी घटनास्थल पर गर्भ निरोधक गोदाम के मानचित्रण के लिए गर्भ निरोधक की सुलभता तथा उपलब्धता के मानचित्रण के उपकरण का उपयोग करना सीखेंगे।
प्रतिभागी गर्भ निरोधक की आपूर्ति की आवश्यकताओं की गणना के लिए साधारण सिद्धान्त तथा उपकरण का उपयोग करेंगे तथा गर्भ निरोधक अन्तर विश्लेषण करेंगे।

अवधि: 1 घण्टा 30 मिनट

कार्य प्रणाली: चर्चा, अभ्यास

सामग्री/आवश्यक तैयारी: चित्रपट, चिन्हक
इस सत्र के लिए जैसे कि गर्भ निरोधक की आपूर्ति का अनुमान तथा गर्भ निरोधक अन्तर विश्लेषण पी०ई० द्वारा आउटरीच कर्मी (ओ०आर०डब्लयू०) की सहायता से टी०आई० स्तर पर किया गया है, सुकारक को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि ओ०आर०डब्लयू० उपस्थित है। ओ०आर०डब्लयू० को इस सत्र में एच०आर०जी० के गर्भ निरोधक आपूर्ति तथा अनुमान के क्षेत्रीये आंकड़ों को देने के लिए कहा जाना चाहिए।

प्रक्रिया:

- सुकारक पी०ई० के प्रमुख कार्यों में से गर्भ निरोधक वितरण पर महत्व डालते हुए सत्र का आरम्भ करता है।
- आरम्भ में, सुकारक गर्भ निरोधक सुलभता तथा उपलब्धता मानचित्रण उपकरण का परिचय कराता है।

गर्भ निरोधक सुलभता तथा उपलब्धता मानचित्रण

उद्देश्य:

गर्भ निरोधक उपलब्धता तथ्यों का मानचित्रण करना तथा यौन कर्मीयों को उनकी सुलभता को विश्लेषण करना।

दिशा निर्देश:

- कस्बे का नक्शा बनाइये अथवा कस्बे का पहले से बना हुआ नक्शा उपयोग कीजिए।
- अलग-अलग रंगों की बिंदियों के साथ वे स्थान चिन्हित कीजिए जहाँ यौन कर्मी अपने ग्राहकों को उकसाते हैं तथा जहाँ यौन गतिविधियाँ होती हैं: एक रंग के साथ वे स्थान जहाँ यौन कर्मी अपने ग्राहकों को उकसाते हैं तथा दूसरे रंग के साथ जहाँ वास्तव में यौन गतिविधियाँ होती हैं।
- यह देखने के लिए चर्चा करें तथा समझें, जब हर घटनास्थल सक्रिय हो (उकसाना तथा यौन कार्य) तथा दिन में इसका समय। रंगों के साथ दर्शायें कि घटनास्थल केवल दिन में सक्रिय है अथवा रात में अथवा दोनों समय में।
- अब गर्भ निरोधक गोदामों को नक्शे में चिन्हों द्वारा दर्शायें कि क्या गोदाम दिन के समय कार्यरत हैं अथवा रात को अथवा 24 घण्टें?

– निम्नलिखित की चर्चा करें:

- क्या वहाँ सभी स्थलों पर भी गोदाम जहाँ उकसाना अथवा यौन कार्य चलता है? यदि नही तो क्या कारण हैं? क्या घटनास्थल, घर पर आधारित स्थल हैं जिनमें गोदाम नहीं होते तथा वे सीधा वितरण चाहते हैं।
- क्या गर्भ निरोधक गोदाम सभी घटनास्थलों पर हैं जो दिन के समय अथवा रात अथवा 24 घण्टे सक्रिय होते हैं।
- क्या गर्भ निरोधक गोदाम प्रमुख जनसंख्या के लिए सुलभ हैं।

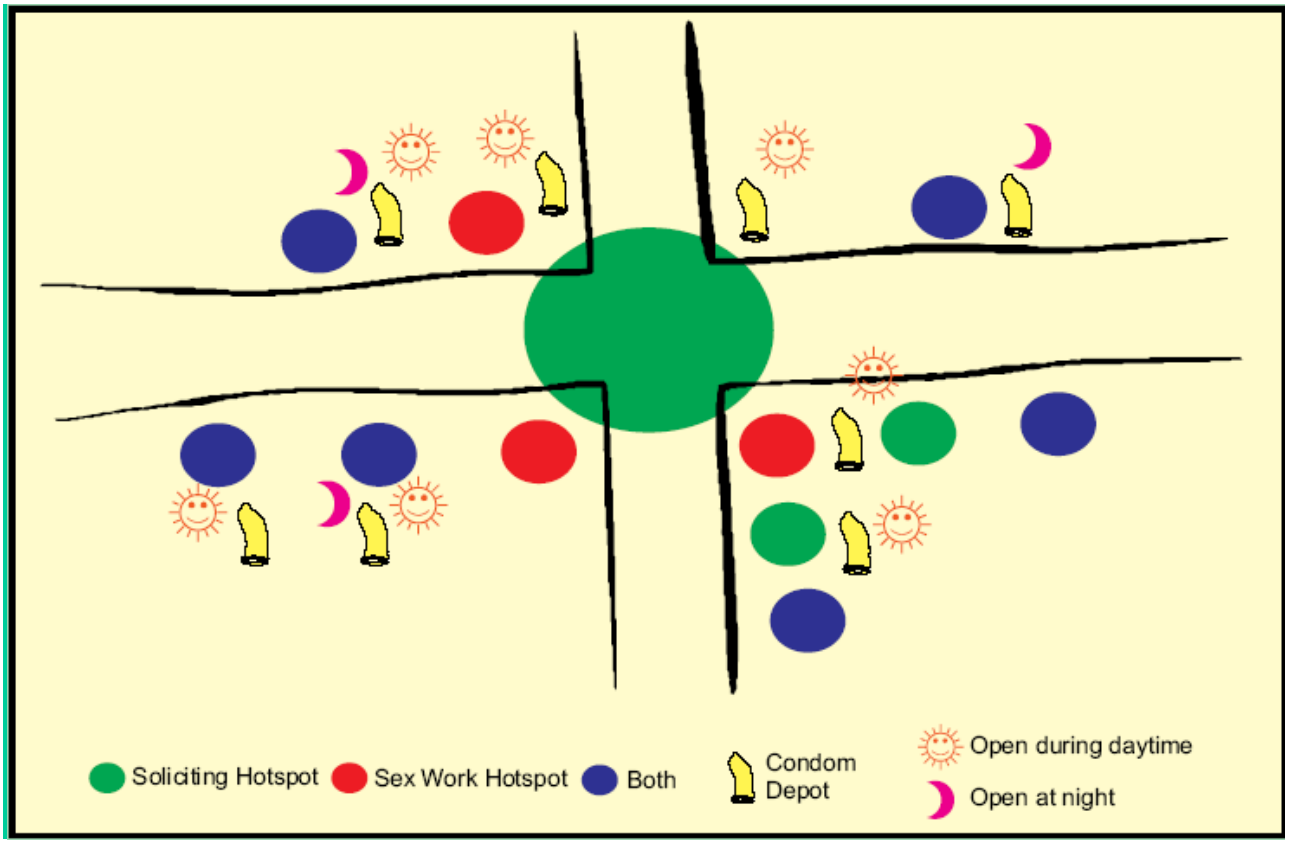

- उपकरण का अभ्यास करने के बाद सुकारक इस बात पर जोर देता है कि पी०ई० के लिए हर समुदायिक सदस्य को वितरित किये जाने वाले गर्भ निरोधकों की गिनती करने की कार्यप्रणाली को समझना महत्त्वपूर्ण है।
- सुकारक इसके बाद प्रतिभागियों से 'गर्भ निरोधक माँग अनुमान' को सांझा करता है।

गर्भ निरोधक माँग अनुमानः

- एन०ए०सी०ओ० राष्ट्रीय स्तर पर एफ०एस०डब्लयू०, एम०एस०एम० तथा आई०डी०यू० (एच०आर०जी०) की जनसंख्या के लिए सी०एम०आई०एस० जानकारी के आधार पर, टी०आई० द्वारा पिछले दो सालों में गर्भ निरोधक माँग का अनुमान लगाता है।
- परन्तु टी०आई०/एन०जी०ओ० स्तर पर ध्यान देने योग्य महत्त्वपूर्ण चीज़ एच०आर०जी० का प्रति दिन के समागम/साथीयों के आधार पर वर्गीकरण है।
  - उच्च मात्रा (प्रति दिन 4 या इससे अधिक ग्राहक)
  - मध्यम मात्रा (प्रति दिन 2-3 ग्राहक)
  - निम्न मात्रा (प्रति दिन 2 या इससे कम ग्राहक)
- जोखिम श्रेणी पर ध्यान देना आवश्यक है जैसे कि यौन कर्मी की आयु, पसन्द की जाने वाली यौन गतिविधियों की किस्म, यौन कार्य का समायोजन।
- अलग-अलग उप-श्रेणीयों की गर्भ निरोधक माँग साधारण सिद्धान्त पर आधारित है: डी०=(एस०एक्स०आई०एक्स०एन०) - सी०

डी० गर्भ निरोधक आवश्यकता

स० उस क्षेत्र में कार्यरत एफ०एस०डब्लयू० की संख्या (उस उप-श्रेणी के जैसे कि उच्च, मध्यम, निम्न)

आई० प्रतिदिन की यौन क्रियाओं की संख्या

एन० महीने में दिनों की संख्या जब यौन कर्मी सक्रिय होते हैं

सी० ग्राहकों सहित दूसरे स्त्रोतों से गर्भ निरोधकों की संख्या

- उपरोक्त सिद्धान्त व्यक्तिगत यौन कर्मीयों द्वारा 'एस०' को '1' डालकर भी उपयोग किया जा सकता है।

- इस आधार पर सुकारक उस पी०ई० द्वारा कार्यरत समुदायिक सदस्यों के लिए गर्भ निरोधकों की आवश्यकता का आंकलन करने के लिए कहता है। ओ०आर०डब्लयू० को उनके पी०ई० की सहायता तथा जब यह अभ्यास किया जा रहा हो इसमें निवेश प्रदान करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।
- यह अभ्यास समुचे समूह के लिए कुछ पी०ई० को सब के सामने आकर इस सिद्धान्त पर कार्य करने के लिए कह कर किया जा सकता है।
- सुकारक इसके बाद 'गर्भ निरोधक अन्तर विश्लेषण' की ओर चल पड़ता है।

गर्भ निरोधक अन्तर विश्लेषण

- टी०आई०/एन०जी०ओ० स्तर पर, 'गर्भ निरोधक अन्तर विश्लेषण' सूक्ष्म-योजना के लिए प्रतिभाग के रूप में महत्त्वपूर्ण है ताकि 'गर्भ निरोधक अन्तर को कम किया जा सके (माँग तथा आपूर्ति में अन्तर)। ध्यान देने योग्य प्रमुख बातें:-
  - हरेक एच०आर०जी० द्वारा गर्भ निरोधकों की वास्तविक आवश्यकता बांटे गये गर्भ निरोधकों तथा परियोजना के यौन कार्य के समायोजन से काफी हद तक अलग हो सकती है।
  - आउटरीच सम्पर्कों के प्रतिभाग के रूप टी०आई० के कर्मीयों द्वारा वितरित गर्भ निरोधकों का हिसाब-किताब आवश्यक है।
  - एच०आर०जी० तथा उनके ग्राहकों द्वारा विभिन्न संसाधनों द्वारा गर्भ निरोधक उद्ग्रहण - जो कि गर्भ निरोधक परियोजना को मजबूत करने के लिए मौका अन्तर विश्लेषण हो।
  - टी०आई० द्वारा अपनायी गई गर्भ निरोधक कार्यनीति की कीमत, मार्का, गुणवत्ता, पर्याप्तता, वितरण के संसाधना, बांट के लिए उपयोगित माध्यम, गर्भ निरोधक परियोजना के लिए टी०आई० द्वारा उपयोगित आई०ई०सी०/संदेश, अलग-अलग परक्राम्य/अपरक्राम्य हालातों में कर्मीयों के प्रदर्शन कोशल, एच०आर०जी० के उनके ग्राहकों के साथ मोलभाव के कोशल आदि के अनुसार मान्यता।

- गर्भ निरोधक अन्तर विश्लेषण के लिए अपनायी गई प्रक्रिया यह है कि पी०ई० साधारण प्रारूप द्वारा जैसे कि एक नीचे दिया गया है (ओ०आर०डब्लयू० की सहायता से), क्षेत्र स्तर पर माँग की जानकारी एकत्रित करेगा।

पी०ई० का आंकड़े एकत्रित करने का उपकरण (छः महीने में एक बाद तथा आधार-रेखा की तरह उपयोग करने के लिए)							
आई०डी० नाम	उप-किस्म**	गैर समायोजन/सप्ताह (स्मरण)	पिछले सप्ताह उपयोग किये गये गर्भ निरोधकों की संख्या	टी०आई० परियोजना द्वारा प्राप्त मुफ्त गर्भ निरोधकों की संख्या	मुफ्त प्राप्त किये गये गर्भ निरोधकों की संख्या (टी०आई० से अलग	समाजिक बाजारीकरण द्वारा खरीदे गये गर्भ निरोधकों की संख्या (ग्राहक अथवा एच०आर०जी० द्वारा	गर्भ निरोधकों की आवश्यकता/परियोजना द्वारा पूरा किया जाने वाला अन्तर [सी-(ई+एच+जी)]
ए०	बी०	सी०	डी०	ई०	एफ०	जी०	एच०

* किस्म-एफ०एस०डब्लयू०, एम०एस०एम० अथवा आई०डी०यू०

**उप-किस्म - गली, वेशाल्य, गुप्त/घर एफ०एस०डब्लयू० तथा कोठी, पंथी, एम०एस०एम० के लिए टी०जी०।

- आंकड़े निम्नलिखित प्रारूप का उपयोग करते हुए टी०आई०/एन०जी०ओ० स्तर पर संग्रहित किये गये है।

गर्भ निरोधक तथा आपूर्ति आंकलन

(पी०ई० की सहायता द्वारा ओ०आर०डब्लयू० द्वारा उपयोग करने हेतू)

1	मांग				
	एफ०एस०डब्लयू	**गली**	**वेशालय**	**गुप्त/घर**	**कुल**
	एफ०एस०डब्लयू की संख्या				
	हर सप्ताह ग्राहकों की औसत संख्या (समायोजन) - कालॅम डी				
	एक महीने में ग्राहकों की औसत संख्या (सप्ताहिक समायोजन x 4) पिछले सप्ताह के खण्डन पर आधारित				
	गर्भ निरोधक आवश्यकता/महीना				

	एम०एस०एम०	कोठी	पंथी	टी०जी०	कुल
	एम०एस०एम० की संख्या				
	हर सप्ताह ग्राहकों की औसत संख्या (समायोजन) - कालॅम डी				
	एक महीने में ग्राहकों की औसत संख्या (सप्ताहिक समायोजन x 4) पिछले सप्ताह के खण्डन पर आधारित				
	गर्भ निरोधक आवश्यकता/महीना				
	आई०डी०यू०				
	हर सप्ताह ग्राहकों की औसत संख्या (समायोजन) - कालॅम डी				
	एक महीने में ग्राहकों की औसत संख्या (सप्ताहिक समायोजन x 4) पिछले सप्ताह के खण्डन पर आधारित				
	गर्भ निरोधक आवश्यकता/महीना				
2	आपूर्ति				
	एफ०एस०डब्लयू	**गली**	**वेशालय**	**गुप्त/घर**	**कुल**
	मुफ्त वितरण - कालॅम एफ०				
	सामाजिक बाजारीकरण द्वारा - कालॅम जी०				
	दूसरे साधनों द्वारा - कालॅम एच०				
	एम०एस०एम०	**कोठी**	**पंथी**	**टी०जी०**	**कुल**
	मुफ्त वितरण - कालॅम एफ०				
	सामाजिक बाजारीकरण द्वारा - कालॅम जी०				
	दूसरे साधनों द्वारा - कालॅम एच०				
	आई०डी०यू०				
	मुफ्त वितरण - कालॅम एफ०				
	सामाजिक बाजारीकरण द्वारा - कालॅम जी०				
	दूसरे साधनों द्वारा - कालॅम एच०				

- एच०आर०जी० के अन्तर्गत वगीकृत (आई०डी०यू० के इलावा के लिए) औसत गर्भ निरोधक पूर्ववर्ती अन्तर सहित हर समूह के लिए गणना करना।
- ये विश्लेषण इसके बाद गर्भ निरोधक मांग/आपूर्ति के फिर से किये आंकलन में शामिल किया जाये।

- सुकारक फिर से प्रतिभागियों (दोनों पी०ई० तथा ओ०आर०डब्लयू०) को उपकरण के अभ्यास के लिए प्रोत्साहित करेगा।
- अभ्यास के दौरान पी०ई० तथा ओ०आर०डब्लयू० क्षेत्र स्तर के आंकड़े ही उपयोग करेंगे।

सत्र 2 : अतिसंवेदनशीलता बताने के लिए बातचीत
ए० पी०ई० द्वारा बातचीत पर आधारित परस्पर सम्पर्क
बी० पी०ई० द्वारा एक से एक द्वारा बातचीत

सत्र 2 ए० — पी०ई० द्वारा बातचीत पर आधारित परस्पर सम्पर्क

उद्देश्य: प्रतिभागियों को बातचीत पर आधारित सम्पर्क को समझने तथा इसके अभ्यास में हाथ साफ करने में सहायता करना।

अपेक्षित परिणाम: प्रतिभागी बातचीत पर आधारित सम्पर्क के उपकरणों में प्रशिक्षित होंगे।

अवधि: 1 घण्टा

कार्य प्रणाली: चर्चा, समूह कार्य

सामग्री/आवश्यक तैयारी: चित्रपट, चिन्हक पैन

प्रक्रिया:

- सभी प्रतिभागियों को बातचीत की महत्त्ता स्मरण करायें तथा खासकर 'बातचीत का अधिकार'
- बातचीत पर आधारित परस्पर सम्पर्क (आई०पी०सी०) पर स्थानातरण करें।

बातचीत पर आधारित आई०पी०सी०

बातचीत पर आधारित आई०पी०सी० संदेशों से हटकर एक सामान्य आई०पी०सी० है तथा आमने सामने पारस्परिक क्रिया है, बातचीत तथा गैर आलोचनात्मक प्रतिबिम्भ अतिसंवेदनशील तथा उच्च जोखिम व्यवहार वाली जनता के लिए:-

- एस०टी०आई०/एच०आई०वी० क्षति कटौति के अवरोधों की पहचान करती है।
- इन अवरोधों का विश्लेषण करती है।
- उनको बताने के तरीके योजनाबद्ध करती है।

कोई आई०पी०सी० का उपयोग कब कर सकता है?

आई०पी०सी० सभी टी०आई० घटकों के लिए उपयोग की जा सकती है जैसे कि आउटरीच के बारे में बात, चिकित्सक सेवायें, दौरा केन्द्र, आई०सी०टी०सी० सदर्भ, सलाह आरम्भ, सी०बी०ओ० रचना इत्यादि।

आई०पी०सी० के घटक

बातचीत पर आधारित आई०पी०सी० में कुछ आवश्यक घटक होते हैं:

- विषय वस्तु - यह एस०टी०आई० अथवा एच०आई०वी०/एडस् पर हो सकता है।
- तरीका - ये प्रक्रियायें बातचीत को प्रोत्साहित करने वाली हैं। यह पद्धतियाँ एन०ए०सी०ओ० परिचालन दिशानिर्देशों में विस्तृत हैं तथा इस सत्र में प्रतिभागी ऐसी दो पद्धतियों के बारे में सीखेंगे।
- सुविधा कोशल - पी०ई० को यह सुनिश्चत कर लेना जरूरी है कि वे केवल संदेश देते के बजाये प्रमुख मुद्दों पर बातचीत तथा चर्चा को प्रोत्साहित कर रहे हैं।
- गुण तथा रूख - एच०आर०जी० के साथ कार्य करते समय पी०ई० का उचित रूख आवश्यक है तथा उसे गैर आलोचनात्मक तथा निष्पक्ष रहना चाहिए।

- संक्षिप्त भूमिका के बाद प्रतिभागियों को बतायें कि समूह अभ्यास के लिए वे 2 आई०पी०सी० उपकरणों को देखेंगे जो कि आउटरीच के लिए उपयोग किये जा सकते हैं - 'शारीरिक मानचित्रण' तथा 'यह ऐसे क्यों है?'
- प्रतिभागियों को पहले उपकरण 'शारीरिक मानचित्रण' के उद्देश्य तथा प्रक्रिया पर संक्षेपित करें।

आई०पी०सी० उपकरण 1:

उद्देश्य:

- एच०आर०जी० को शरीर से संबधित एस०टी०आई० तथा एच०आई०वी० अतिसंवेदनशील कारक ढूँढने में सहायता करें।
- एच०आर०जी० के साथ गैर-वेधनीय यौन पर चर्चा करें।

आवश्यक सामग्री:

चित्रपट, रंगदार चिन्हक

निर्देश:

- एक स्वंयसेवी धरती पर कागज के ऊपर लेटा है तथा दूसरा उसके शरीर का चित्रपट पर चित्रण करता है

- रेखाचित्र को नग्न शरीर माना गया है तथा समुदायिक सदस्यों को इसके विभिन्न अंगों का विवरण भरने के लिए कहा जाता है।

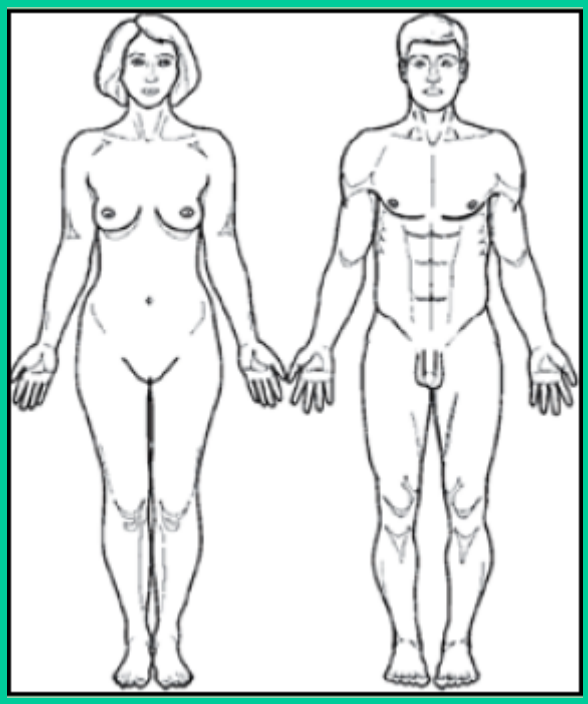

- तब समुदायिक को निम्नलिखित को चिन्हक पैन द्वारा चिन्हित करने के लिए कहा जाता है:
  - वह शरीर के वह कौनसे अंग हैं जिन्हें छूने पर अच्छा लगता है।
  - शरीर के कौन से अंग एच०आई०वी० के लिए अति संवेदनशील हैं (विषाणु शरीर में कैसे घुस सकता है? क्या चीज़ विषाणु को शरीर में घुसने के लिए आसानी प्रदान करती है? - यदि कोई भ्रम है तो दूर करें।
  - हरेक के जोखिम का दर्जा क्या है? - (उच्च, निम्न अथवा जोखिम रहित)?
- इसके अनुसार, समुदायिक सदस्यों को उपलब्ध सुरक्षित यौन के विकल्पों के बारे में चर्चा आवश्यक है, खासकर गैर-वेधनीय यौन।

- अब प्रतिभागियों को छोटे समूहों में बांटें तथा उन्हें 'शारीरिक मानचित्रण' का समय दें।
- अभ्यास पूरा होने के पश्चात् प्रतिभागियों को हर उपकारण के साथ निम्नलिखित की चर्चा करन के लिए कहें।
  - इस उपकरण को उपयोग करने के लाभ क्या हैं?
  - इस उपकरण को उपयोग करने में बाध्यता क्या है? - जैसे कि यह समय अधिक लेता है, गली आधारित समायोजन में उपयोग नहीं किया जा सकता।

- तब अगले उपकरण पर चलिये 'ये ऐसे क्यों हैं'? प्रतिभागियों को इस उपकरण के उद्देश्य तथा प्रक्रिया के बारे में संक्षेपित करें।

आई०पी०सी० उपकरण 2: ये ऐसा क्यों है?

उद्देश्य:

एच०आर०जी० को पैदा हुए जोखिम व्यवहारों का विश्लेषण तथा उन्हें कम करने के उपायों के लिए सहायता करें।

आवश्यक सामग्री:

चित्र पट्, रंगदार चिन्हक।

निर्देश:

- एच०आई०वी० के जोखिम व्यवहार की पहचान करें (जैसे असुरक्षित यौन, सूईयों को सांझा करना इत्यादि) तथा किसी एक जोखिमपूर्ण व्यवहार का चित्र बनायें (समूह चर्चा की प्राथमिकता के आधार पर) चित्रपट् के मध्य में एक गोलाकार के बीच।
- पूछें 'यह ऐसा क्यों है' तथा समुदायिक सदस्यों को मध्य गोलाकार के इर्द-गिर्द गुबारे बना कर जोखिम व्यवहार के कारण चित्रित करने तथा लिखने दें।
- जब तक समुदायिक सदस्य और कारणों के बारे में नहीं सोचते, इसे जारी रखें।
- इनमें से एक कारण/कारक चुनें तथा पूछें 'यह ऐसा क्यों है?' समुदायिक सदस्यों को उन मुद्दों की पहचान करने दें जो उन्हें इस जोखिम को लेने में अतिसंवेदनशील बना देते हैं।
- जब तक समुदायिक सदस्य और अतिसंवेदनशील तत्वों के बारे में नहीं सोचते, इसे जारी रखें।
- जोखिम व्यवहार के सभी कारणों/तत्वों के सभी कारणों/तत्वों के लिए इस प्रक्रिया को दोहरायें।
  - जोखिम व्यवहार के लिए सबसे महत्वपूर्ण तत्व (अतिसंवेदनशील तत्व) क्या हैं?
  - वे कौनसे रास्ते हैं जिनसे एच०आर०जी० जौखिम कटौति को कम करने के लिए प्रयत्न कर सकता है।
- गर्भ निरोधक का न इस्तेमाल एक जौखिम व्यवहार का उदाहरण नीचे दिया गया है। परन्तु आन्तरिक गोले में दूसरे मुद्दे जैसे कि 'सूई/सिरिंज की सांझ' अथवा विशिष्ट 'असुरक्षित गुदा यौन' इत्यादि हो सकते हैं।

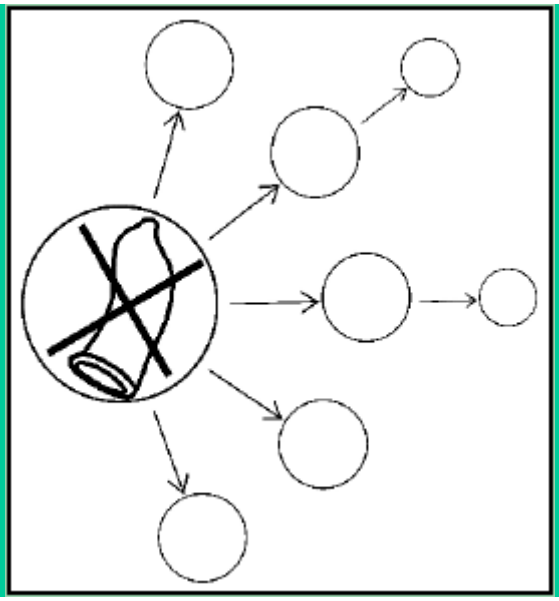

- अब प्रतिभागियों को छोटे समूहों में बांटे तथा उन्हे अभ्यास 'यह ऐसा क्यों है' के लिए समय दें।
- अभ्यास को पूरा करने पश्चात्, प्रतिभागियों को हर उपकरण के लिए निम्नलिखित पर विचार विमर्श के लिए कहें:
  - इस उपकरण को उपयोग करने के लाभ क्या हैं?
  - इस उपकरण को उपयोग करने में क्या अवरोध हैं? - जैसे कि बहुत अधिक समय लेना, गली आधारित समायोजन के लिए उपयोग नहीं किया जा सकता।

सत्र 2 ए० पी०ई० द्वारा एक से एक का सम्पर्क

उद्देश्य: प्रतिभागियों के साथ उन विषयों बातचीत जिन पर उन्हें समुदायिक सदस्यों को जानकारी देनी है।

अपेक्षित परिणाम: प्रतिभागी उन विष्यों के समुच्चय तथा हर विष्य की विवरण को समझ पायेंगे जिन पर उन्हें जानकारी प्रदान करनी है।

अवधि: 1 घण्टा 30 मिनट

कार्य प्रणाली: चर्चा, समूह कार्य, प्रस्तुतिकरण, स्पष्टीकरण

सामग्री/आवश्यक तैयारी: चित्रपट, चिन्हक पैन, बोलने के लिए चित्र साधन (3 सचित्र किताबें)

प्रक्रिया:

- जोखिम तथा अतिसंवेशीलता वाले सत्र का संदर्भ देते हुए, प्रतिभागियों को याद दिलायें कि अतिसवेंदनशीलता में कटौति का एक रास्ता जानकारी तथा ज्ञान प्रदान करना है। एफ०एस०डब्लयू० /एम०एस०एम० /आई०डी०यू० के मामले में, स्वास्थ्य के विभिन्न पहलूओं पर जानकारी एस०टी०आई० /एडस् के प्रति अतिसंवेदनशीलता को कम करती है। इसके लिए एक प्रक्रिया सहकर्मी शिक्षकों द्वारा समुदायिक सदस्यों को ज्ञान प्रदान करना है।
- उन विष्यों पर एक चर्चा तैयार कीजिए जिनपर सहकर्मी शिक्षकों को क्षेत्र में एफ०एस० डब्लयू० /एम०एस०एम० /आई०डी०यू० से बात करनी है तथा इसकी पट्टे पर सूचीबद्ध करें। वे पूर्णता हेतू सूची की समीक्षा करेंगे।
- तत्पश्चात् प्रतिभागियों का बोलने वाले तथ्यों हेतू चित्र साधन का परिचय करायें।
- प्रतिभागियों को 3-4 छोटे समूहों में बांटें तथा हर प्रतिभागी को चित्र साधन (प्रशिक्षण पुलिन्दे के साथ उपलब्ध)।
- सभी समूह एक साथ बोलने वाले तथ्यों को याद करेंगे तथा इसका समूह के अन्दर अभ्यास करेंगे।
- समूह कार्य के पश्चात् प्रतिभागियों को क्रम रहित आगे आकर अभिनय के लिए कहें कि वे कैसे समुदायिक सदस्य से किसी खास मुद्द पर बात करेंगे (प्रतिभागी को सचित्र साधन से अध्ययन का उपयोग करने के लिए कहें)।

1. एस०टी०आई०

ए० रोकथाम

i) अधिकत्तर एस०टी०आई० असुरक्षित यौन कार्य से होती हैं।

ii) एस०टी०आई० को रोका जा सकता है यदि हम हर यौन व्यवहार के समय अपने ग्राहकों तथा साथी के साथ गर्भ निरोधक का उपयोग करें।

बी० चिन्ह तथा लक्षण:

i) प्रमुख लक्षण है:-

1) योनि से असाधारण सफेद रिसाव - मवाद जैसा यह रिसाव बदबूदार हो सकता है।

2) पेट के निचले हिस्से अथवा श्रोणि क्षेत्र में दर्द

ii) जननांग क्षेत्र, गुदे अथवा मुँह में छाले

1) जंघाने में सूजन

2) मूत्राशय के समय जलन अथवा दर्द
3) जननांग में तथा इर्द-गिर्द छोटे-छोटे विकास
4) जननांग के अन्दर तथा इर्द-गिर्द खुजली
5) संभोग के समय दर्द

सी० उपचारः

i) अधिकत्तर एस०टी०आई० पूरी तरह साध्य हैं।
ii) डाक्टर के पास जाकर जाँच करवानी चाहिए।
iii) डाक्टर की सलाह से परीक्षण करवायें।
iv) जब तक संक्रमण पूरी तरह ठीक नहीं हो जाता उपचार जारी रखें।
v) यदि संम्भव हो, तो जब तक संक्रमण पूरी तरह ठीक नहीं हो जाता यौन व्यवहार टालें।
vi) यौन समागम के समय गर्भ निरोधक का उपयोग।

डी० साथी के उपचार का महत्त्वः

यदि किसी भी एक साथी को एस०टी०आई० हो, तो फिर से संक्रमण से बचने के लिए दोनो को डाक्टर की सलाह से दवाई लेनी चाहिए।

ई० नियमित स्वास्थय जाँचः

स्त्रियों में एस०टी०आई० कई बार गैर-लक्षणात्मक होती है इसलिए मासिक स्वास्थय जाँच आवश्यक है।

एफ० परियोजना चिकित्सालय में डाक्टर तथा नर्स के द्वारा दी जाने वाली सेवाओं के इलावा वे आपको कम कीमत पर विभिन्न संगठनों को जाँच/उपचार/सेवाओं को संदर्भित कर सकते हैं। जैसे कि कोई समुदायिक सदस्य एच०आई०वी० की जाँच करवाना चाहता है तो परियोजना चिकित्सालय का डाक्टर परीक्षण कैसे होगा, परीक्षण कहाँ होगा, इसका कितना खर्चा होगा इत्यादि के बारे में बता सकता है। इसी तरह टी०आई० परियोजना समुदायिक सदस्यों को सरकार द्वारा प्रदान की गई मुफ्त स्वास्थ्य सेवाओं को पाने में सहायता करता है, जैसे कि टी०बी० का उपचार, बच्चों के लिए प्रतिरक्षण इत्यादि।

2. एच०आई०वी०

ए० यह कैसे फैलता हैः

एच०आई०वी० निम्नलिखित रास्तों से फैलता हैः-

i) खून - संक्रमित खून गैर-सवंमित व्यक्ति को देने पर। यह सूईयों द्वारा भी फैलता है।

ii) असुरक्षित यौन द्वारा - जहाँ पर शारीरिक द्रवयों का आदान-प्रदान हो। सभी यौन कार्य जोखिमपूर्ण नहीं होते।

iii) सक्रंमित माता से बच्चे को - जन्म के समय यदि कोई जख्म हो जाये, नाभि रज्जु द्वारा, स्तन पान द्वारा (जहाँ खतरा कम है)। शरीर के लिए स्तन पान द्वारा संक्रमण से दूसरे सक्रमणों का जोखिम अधिक है।

बी० यह कैसे नहीं फैलता:

i) यदि सूईयों का एक बार के उपयोग के पश्चात् निपटान कर दिया जाये (हर व्यक्ति के लिए हर बार नईं), अथवा 20 मिनट उबालने के बाद उपयोग की जायें।

ii) यदि एच०आई०वी० साकारात्मक महिला के जनन से पहले तथा जनन के समय उचित एहतियात ली जायें।

iii) तथा दूसरे कई और तरीकों जैसे साकारात्मक व्यक्ति के साथ खाना खाना, उसके साथ तैरना, हाथ मिलाने, छींकनें, कपड़ें सांझे करने, बर्तन सांझे करने इत्यादि से।

सी० रोकथाम:

हम अपने आप को उपरोक्त तरीकों से बचा सकते हैं (जैसे कि निपटानयुक्त अथवा जीवाणुरहित सूईयों के उपयोग से, बच्चे के जन्म के समय उसके एच०आई०वी० साकारात्मक होने के प्रति एहतियात लेकर) परन्तु इसके साथ साथ 100 प्रतिशत ठीक तथा नियमित गर्भ निरोधक का उपयोग एच०आई०वी० संक्रमण की रोकथाम को उत्तम तरीका है।

ई० परीक्षण:

परीक्षण के दो तरीके हैं:-

i) एक किस्म में रोग प्रतिकारकों का परीक्षण किया जाता है - हमारा शरीर इसके अन्दर घुसने वाले विषाणु के विरूद्ध रोग प्रतिकारक बनाता है। रोग प्रतिकारक को बनने में 12 सप्ताह लगते हैं। इस तरह के परीक्षण ये पता लगाते हैं कि क्या रोग प्रतिकारक खून में हैं? यदि उसमें रोग प्रतिकारक हैं तो इसके मतलब है कि विषाणु वहाँ है जिसके लिए रोग प्रतिकारक बनाये गये हैं।

ii) दूसरी तरह के परीक्षण असल विषाणु का पता लगाते हैं।

एफ० जटिलतायें:

i) कई बार जब व्यक्ति एच०आई०वी० साकारात्मक होता है, खून की सफेद कोषिकायें जोकि हमारे शरीर की रक्षात्मक कोषिकायें हैं, की प्रतिरक्षा कम हो जाती है। कम प्रतिरक्षा के कारण, कई संक्रमण ऐसे हैं जिन्हें कि शरीर जल्दी पकड़ता है। ऐसे संक्रमण मौकापरस्त संक्रमण (ओ०आई०) कहलाते हैं।

ii) जब एच०आई०वी० संक्रमण से शारीरिक प्रतिरक्षा कम हो जाती है तथा संक्रमणों का समूह शरीर को ग्रस्त कर देता है तो यह हालत एडस् कहलाती है। यह आमतौर पर कहा जाता है कि संक्रमण होने से एडस् स्तर तक पहुँचने में 8 – 10 वर्ष लगते हैं परन्तु यह समय व्यक्तिगत आधार पर अलग होता है।

जी० ए०आर०टी०

i) ए०आर०टी० विरोधाभास रोगोपचार है।

ii) यह उपचार एच०आई०वी० साकारात्मक लोगों को संक्रमण फैलने की रोकथाम के लिए दिया जाता है।

iii) यह दवाईयाँ एच०आई०वी० से मुक्ति नहीं हैं लेकिन ये शरीर में विषाणु की प्रतिकृति को रोकती हैं।

iv) यह दवाईयाँ मरीज़ों को नियमित लेनी चाहियें तथा डाक्टर की सलाह से लेनी चाहियें।

v) एक बार जब दवाईयाँ शुरू हो जाये तो उस व्यक्ति को यह जीवनभर लेनी चाहिए

1) साधारणतय: यह दवाईयाँ बहुत मंहगी हैं, परन्तु सरकारी अस्पतालों में ये मुफ्त दी जाती हैं।

3. गर्भ निरोधक उपयोग तथा प्रदर्शन

कृप्या गर्भ निरोधक उपयोग सत्र में 'सुकारक के लिए टिप्पणीयाँ' का संदर्भ लें।

दिन 3 का आंकलन

तिथि: प्रतिभागी का नाम (विकल्प):

सत्र	विवरण	प्रतिपुष्टि			टिप्पणीयाँ
		☺अच्छी	😐ठीक	☹घटिया	
आज के सत्र को कुल मिलाकर प्रतिक्रिया					
1ए०	स्त्री तथा पुरूष गर्भ निरोधक				
1बी०	गर्भ निरोधक माँग तथा आपुर्ति (गर्भ निरोधक की सुलभता तथा उपलब्धता का मानचित्रण, गर्भ निरोधक अन्तर विश्लेषण)				
2ए०	पी०ई० द्वारा बातचीत पर आधारित परस्पर सम्पर्क				
2बी०	पी०ई० द्वारा एक से एक सम्पर्क				

कोई और समालोचन:

.....

.....

*कृप्या अवधि, विष्य सूची, कार्य प्रणाली तथा सचित्र साधन पर समालोचन करें।

दिन 4

दिन 4

सत्र योजना

दिन 3 का संक्षप्ति	10.00सुबह – 10.15सुबह	15 मिनट

सत्र 1: निगरानी तथा दस्तावेज़ीकरण (2 घण्टे 30 मिनट)

• उपकरण 1: अवसर अन्तर विश्लेषण	10.15सुबह – 11.00सुबह	45 मिनट
O उपकरण का प्रस्तुतिकरण		
O समूह कार्य – उपकरण का अभ्यास		
O समूह द्वारा प्रदर्शन		
चाय/काफी अन्तराल	11.00सुबह – 11.15सुबह	15 मिनट

सत्र 1 जारी.....

• उपकरण 2: वरीयता क्रम की प्राथमिकता	11.15सुबह – 11.45सुबह	30 मिनट
O उपकरण का प्रस्तुतिकरण		
O समूह कार्य – उपकरण का अभ्यास		
O समूह द्वारा प्रदर्शन		
• उपकरण 3: सहकर्मी मानचित्र	11.45सुबह – 12.15दिन	30 मिनट
O उपकरण का प्रस्तुतिकरण		
O समूह कार्य – उपकरण का अभ्यास		
O समूह द्वारा प्रदर्शन		
• उपकरण 4: पी०ई० सप्ताहिक योजना तथा गतिविधि पत्र	12.15दिन – 1.00दिन	45 मिनट
O उपकरण का प्रस्तुतिकरण		
O समूह कार्य – उपकरण का अभ्यास		
O समूह द्वारा प्रदर्शन		
भोजन अन्तराल	1.00दिन – 1.45दिन	45 मिनट
सत्र 2:संकट प्रबंधन	1.45दिन – 2.30दिन	45 मिनट

- विचार – विमर्श – संकट के किस्में
- समूह कार्य – परिस्थिति अध्ययन
- प्रस्तुतिकरण तथा विचार विमर्श

- विचार विमर्श - संकट प्रबंधन पद्धत्ति

सत्र 3:एच०आई०वी० से अलग (समान्य स्वास्थय, स्वंय सहायता समूह, सामाजिक अधिकार)	2.30दिन - 3.15दिन	45 मिनट

- विचार-विमर्श - बोलने वाले तथ्यों का अध्यास (सचित्र पुस्तिकाओं का उपयोग)
- बोलने वाले तथ्यों का प्रस्तुतिकरण
- विचार विमर्श - सामाजिक अधिकार

दिन 4 का आंकलन	3.15दिन - 3.30दिन	15 मिनट
सत्र 4:प्रशिक्षण का आंकलन	3.30दिन - 4.00शाम	30 मिनट

सत्र 1 : निगरानी तथा दस्तावेज़ीकरण (अवसर अन्तर विश्लेषण, वरीयताक्रम प्राथमिकता, सहकर्मी मानचित्र, पी०ई० की सप्ताहिक योजना तथा गतिविधि पत्र)

सत्र 1 — निगरानी तथा दस्तावेज़ीकरण

उद्देश्य: प्रतिभागियों को उनके कार्य के दस्तावेज़ीकरण की महत्त्वता को समझने में सहायता करना।
प्रतिभागियों को दस्तावेज़ीकरण करने में उपयोग होने वाले प्रारूपों पर प्रशिक्षण देना।

अपेक्षित परिणाम: प्रतिभागी दस्तावेज़ीकरण के प्रारूपों को उपयोग करना सीखेंगे।

अवधि: 2 घण्टे 30 मिनट

कार्य प्रणाली: चर्चा, मानचित्रण, प्रस्तुतिकरण, व्याख्या

सामग्री/आवश्यक तैयारी: चित्रपट, चिन्हक पैन, विभिन्न रंगों तथा विभिन्न आकारों की बिन्दीयाँ, प्रतिभागियों के लिए प्रारूपों के वितरण बिल।

प्रक्रिया:

- निगरानी तथा निगरानी क्षेत्र पर पृष्ठभूमि जानकारी देते हुए सत्र को आरम्भ करें।

निगरानी की आवश्यकता तथा महत्त्व:

- दिनो-दिनी प्रदर्शन का साफ अनुमान देता है।
- कितना पाया जा चुका है समझने में सहायता करता है।
- सेवायें कैसे उन्नत हो सकती हैं समझने में सहायता करता है।
- दिनों-दिनी प्रक्रियाओं तथा प्रदर्शन में आने वाली समस्यायों की पहचान करने में सहायता करता है।
- समस्याओं पर काबू पाने के लिए कार्यनीतियाँ बनाने में सहायता करता है।

O निरंतरता की गतिविधियाँ को योजनाबद्ध करने में सहायता करता है।

निगरानी के क्षेत्रः

गुणवाचक (मुख्यता पी०ई० के प्रदर्शन के लिए):

- दूसरे समुदायिक सदस्यों के साथ घनिष्ठता तथा दोस्ती।
- एस०टी०आई० तथा एच०आई०वी०/एडस् के अलग पहलूओं के बारे में जानकारी का प्रसार।
- नियमित स्वास्थ्य जाँच के लिए समुदायिक सदस्यों को प्रोत्साहन।
- गर्भ निरोधक उपयोग के लिए समुदायिक सदस्यों को प्रोत्साहन।
- गर्भ निरोधक का सामाजिक बाजारीकरण तथा वितरण।
- समुदायिक सदस्यों से बातचीत/संदेश।
- हितधिकारियों से बातचीत।
- आई०सी०टी०सी० सेवायें पाने के लिए समुदायिक सदस्यों को सहायता।
- एच०आई०वी० संक्रमित समुदायिक सदस्यों की सहायता।
- उत्पीड़न मुद्दे बताने के लिए समुदायिक सदस्यों की सहायता।

मात्रात्मकः

- एस०टी०आई० मरीज़ों की संख्या।
- उपचार पूरा करने वाले मरीज़ों की संख्या।
- निरंतर मरीज़ों की संख्या।
- जानकारी/संदेश दिये जाने वाले मरीज़ों की संख्या।
- वितरित किये गये गर्भ निरोधकों की संख्या।
- आई०सी०टी०सी० करे संदर्भित व्यक्तियों की संख्या।
- अपना संगठन बनाने के इच्छुक समुदायिक सदस्यों की संख्या।
- अपनी बैंकिंग तकनीक विकसित करने में इच्छुक समुदायिक सदस्यों की संख्या।
- हिंसा की घटनाओं की संख्या।
- ग्रिफतार समुदायिक सदस्यों की संख्या।
- समुदायिक सदस्यों द्वारा बतायी गयी घटनाओं की संख्या।

- आगे, प्रतिभागियों को बतायें कि इस सत्र में दो भाग होंगे।
  - O भाग 1 परियोजना की निगरानी में उपयोग होने वाले विभिन्न भागीदार उपकरण पर केन्द्रित होगा।
  - O भाग 2 पी०ई० द्वारा उपयोग होने वाले निगरानी प्रारूप पर केन्द्रित होगा।

- प्रतिभागियों को छोटे समूहों में बांटें ताकि वे हर उपकरण के लिए समूह अभ्यास कर सकें।
- 'अवसर अन्तर विश्लेषण' उपकरण से आरम्भ करें। उपकरणों के उपयोग सम्बन्धी पालन किये जाने वाले उद्देश्य, निरंतरता तथा प्रक्रिया की व्याख्या करें।

उपकरण 1: अवसर अन्तर विश्लेषण

उद्देश्य

स्थल आधार पर अवसर अन्तर का विश्लेषण करें।

दिशा निर्देश:

- विभिन्न आउटरीच प्रक्रियायें (सम्पर्क, पंजीकरण, एस०टी०आई० उपचार) क्षेत्र स्तर पर होती हैं। हालांकि क्षेत्र में इन प्रक्रियाओं के दौरान कुछ बहिष्कार होते हैं जो कि "अवसर अन्तर" कहलाता है।
- विश्लेषण जिला, लक्षेपित हस्तक्षेप (टी०आई०) क्षेत्र तथा स्थल का किया जाता है।
- अवसर अन्तर विश्लेषण रूपरेखा में सूचक के स्तर का ध्यान रखें।
- प्रत्येक सूचक में अगले चरणों के अन्तराल को बताने के लिए उन अन्तरों के लिए अन्तर, कारण को नोट करें।
- अन्तर आन्तरिक अथवा बाहरी कारकों के कारण हो सकते हैं।
  - आन्तरिक कारक: जहाँ परियोजना पर सीधा नियंत्रण हो, जैसे कि ओ०आर०डब्लयू० तथा पी०ई० के कार्य समय में होता है।
  - बाहरी कारक: परियोजना के हाथ में नहीं जैसे दैनिक आधार पर यौन कर्मीयों की उच्च गतिशीलता।
- दूसरे सूचक जो प्रेरित किये जा सकते हैं वे समुदायिक सदस्य जिन्होंने संकट का सामना किया है, समुदायिक सदस्यों की संख्या जिन्होंने परियोजना से इन संकटों के लिए सहायता प्राप्त की हो, समुदायिक सदस्य जिन्होंने पात्रता प्राप्त की हो तथा उन्हें अपनी गैर-एच०आई०वी० की आवश्यकताओं के बारे में बताया गया हो।

गतिविधियाँ	स्तर	अवसर अन्तर	कारण		हमें क्या करना चाहिए
			आन्तरिक	बाहरी	
अन्दाजा					
सम्पर्क					
पंजीकरण					
नियमित सम्पर्क					
एस०टी०आई० उपचार					

निरंतरता					
नियमित जाँच					
आई०सी०टी०सी०					

- संक्षेप के पश्चात्, समूह को उपकरण पूर करने के लिए प्रोत्साहित करें। प्रतिभागी इसके लिए चित्रपट चिन्हक पैन का उपयोग कर सकते हैं।
- उपकरण को पूरा करने के पश्चात्, किसी समूह को बड़े समूह पर प्रस्तुति बनाने के लिए प्रोत्साहित करें।
- निम्न पर चर्चा प्रोत्साहित करें:
  - समूह द्वारा क्या प्रक्रिया अपनायी गई?
  - अभ्यास के परिणाम क्या है?
  - आउटरीच को योजनाबद्ध करने में अभ्यास कैसे सहायी है?
  - इस उपकरण कर पूरा करते समय सामान्य गल्तीयाँ क्या हैं?
  - इन गल्तीयों के क्या परिणाम हैं?
- आगे, 'वरीयताक्रम प्राथमिकता' उपकरण।

उपकरण 2: वरीयताक्रम प्राथमिकता

उद्देश्य:

नियमित सम्पर्कों में अनियमितता तथा चिकित्सालय उपस्थिति को पहचानें तथा इसे प्राथमिकताक्रम दें।

दिशा निर्देश:

- एच०आर०जी० के चिकित्सक सेवाओं के न लेने के कारणों को सूचीबद्ध करें। फलैश कार्डों पर कारणों को सचित्र दर्शायें।
- कारणों को प्राथमिकताक्रम दें तथा निम्न चिकित्सालय उपस्थिति के पाँच मुख्य कारणों को चुनें।
- इन हरेक पाँच कारणों का वरीयताक्रम करें तथा सबसे महत्त्वपूर्ण कारण को प्राथमिकता दें।
  - एच०आर०जी० के चिकित्सालय न आने के सबसे महत्त्वपूर्ण कारण क्या हैं?
  - इन कारणों को बताने की योजनायें क्या हैं?
  - इस अभ्यास पर आधारित आउटरीच तथा सेवायें कैसे बदलती हैं?

घटनास्थल:	कस्बा:	तिथि:		
महिलाओं के चिकित्सालय न आने के कारण	कारण 1	कारण 2	कारण 3	
REASON 1	✗	✗		
कारण 2	✗	✗		
कारण 3	✗	✗	✗	
कारण 4	✗	✗	✗	

- संक्षेप के बाद, समूहों को उपकरण खत्म करके इसे प्रस्तुति के लिऐ कहें।
- निम्न पर चर्चा प्रोत्साहित करें:
  - O समूह द्वारा क्या प्रक्रिया अपनायी गई?
  - O अभ्यास के परिणाम क्या है?
  - O आउटरीच को योजनाबद्ध करने में अभ्यास कैसे सहायी है?
  - O इस उपकरण कर पूरा करते समय सामान्य गल्तीयाँ क्या हैं?
  - O इन गल्तीयों के क्या परिणाम हैं?
- सत्र के भाग 1 को खत्म करने के लिए प्रतिभागियों को 'सहकमी मानचित्र' उपकरण के बारे में संक्षेपित करें।

उपकरण 3: सहकमी मानचित्र

उद्देश्य:

पी०ई० द्वारा यौन कर्मी के साथ जिसके साथ वह कार्य कर रहा है, किये गये आउटरीच कार्य को समझना तथा विश्लेषण करना।

दिशा – निर्देश:

- पी०ई० को घटनास्थल को मानचित्रण करना होगा जहाँ वे कार्य करते हैं तथा अपने समूदायिक सदस्यों को मिलते हैं।
- इन घटनास्थलों पर पी०ई० को एफ०एस०डब्लयू०/एम०एस०एम०/आई०डी०यू० का मानचित्रण करना होगा, जो उनका कार्य है, विभिन्न रंगों की सहायता से इन घटनास्थलों पर उच्च मात्रा, मध्यम मात्रा तथा निम्न मात्रा को दशार्ये।
- पी०ई० इसके बाद निम्नलिखित सूचना देंगे:-
  - पिछले महीने में जितनी बार वे यौनकर्मीयों को मिले जिसके लिए वे कार्यरत हैं।
  - सम्पर्क किये गये एफ०एस०डब्लयू०/एम०एस०एम०/आई०डी०यू० को कितने गर्भ निरोधक वितरित किये गये?
  - इन स्थलों पर गर्भ निरोधक वितरण डिब्बे।
- मानचित्र का निम्नलिखित के अनुसार विश्लेषण करें।
  - क्या पी०ई० पिछले महीने सभी एफ०एस०डब्लयू०/एम०एस०एम०/आई०डी०यू० को मिला है जिनके लिये वह कार्यरत है? यदि नहीं तो क्यों?
  - यौन कार्य की मात्रा के आधार पर, क्या पी०ई० द्वारा किये गये आउटरीच में कोई अन्तर है? क्या वह उच्च मात्रा एफ०एस०डब्लयू०/एम०एस०एम०/आई०डी०यू० को अधिकांशतय तथा निम्न मात्रा एफ०एस०डब्लयू०/एम०एस०एम०/आई०डी०यू० को कम तौर पर मिला?
  - क्या वितरित गर्भ निरोधक यौन कार्य की मात्रा पर आधारित थे? क्या एफ०एस० डब्लयू०/एम०एस०एम०/आई०डी०यू० के सभी यौन कार्यों को पूरा करने के लिए पर्याप्त गर्भ निरोधक बाँटे गये। क्या कोई कमी हुई थी? गर्भ निरोधक की यह कमी कैसे दर्ज की गई? क्या यह गोदामों से थी? क्या ग्राहक गर्भ निरोधक ला रहे हैं?

यह नक्शे दूसरे सूचकों जैसे चिकित्सालय उपस्थिति, संकट सहायता पहुँच, सामर्थता की पहुँच इत्यादि को शामिल करने के लिए अपनाये जा सकते हैं।

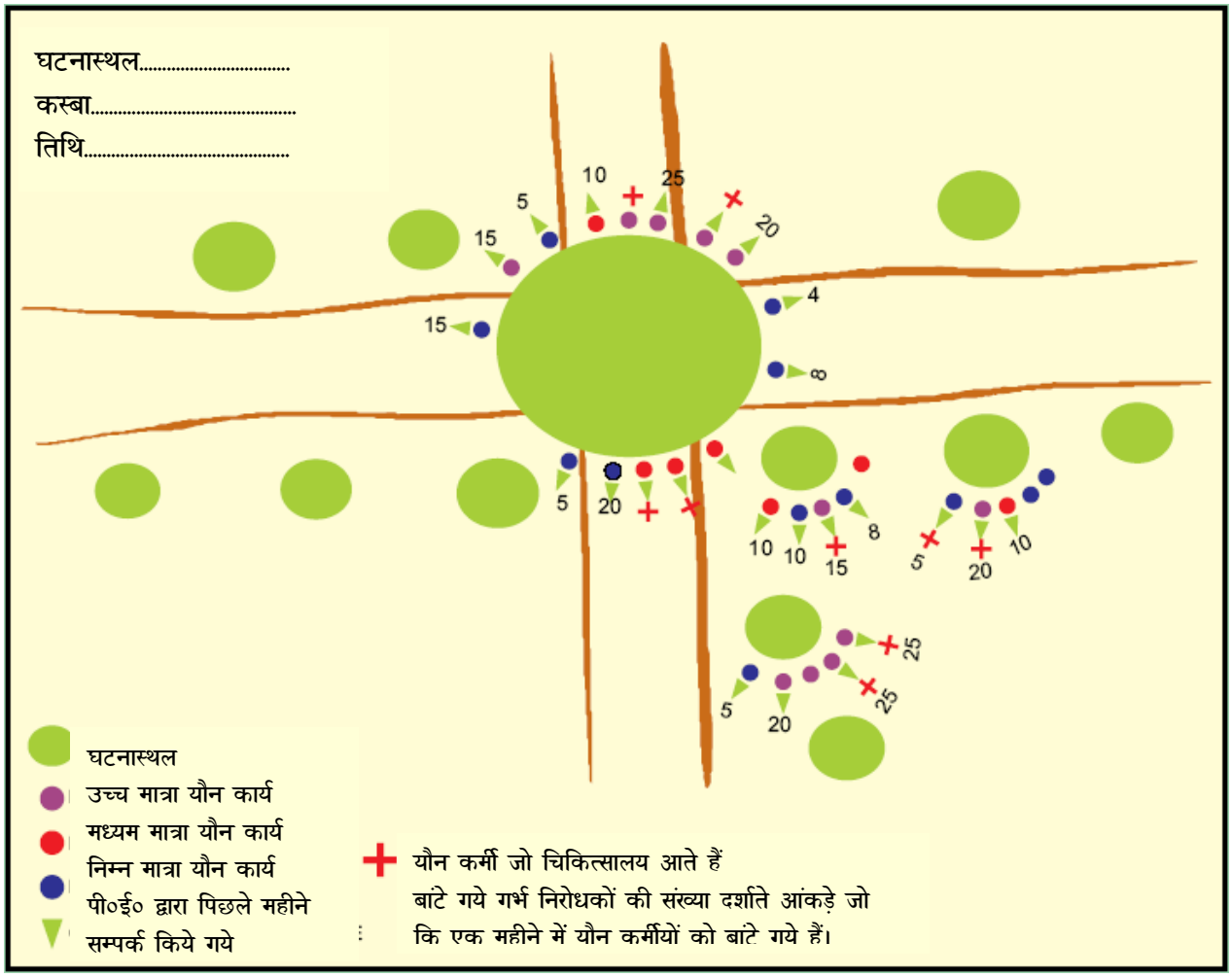

- संक्षेप के बाद, समूहों को उपकरण खत्म करके इसे प्रस्तुति के लिऐ कहें।
- निम्न पर चर्चा प्रोत्साहित करें:
  - O समूह द्वारा क्या प्रक्रिया अपनायी गई?
  - O अभ्यास के परिणाम क्या है?
  - O आउटरीच को योजनाबद्ध करने में अभ्यास कैसे सहायी है?
  - O इस उपकरण कर पूरा करते समय सामान्य गल्तीयाँ क्या हैं?
  - O इन गल्तीयों के क्या परिणाम हैं?
- तब इस सत्र के भाग 2 पर जायें। निम्न की विस्तृत व्याख्या करते हुए पी०ई० की दैनिक डायरी अत: निगरानी उपकरण की समीक्षा करें।
  - O इस प्रारूप को उपयोग करने की आवृत्ति क्या है?
  - O यह प्रारूप क्यों उपयोग किया जाता है?
  - O प्रारूप को भरने के निर्देश/चरण।
- निम्नलिखित पर चर्चा प्रोत्साहित करें:
  - O इस प्रारूप के उपयोग द्वारा सभी आवश्यक आंकड़े एकत्रित किये जा सकते हैं?
  - O इस प्रारूप को भरने सम्बन्धी सामान्य गल्तीयाँ।

उपकरण 4: एफ०एस० डब्लयू० तथा एम०एस०एम० पी०ई० के लिए सप्ताहिक योजना तथा गतिविधि पत्र।

उद्देश्य:

- हर दिन के आधार पर पी०ई० द्वारा प्रदान की गई सेवाओं की किस्म की निगरानी के लिए।
- आउटरीच के लिए योजनाबद्ध किये गये समुदायिक सदस्यों की संख्या तथा असल पहुँचे समुदायिक सदस्यों की संख्या जानने के लिए।
- पिछले यौन कार्य में गर्भ निरोधक का उपयोग जानने के लिए।
- न सम्पर्क किये गये समुदायिक सदस्यों के बारे में जानने के लिए।

दिशा निदेर्श:

- **कौन और कब:**
  - यह प्रारूप सहकर्मी शिक्षक द्वारा उसको दिये घटनास्थल/स्थल में दिये गये सप्ताह में एच०आर०जी० के साथ बनाये गये हर सम्पर्क के लिए उपयोग किया जायेगा।
  - यह प्रारूप परियोजना दफतर में उपलब्ध टी०आई० एम०आई०एस०/लेखाकार द्वारा रेखा सूची/प्रधान रजिस्टर में से एच०आर०जी० सदस्यों के नाम तथा यू०आई०डी० संख्या सहित पहले से सूचीबद्ध/छपा होगा।
  - पी०ई० से स्थल पर सभी नये एच०आर०जी० की पहचान तथा घटनास्थल/स्थल में सूचीबद्ध सभी एच०आर०जी० को कम से कम दो सप्ताहों में एक बार परियोजना सेवाओं शामिल करने की अपेक्षा की जाती है।
  - नये एच०आर०जी० सदस्य का नाम प्रारूप की अन्तिम पंक्ति में शामिल किया जायेगा।
  - भरा गया प्रारूप सप्ताहिक आधार पर सम्बधित ओ०आर०डब्लयू मुखी से प्रदर्शन निगरानी तथा आने वाले सप्ताह की योजना के लिए सांझा किया जायेगा।
- कैसे: हर पंक्ति सूचीबद्ध सम्पर्क किये गये एच०आर०जी० की जानकारी को प्रदर्शित करती है। विस्तृत जानकारी निम्नलिखित है।

क्रम संख्या: एच०आर०जी० सदस्यों की जोखिम कारकों तथा अतिसंवेदनशीलता के आधार पर प्राथमिकता के लिए क्रम संख्या का उपयोग किया जायेगा। सहकर्मी शिक्षक तथा आउटरीच कर्मी एक दूसरे की सलाह से हर सप्ताह ये प्राथमिकता तय करेंगे। पी०ई० को अपनी आउटरीच की योजना की सहायता के लिए प्राथमिक क्रम संख्या को रंग की सहायता से चिन्हांकित किया जायेगा।

एच०आर०जी० का नामः यह खण्ड टी०आई० अफसर द्वारा एच०आर०जी० के नाम सहित पहले से सूचीबद्ध/छापा गया होगा जो कि सम्बधित सहकर्मी को दिये गये घटनास्थल/स्थल द्वारा पंजीकृत तथा आउटरीच होगा।

यू०आई०डी० संख्याः डिब्बे में गोलाकारों का पहला ढांचा 10ओं का सूचक है तथा दूसरा त्रिकोणों का ढांचा ईकाईयों को।

उदाहरण के तौर पर 42 को ऐसे निरूपित किया जा सकता है

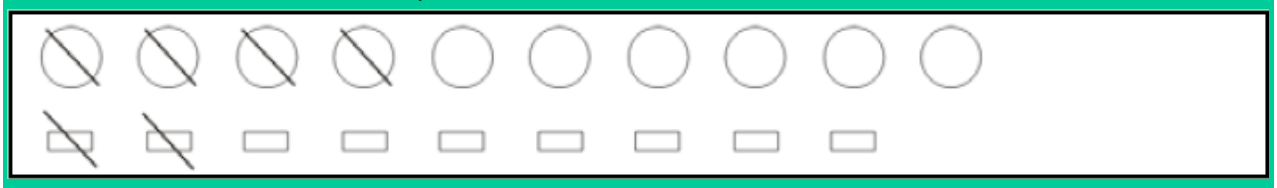

समुदायिक सदस्यों के नाम पहचानने के लिए चिन्हः यह खण्ड उस पी०ई० के लिए है जो समुदायिक सदस्यों को नामों अथवा यू०आई०डी० संख्या के आधार पर नहीं पहचान सकता। पी०ई० ओ०आर०डब्लयू० की सहायता से दिये गये घटनास्थल/स्थल में एच०आर०जी० सदस्यों की पहचान के लिए चिन्ह विकसित करेगा।

संदर्भ देय/अतिदेय - एस०टी०आई०/आई०सी०टी०सी०: यदि कोई एच०आर०जी० सदस्य एस०टी०आई० जाँच के लिए देय/अतिदेय है (ए०एन०एम०/परामर्शदाता के अनुसार), तो पी०ई० ओ०आर०डब्लयू की सहायता से चिन्ह लगायेगा। चिन्हों की संख्या एच०आर०जी० को चिकित्सालय पर लाने के महत्त्वता की बढ़त की सूचना देगीः

√= एक टिक एच०आर०जी० सदस्य का चिकित्सालय का दौरा इस महीने नियत है।

√√= दो टिक एच०आर०जी० सदस्य का चिकित्सालय का दौरा पिछले महीने से नियत है तथा वह इसके अनुसार चिकित्सालय नहीं गया है।

√ √ √= तीन टिक एच०आर०जी० सदस्य का चिकित्सालय का दौरा पिछले दो महीनों से नियत है (इस महीने को मिलाकर तीन) तथा वह इसके अनुसार चिकित्सालय नहीं गया है।

जोखिम आंकलन (जोखिम तथा अतिसंवेदनशीलता): हर सप्ताह, पी०ई० सात पैमानों के आधार पर एच०आर०जी० सदस्यों के जोखिम का आंकलन करता है। यह जानकारी पी०ई० तथा ओ०आर०डब्लयू० को जोखिमपूर्ण एच०आर०जी० सदस्य पर अधिक ध्यान केन्द्रित करने में सहायता तथा आवश्यकता अनुसार सेवायें प्रदान करती हैं। हर पैमाने पर संक्षेप व्याख्या नीचे दी गयी है।

जोखिम कारक:-

- ग्राहकों की उच्च मात्रा (>15 हर सप्ताह) - यदि एच०आर०जी० सदस्य का दबाव 15 यौन कार्य प्रति सप्ताह है, तो वह उच्च जोखिम पर है।
- निम्न गर्भ निरोधक उपयोग (10 यौन कार्य में से 2 यौन कार्यों में गर्भ निरोधक का उपयोग नहीं किया गया) - यदि एच०आर०जी० सदस्य बताता है कि उसने 20 प्रतिशत यौन कार्यों में गर्भ निरोधक का उपयोग नहीं किया है (10 के पैमाने में 2 से अधिक) तो वह जोखिम पर है।
- यौन कार्य का पहला दिन - यदि एच०आर०जी० सदस्य बताता है कि यौन कार्य में पिछले केवल एक वर्ष से है, तो वह उच्च जोखिम पर है।
- एस०टी०आई० पिछले तीन महीने से - यदि एच०आर०जी० सदस्य किसी एस०टी०आई० की पिछले तीन महीने से शिकायत करता है। तो एच०आर०जी० सदस्य जोखिम पर है।

अतिसंवेदनशील कारक:

- शराब: यदि एच०आर०जी० सदस्य शराब लेता है, तो वह अतिसंवेदनशील है।
- असुरक्षित यौन (अधिक पैसा): एच०आर०जी० सदस्य यौन कार्य मुख्यत: पैसे के लिए कर रहा है (आर्थिक कारण), तो वह अतिसंवेदनशील है।
- हिंसा: यदि एच०आर०जी० सदस्य हिंसा अथवा उत्पीड़न का शिकार है, तो वह अतिसंवेदनशील है।

गर्भ निरोधक अन्तर विश्लेषण के अनुसार गर्भ निरोधक की आवश्यकता: हर एच०आर०जी० सदस्य की गर्भ निरोधक की आवश्यकता की जानकारी उसके यौन कार्य के आधार पर आंकी जा सकती है। इस जानकारी का समय अनुसार नवीनीकरण ओ०आर०डब्लयू द्वारा सम्बधित सहकर्मी शिक्षक की सहायता से किया जायेगा।

सेवायें: एच०आर०जी० सदस्य के साथ हर मुलाकात पर, पी०ई० निम्न अनुसार सेवायें देगा (8 प्रकार की सेवायें)। पी०ई० एच०आर०जी० सदस्य हर सम्पर्क बनने पर उसकी आवश्यकता तथा उपयोगिता के अनुसार एक या एक से अधिक सेवायें दे सकता है।

- **गर्भ निरोधक वितरण:** एच०आर०जी० सदस्य हर सम्पर्क बनने पर गर्भ निरोधक आवश्कयता अनुसार बांटे जायें। पी०ई० सुनिश्चित करे कि हर एच०आर०जी० सदस्य को बांटे गये गर्भ निरोधक दर्ज किए गये हैं तथा इनका प्रारूप एकल है न कि पुलिन्दे में।

- **गर्भ निरोधक विक्रय (पुरूष):** पी०ई० सुनिश्चित करे कि हर एच०आर०जी० सदस्य को बेचे गये गर्भ निरोधक एकल है न कि पुलिन्दे में।
- **गर्भ निरोधक विक्रय (पुरूष):** पी०ई० सुनिश्चित करे कि हर एच०आर०जी० सदस्य को बेचे गये महिला गर्भ निरोधक एकल है न कि पुलिन्दे में।

पी०ई० (√) का चिन्ह लगाये जब एच०आर०जी० सदस्य को 1:1, 1:समूह अथवा संदर्भित किया जाये।

- **1:1 –** जब पी०ई० एच०आर०जी० सदस्य को 1:1 आधारित सम्पर्क पर मिलता है तथा परियोजना के सेवाओं के विषय में बात करता है – एस०टी०आई०, एच०आई०वी०, नियमित चिकित्सा जाँच की महत्त्वता, आई०सी०टी०सी० को संदर्भ, गर्भ निरोधक उपयोग, गर्भ निरोधक प्रदर्शन पर जानकारी प्रदान करता है।
- **1: समूह –** जब पी०ई० एक से अधिक एच०आर०जी० सदस्यों को एक सम्पर्क में मिलता है तथा परियोजना के सेवाओं के विषय में बात करता है – एस०टी०आई०, एच०आई०वी०, नियमित चिकित्सा जाँच की महत्त्वता, आई०सी०टी०सी० को संदर्भ, गर्भ निरोधक उपयोग, गर्भ निरोधक प्रदर्शन पर जानकारी प्रदान करता है।
- **संदर्भ (समान्य तथा एस०टी०आई०):** हर एच०आर०जी० सदस्य एस०टी०आई० चिकित्सालय (परियोजना चिकित्सालय अथवा प्राथमिक प्रादाता) तथा परियोजना की दूसरी विभिन्न सेवाओं के लिए संदर्भित किया जाना चाहिए (आई०सी०टी०सी०, ए०आर०टी०, टी०बी० इत्यादि)।

एस०टी०आई० संदर्भ: पी०ई० को सुनिश्चित करना होगा सभी सम्मिलित एच०आर०जी० सदस्य एस०टी०आई० चिकित्सालय/प्राथमिक प्रादाता को तिमाही नियमित चिकित्सा जाँच (आर०एम०सी०) के लिए संदर्भित किया गया है। आगे, एच०आर०जी० सदस्यको एस०टी०आई० चिकित्सालय/प्राथमिकतप्रादाता को लक्षणात्मक तथा गैर लक्षणात्मक एस०टी०आई० उपचार हेतू अवश्य संदर्भित किया जाना चाहिए।

आई०सी०टी०सी० सदंर्भ: सभी एच०आर०जी० सदस्यों की एच०आई०वी० जाँच के लिए वर्ष में दो बार सम्बधित आई०सी०टी०सी० केन्द्रों से होनी चाहिए। पी०ई० को सभी एच०आर०जी० सदस्यों को आई०सी०टी०सी० पर जाँच के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। पी०ई० यह भी सुनिश्चित करेगा कि एच०आर०जी० सदस्य को ओ०आर०डब्लयू०/ए०एन०एम० द्वारा संदर्भ पर्ची दी गई है।

ए०आर०टी०: पी०ई० अपने घटनास्थल/स्थल के साकारात्मक एच०आर०जी० सदस्यों की सूची बनायेगा। पी०ई० यह सुनिश्चित करेगा कि सभी

सकारात्मक एच०आर०जी० ए०आर०टी० द्वारा पंजीकृत हैं। पी०ई० एच०आर०जी० को ए०आर०टी० पर दवाओं के समर्थन की लगाव के लिए प्रोत्साहित करेगा।

पिछले यौन के दौरान गर्भ निरोधक का उपयोगः एच०आर०जी० सदस्यों से हर मुलाकात के दौरान पी०ई० को यह भली भांति जाँच लेना चाहिए कि च०आर०जी० सदस्य ने पिछले यौन कार्य के दौरान गर्भ निरोधक का उपयोग किया है। यदि एच०आर०जी० सदस्य यह बताये कि:-

- पिछले यौन कार्य में गर्भ निरोधक का उपयोग - (√)
- पिछले यौन कार्य में गर्भ निरोधक का उपयोग नहीं - (X)

हिंसा की पहचान/बताई गईः पी०ई० से सम्पर्क के दौरान, यदि एच०आर०जी० सदस्य बताता है कि सप्ताह दौरान वह हिंसा अथवा उत्पीड़न का/की शिकार हुई है तो पी०ई० (√) कर चिन्ह लगायेगा (ओ०आर०डब्लयू० पी०ई० की सहायता से मुद्दे को बतायेगा) अन्यथा वह (X) का चिन्ह लगायेगा।

सप्ताहिक आधार पर, स्थल का पुनरीक्षण ओ०आर०डब्लयू० द्वारा संयुक्त रूप से किया जायेगा जिसमें फार्म ओ०आर०डब्लयू० के सपुर्द किये जायेंगे जो कि इस प्रारूप को इसकी पूर्णता के लिए जांचेगा। भरे हुए फार्म की यह जानकारी प्रदर्शन निगरानी, अगले सप्ताह की प्राथमिकता तथा योजना के लिए उपयोग की जायेगी।

सहकर्मी प्रारूप की जानकारी की उपयोगिताः

- दिये गये घटनास्थल पर मिलने वाले एच०आर०जी० सदस्यों की संख्या जानने में सहायता करता है।
- दिये गये घटनास्थल पर नये एच०आर०जी० सदस्यों की पहचान में सहायता करता है।
- दिये गये घटनास्थल पर पी०ई० द्वारा एच०आर०जी० सदस्य को प्रदान की जाने वाली सेवाओं को किस्म जानने में सहायता करता है।
- दिये गये घटनास्थल पर हरेक एच०आर०जी० सदस्य को बांटे गये गर्भ निरोधकों की संख्या तथा साथ ही बांटे गये कुल गर्भ निरोधकों की संख्या जानने में सहायता करता है।
- सम्पर्क न किये गये सूचीबद्ध तथा अगले सप्ताह की प्राथमिकता पर होने वाले एच०आर०जी० सदस्यों की संख्या जानने में सहायता करता है।
- हर एच०आर०जी० सदस्य की जोखिम रूपरेखा जानने में सहायता करता है जिसमें कि वह है।

- दिये गये घटनास्थल/स्थल में हुए हिंसा तथा उत्पीड़न की संख्या जानने में सहायता करता है।

('रैडी रैफरैन्स बुकलेट - आउटरीच कर्मीयों के लिए प्रशिक्षण पुस्तिका, एन०ए०सी०ओ०)

एफ०एस०डब्लयू तथा एम०एस०एम० पी०ई० के लिए:

पी०ई० सप्ताहिक योजना तथा गतिविधि पत्र (एफ०एस०डब्लयू०, एम०एस०एम०)																						
पी०ई० का नाम					जिला								घटनास्थल का नाम						सप्ताह	1	2	3	4
जिम्मेवार ओ०आर० डब्लयू का नाम					महीना जिसके लिए														तिथि: (सप्ताह का अन्त)				
क्रमांक	एच०आर० जी० समूह का नाम	00 0000 00 0 ▪▪ ▪▪ ▪▪ ▪▪ यू०आई० डी० न०	एच०आर० जी० समूह की पहचान के लिए पी०ई० का चिन्ह	संदर्भ देय/अतिदेय		जेखिम आंकलन								सेवायें										
				एस०टी० आई०	आई०सी० टी०सी०	जेखिम				अतिसंवेदनशीलता			गर्भ निरोधक की हर सप्ताह आवश्य-कता	बांटे गये गर्भ निरोधकों की संख्या	बेचे गये गर्भ निरोधकों की संख्या (पुरूष)	बेचे गये गर्भ निरोधकों की संख्या (स्त्री)	सम्पर्क की संख्या		संदर्भों की संख्या (एस०टी० आई० तथा दूसरे केन्द्र) एच० आर०जी० समूहों द्वारा पहुँच			पिछले यौन कार्यो के दौरान गर्भ निरोधक का उपयोग	हिंसा की पहचान की शिकायत
						नशीली दवाओं के उपयोग वाले ग्राहकों की अधिक संख्या (>15 प्रति सप्ताह)	निम्न गर्भ निरोधक उपयोग (पिछले 10 यौन कार्यों में से 2 में गर्भ निरोधक का उपयोग नहीं)	यौन कार्य में पहला वर्ष	पिछले तीन महीनों में एस०टी० आई० की शिकायत	शराब	असुरक्षित यौन कार्य (अधिक पैसा)	हिंसा					1:1	1-समूह	एस०टी० आई० संदर्भों का दौरा	आई०सी० टी०सी०	ए०आर० टी०		
1																							
2																							
3																							
4																							
5																							
6																							
7																							
8																							
9																							

10																						
11																						
12																						
13																						
14																						
15																						
16																						
17																						
18																						
19																						
20																						
21																						
22																						
23																						
24																						
25																						
कुल																						

सत्र 1 : संकट प्रबन्धन

सत्र 1 संकट प्रबन्धन

उद्देश्य: प्रतिभागियों को समुदाये द्वारा झेले जा रहे संकट को हल करने के लिए उनकी भूमिका तथा समुदाये का विश्वास पाने की जानकारी को समझने में सहायता करता है।

अपेक्षित परिणाम: प्रतिभागी समुदाये की आवश्यकताओं तथा संकट के समय समुदाये की सहायता कैसे की जाये के बारे में जानेंगे।

अवधि: 45 मिनट

कार्य प्रणाली: विचारावेश, चर्चा, व्याख्या

सामग्री/आवश्यक तैयारी: चित्रपट तथा चिन्हक पैन।

प्रक्रिया:

- प्रतिभागीयों को समुदायिक सदस्यों द्वारा व्यक्तिगत रूप में तथा बड़े समुदाये के रूप में झेले गये संकटों की सूची बनाने के लिए कहते हुए सत्र को आरम्भ करें।
- प्रतिभागीयों द्वारा बतायें गये संकटों को दर्ज करें। यदि सम्भव हो तो इसे दो भागों में बांटें – व्यक्तिगत संकट तथा समूह संकट।
- समूह को दो भागों में बांटें। हरेक समूह को एक दृश्य कार्ड दें।

मामला अध्ययन 2:

क्षेत्र दौरे के दौरान सहकर्मी शिक्षक कुछ समुदायिक सदस्यों से मिलती है जो उसे पुलिस छापे के बारे में बताते हैं जब वो कहीं गई हुई थी। कुछ महिलाएँ ग्रिफतार हो गई जब वे सो रही थीं। पी०ई० को यह एहसास हुआ कि इस तरह के छापे हॉटस्पाट पर नियमित हो गये हैं।

–समुदायिक सदस्यों द्वारा सामना की जाने वाली क्या यह आम समस्या है?
–इस समय क्षेत्र स्तर पर यह कैसे संभाली जाती है?

अध्ययन केस 3

समुदायिक सदस्य के साथ बातचीत के दौरान, सहकर्मी शिक्षक को यह एहसास हुआ कि समुदायिक सदस्य परेशान है क्योंकि पिछली रात उस क्षेत्र का एक स्थानीय गुण्डा बिना गर्भ निरोधक के उसके साथ जबरदस्ती संभोग कर गया। यह गुण्डा इस क्षेत्र में कई और यौन कर्ताओं के साथ कर ऐसा कर रहा है।

–समुदायिक सदस्यों द्वारा सामना की जाने वाली क्या यह आम समस्या है?
–इस समय क्षेत्र स्तर पर यह कैसे संभाली जाती है?

- समूह को निम्नलिखित पर विचार-विमर्श करने को कहें:
  - क्या समुदायिक सदस्यों द्वारा झेली जाने वाली यह सामान्य परिस्थिति है?
  - यह क्षेत्र स्तर पर इस समय कैसी निपटी जा रही है।
- हरेक समूह को उनकी चर्चा बड़े समूह को पेश करने दें।
- प्रस्तुतिकरण के बाद पहले बताये गये दूसरे संकटों से निपटने के लिए वर्तमान तरीकों पर चर्चा करना आरम्भ करें। प्रतिभागियों को उनके अनुभव बांटने के लिए कहें।
- पीछे दिये गये दो दृश्य कार्डों का संदर्भ लेकर समूह को निम्नलिखित के बारे में पूछें।
  - क्या क्षेत्र पर इससे तथा दूसरे संकटों से निपटने के लिए कोई प्रक्रिया है?
  - क्या समुदाये सुरक्षित तथा पी०ई० पर अधिक विश्वास करेगा यदि ऐसी पद्धति लागू की जाये?
  - ऐसी संकट प्रबन्धन प्रक्रिया में क्या शामिल होगा?
- एक प्रभावकारी संकट प्रबन्धन प्रक्रिया विकसित करने तथा मामलों का दस्तावेज़करण करने के लिए आवश्यकता पर चर्चा करें। देश में विभिन्न परियोजनाओं में ऐसी संकट प्रबन्धन प्रक्रियाओं को सांझा करें।

संकट प्रबन्धन के औचित्य:

यौनिक अल्पसंख्याको के प्रति उत्पीड़न तथा हिंसा आम है तथा प्रमुख प्रभावित जनसंख्या के प्रति लक्ष्ति हस्तक्षेप में सीधी अड़चन है। उत्पीड़न में मौखिक गाली गलौच, झूठे आधार पर ग्रिफतारी (जैसे कि उकसाने तथा गर्भ निरोधक लेकर जाने इत्यादि), मार-पिटाई तथा यहाँ तक कि यौन उत्पीड़न। सामान्य जनसमुदाये, पुलिस, गुण्डों, स्थानीय नेताओं, ग्राहकों अथवा एच०आर०जी० अन्दरूनी झगड़ों द्वारा उत्पीड़न तथा गालियाँ हो सकती हैं। तब समयअनुसार तथा सही संकट प्रतिक्रिया तथा नियमित संवेदीकरण और सलाह कार्यक्रमों द्वारा हिंसा तथा उत्पीड़न की अड़चन को दूर किया जा सकता है, तब एक ऐसा वातावरण बनाया जा सकता है जो कि एच०आर०जी० सदस्यों को उनका स्वाभिमान बनाने में सहायता प्रदान कर सकता है। यह बदले में उनको उनके स्वास्थ्य एच०आई०वी० सहित खासकर एस०टी०आई० सम्बधित मुद्दों पर ध्यान देने में सहायता करेगा। टी०आई० के हिस्से के रूप में संकट प्रतिक्रिया हस्तक्षेप एच०आर०जी० सदस्यों के आउटरीच में वृद्धि करता है जिससे उनका एन०जी०ओ० अथवा सी०बी०ओ० के साथ सम्बन्ध मजबूत होता है तथा उनका विश्वास प्राप्त करता है। संकट प्रतिक्रिया क्षेत्र कर्मीयों तथा एच०आर०जी० सदस्यों में अच्छी घनिष्ठता विकसित करता है जो कि एस०टी०आई० की रोकथाम तथा उपचार सम्बन्धी सूचना में सहायता करता है।

प्रभावकारी संकट प्रबन्धन के लिए आवश्यक मिश्रण:

- प्रशिक्षित तथा वचनबद्ध सदस्य जो "सेवा में" दिन के 24 घण्टे तत्पर रहे तथा संकट होने पर एकदम प्रतिक्रिया करें।
- प्रभावशाली सम्पर्क प्रक्रिया (जैसे कि संकटकालीन फोन) जिससे कि समुदाय सम्पर्क स्थापित कर सके।
- समुदायिक सदस्यों को संकट प्रावधान की जानकारी की प्रदानता।
- अनुभवी तथा इच्छुक वकील जो कि दिन में 24 घण्टे सलाह दे सकें।
- नियमित मुलाकात तथा शिक्षण जैसे उचित हो से स्थानीय हितधिकारियों से परस्परता, गठबंधन तथा संवेदनशील कार्य (खासकर एच०आर०जी०)। इसमें समुदायिक स्तरीय कानूनी शिक्षा सत्र भी शामिल हैं।
- दूसरे नागरिक समाजिक संगठनों, कार्यर्कताओं तथा स्थानीय संचार माध्यम सम्पर्कों से निकट गठबंधन जो कि आवश्यकता पड़ने पर समुदाय हेतू परामर्श दे सकें।
- संकट प्रबंधन मामलों को सुधारने तथा अन्दरूनी क्षमता बनाने पर चिन्तन।

संकट प्रतिक्रिया प्रणाली विकसित करना

संकट प्रतिक्रिया प्रतिक्रिया प्रणाली विकसित करने के लिए निम्नलिखित चरण आपनाये जा सकते हैं।

- एक संकट प्रतिक्रिया प्रतिक्रिया प्रणाली विकसित की जाये। इसमें सहकर्मी शिक्षक, आउटरीच कर्मी, परियोजना के उच्चत्तर कर्मी तथा कानूनी प्रावधान व्यक्ति जो एफ०एस०डब्लयू० के इर्द-गिर्द के उत्पीड़न सम्बन्धी कानूनी मुद्धों से अवगत हो, शामिल हों।
- संग कर्मीयों तथा संकट प्रतिक्रिया प्रणाली के तरीकों के लिए विस्तृत आदर्श पत्र विकसित करे तथा इसे लागू करने में जिम्मेवार हो।
- संकट के समय में समुदायिक सदस्यों द्वारा सम्पर्क करने के लिए मोबाईल फोन पूर्णता उनके उपयोग के लिए ही हासिल किये जायें।
- संकट प्रबंधन के लिए इन टैलीफोन के इस्तेमाल सम्बन्धी समुदायिक सदस्य स्वंयसेवी मनोनीत किये जायें। यह सदस्य हर महीने बदले जायें ताकि संकट प्रबधकों का बड़ा जत्था विकसित हो सके तथा कोई भी स्वंयसेवी अधिक भारयुक्त न हो।

- संकट मोबाईल कभी बन्द न हों। संकट प्रतिक्रिया के लिए स्वंयसेवी 24 घण्टे उपलब्धता का उत्तरादायित्व लें। बहुत से संकट रात के समय होते हैं तथा संकट संघ तथा परियोजना कर्मी प्रतिक्रिया के लिए असंगत घण्टों में तैयार हों।
- सभी संकट मोबाइल नम्बर व्यवहारिक, स्थानीय भाषा तथा साथ ही अंग्रजी में छपे जेबयुक्त संकट पत्र, समुदाये के अधिक से अधिक क्षेत्र में वितरित किये जायें। कार्ड में मोबाईल नम्बरों तथा हर तरह के संकट प्रबंधन जोकि एन०जी०ओ०/सी०बी०ओ० समुदाय को देता हो, को सूचीबद्ध हों।

संकट हस्तक्षेप सामग्री के उदाहरण:

एम०एस०एम० तथा टी०जी० को लक्षित करते हुए संकट हस्तक्षेप कार्यक्रम हेतू नीच एक जानकारी पत्र दिया गया है। यह दूसरे एच०आर०जी० तथा एफ०एस० डब्लयू० तथा आई०डी०यू० के लिए भी अपनाया जा सकता है।

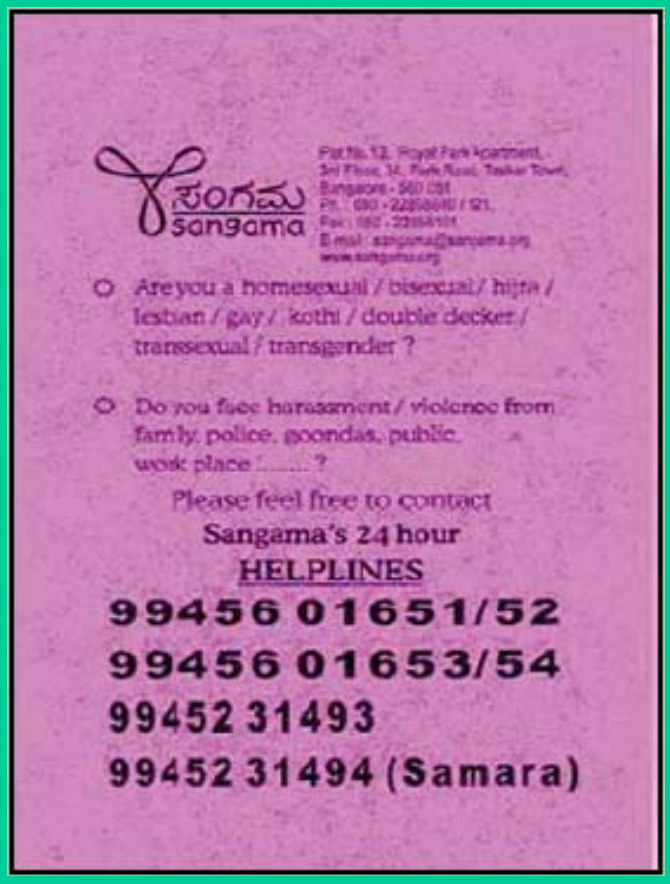

(संसाधन: सानगामा, बंगलौर)

सत्र का सारांश:

- संकट प्रतिक्रिया हस्तक्षेप एच०आर०जी० के सदस्यों के लिए आउटरीच में इजाफा करता है, जिससे कि उनके साथ एन०जी०ओ० अथवा सी०बी०ओ० से सम्बन्ध और मजबूत होते हैं तथा वे उनका विश्वास हासिल करते हैं।
- संकट प्रतिक्रिया प्रणाली को विकसित करने के कई ढंग हो सकते हैं तथा यह संसाधनों की उपलब्धता तथा समुदायिक सदस्यों की आवश्यकताओं पर निर्भर करता है।
- परियोजना स्तर पर पी०ई० को संकट प्रबंधन प्रणाली की रचना के बारे में समुदायिक सदस्यों से चर्चा करनी चाहिए तथा उचित प्रणालीगत ढंग से आगे आना चाहिए।

सत्र 3 : एच०आई०वी० से आगे (सामान्य स्वास्थय, स्वंय सहायता समूह तथा सामाजिक पात्रता)

सत्र 3 — एच०आई०वी० से आगे (सामान्य स्वास्थय, स्वंय सहायता समूह तथा सामाजिक पात्रता)

उद्देश्य: प्रतिभागियों को समुदायिक सदस्यों की एच०आई०वी० से आगे सहायता के लिए उनकी भूमिका को समझने के लिए सहायता करना।

अपेक्षित परिणाम: प्रतिभागी समुदायिक सदस्यों पहचान तथा दूसरी स्वास्थय, सामाजिक तथा आर्थिक आवश्यकताओं के लिए सहायता कर सकेंगे।
प्रतिभागी समुदायिक सदस्यों से परस्पर सम्पर्क में सामान्य स्वास्थय, स्वंय सहायता समूह (एस०एच०जी०) की बनावट तथा सामूहिकीकरण जैसे मुद्दे शामिल करेंगे।

अवधि: 45 मिनट

कार्य प्रणाली: समूह कार्य, चर्चा, प्रस्तुतिकरण, व्याख्या

सामग्री/आवश्यक तैयारी: चित्रपट तथा चिन्हक पैन, सम्भाषण हेतू सचित्र सहायक (2 सचित्र किताबें)
सत्र के अन्तिम भाग के लिए एक संसाधन व्यक्ति बुलाया जा सकता है जो विभिन्न सामाजिक हकों तथा इन्हे कैसे प्राप्त किया जाये की जानकारी रखता हो। यह कोई एक सरकारी विभाग अथवा कोई एक एन०जी०ओ० मे से हो सकता है जिसे इस मुद्दे पर कार्य करने का अनुभव हो।

प्रक्रिया:

- जैसे कि कार्यशाला की समाप्ति का आखिरी मुख्य सत्र है, पी०ई० को पी०ई० की अब तक चर्चित भूमिका को दोहराने के लिए प्रोत्साहित करें।

- एच०आई०वी० से आगे के कार्यों के दो मुख्य घटकों से परिचय कराना जो कि पी०ई० के कार्यों का भाग होना चाहिए।
  - O सामान्य स्वास्थय पर बातचीत
  - O एस०एच०जी० तथा सामूहिकीकारण पर बातचीत
- प्रतिभागियों को सामान्य स्वास्थय तथा एस०एच०जी० पर बोलने वाले मुद्दों के सचित्र सहायकों का परिचय करायें।

बोलने वाले तथ्य

1) सामान्य स्वास्थय

ए० स्वास्थय तथा स्वच्छता:

i) अपना पीने वाला पानी किसी सुरक्षित संसाधन से भरें।

ii) यदि आपको पानी की सुरक्षा पर शक है तो पानी को उपयोग से पहले 20 मिनट तक उबालें।

iii) जहाँ तक सम्भव हो घर का पका भोजन ही लें। बाहर का भोजन हमेशा ही स्वच्छ अवस्था में नहीं बनाया जाता। अस्वच्छ भोजन हमें बीमार कर सकता है। आपको पेट का संक्रमण तथा उल्टी लग सकती है जो कि कई बार गम्भीर हो सकता है।

iv) मदिरा तथा तम्बाकू से दूर रहें। इनके इस्तेमाल से बीमारीयाँ हो सकती हैं जैसे कि कैंसर, इसोमनिया, पीलिया इत्यादि। इसके इलावा यदि हम नशे में हों तो हम अपने साथी को गर्भ निरोधक प्रयोग करने के लिए बाध्य करने में असमर्थ होंगे। यह हमारी जिन्दगी को खतरे में डाल सकता है।

बी० व्यक्तिगत सफाई:

एक व्यक्ति अपनी स्वच्छता निम्नलिखित तरीकों से रख सकता है:-

i) हर रोज़ नहा कर।

ii) हर रोज़ कपड़े बदल कर तथा अंतवस्त्र बदलकर। हर रोज़ ताज़ा धुले कपड़े उपयोग करके।

iii) भोजन से पहले तथा बाद हाथ धोकर।

iv) हर संभोग के बाद व्यक्तिगत अंगों को धोकर।

v) नाखुनों को काट तथा साफ रखकर।

vi) सैनीटरी पैड का ध्यान देना कि यह साफ हैं तथा उपयोग के बाद ठीक स्थान पर फैंके गये हैं।

vii) यदि कोई कपड़ा माहवारी के दौरान उपयोग हुआ है, तो इसे ठीक से धोकर धूप में सुखाना चाहिए। एक ही कपड़ा 3 महीने से अधिक नहीं उपयोग करना चाहिए।

सी० इर्द–गिर्द की सफाई:

i) घर के गैर उपयोगित तथा कूड़े को कूड़ेदान में डालकर अपने आस–पास की सफाई रखें।

ii) अपने क्षेत्र में गन्दे पानी के ढेर मत लगने दें। यह मच्छरों के उपज कारण बन सकता है तथा परिणामवश मलेरिया जैसी बीमारीयाँ उत्पन्न हो सकती हैं।

iii) खुले अथवा सार्वजनिक स्थानों पर मत थूकें। थूकदान का उपयोग करें।

iv) उपयोग किये हुए गर्भ निरोधक को हमेशा कागज़ में लपेट कर कूड़े में डालें।

1) **स्वंयसेवी समूह तथा सामूहिकीकरण**

a) स्वंयसेवी समूह समुदायिक सदस्यों का एक छोटा समूह होता है (जैसे कि 10 से 15 लोग), जो कि सामूहिक लाभ/कार्य के लिए अथवा सामूहिक समस्या को हल करने के लिए इक्कठे होते हैं।

b) एक समूह किसी भी कारणवश इक्कठा हो सकता है। उदाहरणतया यह किसी अधिकार को सम्बन्धी संघर्ष के लिए इक्कठा हो सकता है, यह बचत अथवा उधार के लिए हो सकता है, किसी सामूहिक मुद्दे को उठाने सम्बन्धी हो सकता है।

c) अभिप्राय कुछ भी हो, महत्त्वपूर्ण बात यह है कि समुदायिक सदस्य इक्कठे होकर एक साथ कार्य करने के लिए, एक दूसरे की सहायता करने तथा एक दूसरे की सहायता करने के लिए समूह बनाते हैं।

d) अधिकांशकाय अकेला कार्यरत व्यक्ति समस्या हल नहीं कर सकता जबकि लोगो को कार्यरत समूह कर सकता है। समूह किसी भी अकेले व्यक्ति से अधिक मजबूत होता है।

e) साधारणतय: एक बार जब स्वंय सेवी समूह बन जाता है, तो सदस्य इक्कठे बैठ कर यह निर्णय लेते हैं कि उन्हे कैसे कार्य करना चाहिए। वे उनके अपने उप–नियम बनाते हैं तथा उन्हे अनुमोदित करते हैं। यदि उनका समूह बचत तथा उधार के लिए बनाया गया है, तो वे इस कार्य के लिए बैंक में खाते खोलते है तथा उन्हें चलाते हैं।

f) स्वंय सेवी समूह के सदस्य होने के विभिन्न लाभ हैं।

   i) स्वंय सेवी समूह के सदस्य होने के नाते, किसी को भी समूह की सामूहिक शक्ति को फायदा हो सकता है।

   ii) समूह में सदस्यों को एक दूसरे से जुड़ने से चुनौतियों को सामना करने के लिए अधिक उत्साह मिलता है।

   iii) कार्यक्रम साक्षरता के योगदान से सदस्यों को लाभ होता है जो कि समूह में भागीदारी के परिणामवश: आती है।

iv) यदि समूह बचत अथवा उधार के लिए हो, तो सदस्य पैसों की बचत तथा उधार लेने जैसी सुविधाओं का लाभ उठा सकते हैं।

v) यदि समूह अधिकारों के संघर्ष के लिए बनाया गया है, समूह के प्रयत्नों द्वारा लाये गये परिवर्तनों से सदस्य लाभ उठा सकते हैं। उदाहरणतय: यदि बहुत सारे गुण्डों का उत्पीड़न हो तो इस मुद्दे निवारण सम्बन्धी स्वंय सहायता समूह बनाया जा सकता है, समुदाये को गुण्डों के उत्पीड़न में कमी से फायदा हो सकता है।

g) जब आप स्वंय सहायता समूह के साथ कार्य करते हैं तो आप 10 से 15 स्त्रियों के साथ कार्य करते हैं। परन्तु यदि पाँच स्वंय सहायता समूह इक्कठे आकर कार्य करें, तो आपके पास इक्कठे कार्य करने के लिए स्त्रियां का इससे भी बड़ा समूह होगा। ऐसा समूह संगठन अथवा सामूहिकीकरण कहलाता है।

h) यह बड़ा समूह छोटे स्वंय सहायता समूह से शक्तिशाली होगा क्योंकि इसके साथ अधिक लोग कार्यरत होंगे। यह समूह समुदाये के अधिकारों के लिए छोटे समूह की अपेक्षा अधिक अच्छे ढ़ंग से संघर्ष कर सकता है।

i) लोगों को बड़ा समूह जब किसी समस्या के हल के लिए इक्कठे कार्य करता है, तो अधिकांशतय: यह समस्या हल हो जाती है। जब बड़ा समूह कुछ कहता है, तो लोग सुनते हैं क्योंकि वे स्त्रियों की बड़ी संख्या से जुडे होते हैं तथा वे मजबूत होते हैं। आंकड़ो में महान शक्ति है।

सामाजिक पात्रतायें पाना:

उपरोक्त के इलावा, पी०ई० टी०आई० के साथ समुदायिक सदस्यो दूसरे की आवश्यकताओं में सहायता कर सकते हैं जैसे कि:-

- राशन कार्ड बनवाने।
- एच०आर०जी० के बच्चों को स्कूल में दाखिल करने
- बैंक खाते खोलने
- राज्य अथवा केन्द्रीय सरकार से ओर कोई भी प्रयोज्य लाभ पाने

- प्रतिभागयों को 3-4 छोटें समूहों में बांटें तथा हरेक प्रतिभागी को चित्रित सहायक प्रदान करें (प्रशिक्षण पुलिन्दे के साथ उपलब्ध)
- हर समूह इक्कठा होकर बोलने वाले तथ्यों को याद करेगा तथा इसका समूह में अभ्यास करेगा।
- समूह कार्य के बाद, प्रतिभागियों को क्रम रहित आगे आकर अभिनय करनें को कहें कि वे कैसे समुदायिक सदस्यों से किसी विशेष मुद्दे पर बात करेंगे (प्रतिभागी को सचित्र सहायक के अध्ययन का उपयोग करने के लिए कहें)।

- अन्त में संसाधन व्यक्ति का परिचय दें तथा प्रतिभागियों को बतायें कि अब वे सामाजिक पात्रता सम्बन्धी विचार–विमर्श करेंगे।
- सुनिश्चित करें कि संसाधन व्यक्ति निम्नलिखित को शामिल करता है:–
  - एच०आर०जी० द्वारा पायी जा सकने वाली विभिन्न सामाजिक पात्रतायें।
  - पी०ई० द्वारा एन०जी०ओ० से आवश्यक सहायता तथा इन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सहायता स्वरूप जैसे डी०ए०पी०सी०यू० तथा एस०ए०सी०एस० आदि।
- निम्नलिखित तथ्यों को को बताते हुए सत्र तथा प्रशिक्षण कार्यक्रम को समेटें।
  - पी०ई० टी०आई० परियोजना की रीढ़ की हड्डी होता है।
  - उसके पास निभाने के लिए कई भूमिकायें हैं जैसी कि पिछले 4 दिनों चर्चा की गई है।
  - पी०ई० को समुदायिक सदस्य होने के नाते यह महत्वपूर्ण है कि वह समुदायिक सदस्यों तथा परियोजना में कड़ी का कार्य करे।
  - एस०टी०आई० और एच०आई०वी०/एडस् तथा गर्भ निरोधक पर महत्वपूर्ण जानकारी के इलावा पी०ई० को दूसरे मुद्दों जैसे कि सामान्य स्वास्थय तथा स्वच्छता, उपलब्ध सरकारी सेवायें इत्यादि पर भी जानकारी प्रदान करनी चाहिए।
  - एक पी०ई० को सुनिश्चित करना चाहिए कि वह अपने कार्य का दस्तावेज़ीकरण कर रहा है जिसका कि दोहरा अभिप्राय है।
    - यह उसके द्वारा किये गये कार्य पर निगरानी तथा तद्नुसार योजनाबद्धता में मदद करता है।
    - यह अधिकतम समुदायिक सदस्यों तक पहुँचने में परियोजना सम्बन्धी योजना तथा कार्यनीति बनाने में सहायता करता है।
  - एक पी०ई० को केवल प्रमुख मुद्दों पर ही जानकारी प्रदान नहीं करानी चाहिये (सचित्र किताबों के उपयोग से जो कि उसने इस प्रशिक्षण के दौरान सीखी हैं) बलकि आई०पी०सी० उपकरणों पर विचार विमर्श तथा भागीदारी प्रोत्साहित करनी चाहिए।

दिन 4 का आंकलन

तिथि: प्रतिभागी का नाम (विकल्प):

सत्र	विवरण	प्रतिपुष्टि			टिप्पणी
		☺अच्छी	😐ठीक	☹घटिया	
आज के सत्र को कुल मिलाकर प्रतिक्रिया					
1	निगरानी तथा दस्तावेज़ीकरण (अवसर अन्तर विश्लेषण, प्राथमिकता श्रेणीक्रम, सहकर्मी मानचित्रण, पी०ई० की सप्ताहिक				

	योजना तथा गतिविधि पत्र)				
2	संकट प्रबंधन				
3	एच०आई०वी० से आगे जाना (सामान्य स्वास्थय, स्वंय सेवी समूह तथा सामाजिक पात्रतायें)				

और कोई टिप्पणीयाँ

.....

.....

*कृप्या अवधि, विष्य वस्तु, कार्यप्रणाली तथा सचित्र सहायकों पर टिप्पणी करें।

सत्र 4 : प्रशिक्षण आंकलन

सत्र 4 प्रशिक्षण आंकलन

उद्देश्य: प्रतिभागियों का प्रशिक्षण कार्यशाला के प्रति उत्तर

अपेक्षित परिणाम: प्रतिभागी कार्यशाला के प्रति अपना मत सांझा करेंगे तथा प्रशिक्षक को प्रतिपुष्टि देंगे।

अवधि: 30 मिनट

कार्य प्रणाली: अभ्यास

सामग्री/आवश्यक तैयारी: हर प्रतिभागी के लिए 18 टोकनों का सेट (6 लाल, 6 हरे, 6 पीले), प्रश्नों की सूची, 6 डिब्बे
यदि टोकन उपलब्ध न हों तो सुकारक स्थानीय तौर पर उपलब्ध सामग्री जैसे कि चने दाने, मटर अथवा पत्थर का उपयोग कर सकता है।

प्रक्रिया:

- प्रतिभागियों से कहें कि वे अपनी निष्पक्ष प्रतिपुष्टि दें कि वे प्रशिक्षण कार्यशाला के बारे में क्या महसूस करते हैं।
- 18 टोकनों कर सेट हर प्रतिभागी को दीजिए। हर प्रतिभागी को 6 लाल, 6 हरे, 6 पीले टोकन मिलेंगे। इस दरमियान सुकारक 6 डिब्बे तैयार रखेगा (इन टिब्बों में छेद हो ताकि टोकन इसमें डाले जा सकें)
- तब सुकारक प्रतिभागियों को बतायेगा कि वह एक प्रश्न पडेगा। प्रतिभागी को यह फैसला करना होगा कि उस प्रश्न के लिए कौनसा टोकन उचित है तथा उस प्रश्न के लिए वह टोकन डिब्बे में डाले। जैसे यदि उत्तर यह है कि:-
  - 'बहुत अच्छा' अथवा 'बहुत उपयोगी' तब हरा टोकन अन्दर डाला जाये।
  - 'ठीक है' तब पीला टोकन अन्दर डाला जाये।
  - 'इतना अच्छा नहीं' अथवा 'इतना उपयोगी नहीं' तब लाल टोकन अन्दर डाला जाये।

- हर प्रश्न के लिए सुकारक एक अलग डिब्बे का उपयोग करेगा।

प्रतिपुष्टि के लिए प्रश्नः

1) क्या प्रशिक्षण कार्यशाला में की गईं विषय-वस्तू प्रतिभागियों के लिए उनके द्वारा किये जा रहे कार्य में उपयोगी होंगी?
2) प्रशिक्षण कार्यशाला में उपयोग की गई कार्यप्रणालीयाँ कैसी थीं?
3) समय प्रबंधन कैसा था?
4) आवास प्रबन्ध कैसा था?
5) भोजन प्रबन्ध कैसा था?
6) समस्त प्रशिक्षण को वे क्या दर्जा देंगे?

- प्रतिभागियों से बाकि के टोकन इक्कठे करें तथा बाद में प्रतिभागियों के जवाबों का विश्लेषण करें।
- यह प्रतिभागियों को ऐसे प्रशिक्षण की वृद्धि के लिए यहाँ-वहाँ के सुझावों से एक चर्चा उत्पन्न करने तथा उन क्षत्रों के लिए जिनके लिए उन्हें पुनचर्या प्रशिक्षण की आवश्यकता हैं के लिए भी उपयोगी होगा।
- सुकारक अब सभी प्रतिभागियों का धन्यवाद करते हुए कार्यशाला को समाप्त करेगा।

भाग 2 :
आई०डी०यू० पी०ई० को प्रशिक्षित करने के लिए पुस्तिका

नोटः

- पी०ई० प्रशिक्षिण पुलिन्दे का भाग 2 खासतौर पर सुई से नशा करने वाले उपभोगियों के तरफ योजनाबद्ध किया गया है।
- हालांकि भाग 2 के कुछ सत्र भाग 1 जैसे हैं, कुछ नये सत्र जो आई०डी०यू० के लिए बिल्कुल अलग हैं, भी इसमें जोड़े गये हैं।
- जहाँ आवश्यकता है भाग 1 के सत्रों का संदर्भ प्रदान किया गया है। उन सत्रों के लिए, सुकारक को पुस्तिका के भाग 1 का संदर्भ लेना होगा।
- नये सत्रों में चर्चा के निर्देशन के लिए पावर-पुआईंट प्रस्तुतिकरण का उपयोग होगा इसलिए सुकारक के लिए यह अति आवश्यक है कि वह इन सत्रों के लिए लैपटॉप कम्पयूटर तथा प्रोजैक्टर जैसी सुविधाओं का इन्तजाम करे।

विष्य सूची

पृष्ठ संख्या

भूमिका

दिन 1:

सत्र 1: शुरूआत

1ए०: भूमिका 104

1बी०: कार्यसूची से अपेक्षायें तथा बांट

1सी०: आधारभूत नियम स्थापित करना

सत्र 2: सहकर्मी शिक्षक की भूमिका तथा गुण 105

सत्र 3: दवाओं की समझ

3ए०: दवाओं का मूल 109

3बी०: दवाओं सम्बन्धी क्षतियाँ 110

सत्र 4: क्षति कटौति 111

सत्र 5: विश्वास तथा गोपनीयता की महत्त्ता 113

दिन 2:

सत्र 1: यौन संचरित संक्रमण

सत्र 2: गर्भ निरोधक प्रचार

2ए०: पुरूष तथा स्त्री गर्भ निरोधक 123

2बी०: गर्भ निरोधक मांग तथा आपूर्ति 129

गर्भ निरोधक की पहुँच तथा उपलब्धता का मानचित्रण

गर्भ निरोधक अनुमान

गर्भ निरोधक अन्तर विश्लेषण

सत्र 3: सूई तथा सिरिंज विनिमय कार्यक्रम 130

सत्र 4: आउटरीच योजना 132

दिन 3:

सत्र 1: निगरानी तथा दस्तावेज़ीकरण 136

उपकरण 1: अवसर अन्तर विश्लेषण

उपकरण 2: प्राथमिकता श्रेणीक्रम

उपकरण 3: सहकर्मी मानचित्र

उपकरण 4: पी०ई० साप्ताहिक योजना तथा गतिविधि पत्र

सत्र 2: फोड़ा रोकथाम तथा प्रबंधन 137
सत्र 3: जाँच केन्द्र (डी०आई०सी०) 138
सत्र 4: प्रशिक्षण आंकलन 142

अनुलग: जीवनदायक 144

दिन 1

दिन 1

सत्र योजना

सत्र 1 : शुरूआत

1ए०: भूमिका	10.00सुबह – 10.10सुबह	10 मिनट
1बी०: कार्यसूची से अपेक्षायें तथा बांट	10.00सुबह – 10.20सुबह	10 मिनट
1सी०: आधारभूत नियम स्थापित करना	10.20सुबह – 10.30सुबह	10 मिनट
सत्र 2:सहकर्मी शिक्षक की भूमिका तथा गुण	10.30सुबह – 11.15सुबह	45 मिनट

- सहकर्मी शिक्षा का अवधारणा
- मामला अध्ययन तथा भूमिका अदा करना
- विचारावेश – भूमिका, जिम्मेवारीयाँ तथा पी०ई० के गुण

चाय/कॉफी अन्तराल	11.15सुबह – 11.30सुबह	15 मिनट

सत्र 3: दवाओं की समझ

3ए० दवाओं का मूल	11.30सुबह – 12.15सुबह	45 मिनट

- प्रस्तुतिकरण
- चर्चा

3बी० दवाओं सम्बन्धी जोखिम	12.15सुबह – 1.15सुबह	1 घण्टा

- विचारावेश: दवाओं सम्बन्धी क्षतियाँ
- प्रस्तुतिकरण – क्षति तथा क्षति कटौति का वर्गीकरण

भोजन अन्तराल	1.15सुबह – 2.00सुबह	45 मिनट
सत्र 4: क्षति कटौति	2.00सुबह – 3.00सुबह	1 घण्टा

- प्रस्तुतिकरण – कार्यनीतियाँ
- चर्चा – क्षति कटोति लक्ष्य
- संवादात्मक सत्र

सत्र 5: विश्वास तथा गोपनीयिता की महत्त्ता	3.00शाम – 3.30शाम	30 मिनट
दिन 1 का आंकलन	3.30शाम – 3.45शाम	15 मिनट

सत्र 1 : शुरूआत

ए0 भूमिका

बी0 विष्यसूची से अपेक्षायें तथा बांट

सी0 आधारभूत नियम स्थापित करना

संदर्भः भाग 1 (दिन 1 सत्र 1)

सत्र 2 : सहकर्मी शिक्षकों की भूमिका तथा गुण

सत्र 1 — सहकर्मी शिक्षकों की भूमिका तथा गुण

उद्देश्य: प्रतिभागियों को सहकर्मी शिक्षा का अर्थ समझने में सहायता
प्रतिभागियों को सहकर्मी शिक्षक का अर्थ समझने तथा मालूम करने में सहायता

अपेक्षित परिणाम: प्रतिभागी 'सहकर्मी', 'शिक्षक', 'समकर्मी शिक्षक' तथा 'सहकर्मी शिक्षा' जैसे शब्दों को समझेंगे। वे यह स्पष्टता पायेंगे कि उन्हे सहकर्मी शिक्षक होने के नाते क्या करना है ताकि वे उनकी भूमिका को बेहतर ढंग से निभा सकें।

अवधि: 45 मिनट

कार्य प्रणाली: चर्चा, व्याख्या, भूमिका अदा करना, सूचीकरण

सामग्री/आवश्यक: चित्र पट, चिन्हक पैन

प्रक्रिया:

- प्रतिभागीयों से पूछें 'सहकर्मी शिक्षक कौन है', चर्चा को प्रोत्साहित करें।
- प्रतिभागीयों से सहकर्मी, शिक्षक तथा सहकर्मी शिक्षक का अर्थ सांझा करें।

सहकर्मी:

- एक ही समूह से व्यक्ति, उदाहरणतय:
  - O स्कूल के स्वरूप में – विद्यार्थी सहकर्मी हो सकते हैं।
  - O उद्योग के स्वरूप में – कर्मी सहकर्मी हो सकते हैं।
  - O अस्पताल के स्वरूप में – डाक्टर सहकर्मी हो सकते हैं।
- इसी तरह यौन कर्मीयों के स्वरूप में – सभी यौन कर्मी (किसी भी श्रेणी से सम्बन्धित – गली पर आधारित, घर पर आधारित, लॉज पर आधारित अथवा वैशाल्य पर आधारित) सहकर्मी हैं तथा एम०एस०एम० के स्वरूप में – सभी पुरूष जो पुरूष से यौनकार्य करते हैं,

सहकर्मी हैं तथा आई०डी०यू० स्वरूप में – सभी पुरूष तथा स्त्रियां जो सूई से नशा करते हैं, सहकर्मी हैं।

- इसलिए, सहकर्मी वह व्यक्ति है जो एक समूह से सम्बन्धित है तथा इसलिए समूह के मुद्दों को बेहतर ढंग से समझता है।

शिक्षक:

- एक शिक्षक वो होता है जो शिक्षा/जानकारी प्रदान करता है अथवा परिवर्तन के लिए जागरूकता उत्पन्न करता है।
- शिक्षा के विधिवत होने की आवश्यकता नहीं है तथा एक से एक परस्पर मुलाकात शामिल कर सकते हैं।

सहकर्मी शिक्षक:

- पी०ई० वह व्यक्ति है जो उसी समूह से है तथा दूसरे सदस्यों के लिए शिक्षक की भूमिका अदा कर रहा है तथा अपने सहकर्मीयों के साथ प्रवृति को प्रभावित करने तथा स्वभाविक परिवर्तन के लिए कार्य कर रहा है।
- इसलिए, एक आई०डी०यू० सहकर्मी शिक्षक वह है जो आई०डी०यू० समूह से सम्बन्ध रखता है तथा अपने समूह के साथ कार्य करता है।
- टी०आई० परियोजना में एक पी०ई० समकर्मीयों में एस०टी०आई०, एच०आई०वी०/एडस् पर जानकारी तथा क्षति कटौति तथा गर्भ निरोधक के प्रचार प्रदान करने का जिम्मेवार होता है।
- एक पी०ई० गर्भ निरोधक, चिकनायुक्त, सूईयाँ तथा सिरिंजें बाँटने के लिए भी जिम्मेवार होता है।
- वह परियोजना की प्रगति की निगरानी के लिए बुनियादी आंकड़े प्रदान करता है।
- एक पी०ई० को उसके समुदाये से महामारी को खत्म करने के लिए टी०आई० परियोजना के प्रति उसके योगदान के लिए एन०जी०ओ०/सी०बी०ओ० के लागत निर्धारण दिशानिर्देशों के अनुसार मानदेय दिया जाता है।
- एक पी०ई० व्यक्तिगत अतिसंवेदनशीलता को समझने के लिए जिम्मेवार होता है तथा स्वस्थ और फलप्रद जीवन सुनिश्चित करने के लिए दूसरे सदस्यों के साथ अतिसंवेदनशीलता का पता लगाने का कार्य करता है।

'सहकर्मी शिक्षक के उपयोग के लिए प्रशिक्षण पुस्तिका', केयर इण्डिया से रूपान्तरित

- तीन स्वंयसेवीयों को बुलायें तथा उनके साथ निम्नलिखित मामलों को सांझा करें। उनसे मामला अध्ययन पर भूमिका का अभिनय करने के लिए कहें।

मामला अध्ययन:
एक सहकर्मी शिक्षक जो कि परियोजना से पिछले एक वर्ष से जुड़ा है तथा सम्बन्धित आउटरीच कर्मी समुदायिक सदस्य से मिलता है जो अभी अभी समकर्मी शिक्षक नियत हुआ है। नया सदस्य पुराने सहकर्मी शिक्षक द्वारा बतायी भूमिका जो कि उसे प्रदर्शित करनी है, जानना चाहता है।

- उन्हें तैयारी के लिए 5 मिनट दीजिए।
- भूमिका प्रदर्शन के समय, साथी सुकारक सहकर्मी शिक्षक की भूमिकाओं को सूचीबद्ध करेगा जैसा कि भूमिका प्रदर्शना में दिखाया गया है।
- भूमिका प्रदर्शन के पश्चात् सहकर्मी शिक्षकों की भूमिका तथा जिम्मेवारीयों को पढ़कर सुनायें जो कि साथी सुकारक ने सूचीबद्ध की हैं तथा प्रतिभागियों से कोई भी जो वे समझते हैं भूमिका प्रदर्शन में नहीं दर्शायी गयी है, को शामिल करें। यदि कोई भी महत्वपूर्ण तथ्य प्रतिभागियों द्वारा छूट गया हो, उसे चर्चा के लिए रखें तथा प्रतिभागियों की सहमति के बाद शामिल करें।
- सहकर्मी शिक्षक की भूमिका की सूची को अन्तिम रूप दें तथा इसे बोर्ड पर दर्शायें। नीचे दी गयी सूची का संदर्भ लें।

सहकर्मी शिक्षक की भूमिका:

- आउटरीच का आयोजन
  - O अपने नैटवर्क में नये समुदायिक सदस्यों की पहचान करना तथा साथ ही उनसे नियमित सम्पर्क स्थापित करना (हर आई०डी०यू० पी०ई० के लिए 40 समुदायिक सदस्य)
  - O उनसे किसी भी बताये मास में सप्ताहिक अथवा अर्ध-सप्ताहिक आधार पर सम्पर्क करना।
- अपने हर सम्पर्क को 15 दिन में कम से कम एक बार मिल सके तथा उन्हें बताये कि उनसे नियमित तौर पर मिलना क्यों महत्वपूर्ण है।
- जब कभी भी आवश्यक हो समुदायिक सदस्यों को एस०टी०आई०, एच०आई०वी०, एन०एस०ई०पी०, ओ०एस०टी० गर्भ निरोधक के इस्तेमाल पर बातचीत आधार पर आई०पी०सी० प्रदान करे।

- हर व्यक्ति की अतिसवेंदनशीलता समझे तथा ओ०आर०डब्लयू० से उसे बताने के लिए योजना बनाये।
- सेवा प्रोत्साहन तथा सामग्री उद्ग्रहण –
  - O समुदायिक सदस्यों को डी०आई०सी० आने के लिए प्रोत्साहित करना तथा उन्हे बताना कि उन्हें डी०आई०सी० क्यों आना चाहिए।
  - O गर्भ निरोधक वितरण
  - O सूईयाँ तथा सिरिंज वितरण
  - O बीमार समुदायिक सदस्यों को संदर्भित करना।
- ओ०आर०डबल्यू० तथा समुदाय के साथ प्रभावशाली तत्वों की पहचान जिनका समुदायिक सदस्यों के जीवन पर साकारात्मक अथवा नाकारात्मक प्रभाव हो। जाने हुए प्रभावशाली तत्वों के साथ सलाह मशवरा।
- परियोजना के आन्तरिक तथा बाहरी नये पी०ई० का प्रशिक्षण।
- डी०आई०सी० का अनुरक्षण।
- कल्याणीकारी कार्यक्रमों के लिए मांग उत्पन्न करना तथा हिताधिकारियों की पहचान की सुविधा प्रदान करना।
- जानकारी एकत्रित करने तथा सेवा उत्तमता के लिए गर्भ निरोधक डिपो पर नियमित दौरा।
- उच्च जोखिम व्यवहार की समझ तथा पहुँच, गर्भ निरोधक उपयोग, गर्भ निरोधक मोल–तोल तथा एस०टी०आई० की पहचान इत्यादि के लिए समूहों की प्राथमिकता बनाने का कोशल।
- समीक्षा बैठकों में उपस्थिती।
- दैनिक सूचना तैयार कर ओ०आर०डब्लयू को प्रस्तुति।
- लागू की गई गतिविधियों के लिए प्रतिवेदन।
- सभी प्रशिक्षण, कार्यशालाओं तथा गोष्ठीयों में उपस्थिति।

- तब भूमिका प्रदर्शनों का संदर्भ लेते हुए सहकर्मी शिक्षक में क्या गुण होने चाहियें, पर एक चर्चा तैयार करना।
- यदि आवश्यक हो तो सूची में संकलन को सुझाव दें। संदर्भ के लिए निम्नलिखित गुणों का उपयोग करें।

सहकर्मी शिक्षक के गुणः

- समय के शर्तों अनुसार मिल सके।
- परियोजना के लक्ष्यों तथा उद्देश्यों के प्रति वचनबद्ध हो।
- समुदाये के मूल्यों में प्रति संवेदनशील हो।

- समुदाये के प्रति उत्तरदायी हो।
- दूसरों के ख्यालों तथा उदेश्यों के प्रति उदार तथा आदरभाव रखता हो।
- अच्छा सुनने वाला हो।
- उसके पास बातचीत तथा परस्परता का अच्छा कौशल हो।
- आत्मविश्वासी हो।
- नेतृत्व के गुण हों।
- क्षेत्र में सीखने तथा प्रयोग के लिए इच्छुक हो।
- संकट के समय समुदायिक सदस्यों की पहुँच के लिए वचनबद्ध हो।
- सहकर्मीयों का नया वर्ग तैयार करने तथा उन्हें जिम्मेवारीयाँ सौंपने/सपुर्द करने की क्षमता रखता हो।
- जिम्मेवारियाँ सांझा करे।
- समुदायिक सदस्यों को परियोजना के लिए लाभदायिक जिम्मेवारियों लेने के लिए प्रोत्साहित करे।

- सत्र का समापन:
  - लक्षित हस्तक्षेप में सहकर्मी शिक्षण अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।
  - समुदायिक सदस्य होते हुए वे अपने सहकर्मीयों से बातचीत करते हैं तथा इस तरह वे उनकी बुनियादी सचाईयों से गहरी समझ होने के कारण कार्यक्रम के लिए योगदान देते हैं।
  - वे परियोजना कर्मीयों तथा समुदाये के बीच दो-तरफा सम्पर्क का कार्य करते हैं।
  - वे जीवन तथा नौकरी कौशल विकसित करते हैं तथा इस तरह स्वाभिमान, आत्म-सम्मान तथा उत्साह पाते हैं। यह उनकी पुन: पहचान तथा स्वाभिमान, आत्म-सम्मान तथा सहकर्मी शिक्षकों के उत्साह का परिमाण बढ़ाने के बनाने के सामर्थ करता है जिससे कि समुदायिक शक्ति प्रक्रिया का विकास होता है।
  - सहकर्मी शिक्षक एक स्वास्थय शिक्षक के रूप में आरम्भ के साथ क्रमश: समुदायिक संघटक, नेता तथा इससे सामाजिक परिवर्तन का प्रतिनिधि बन सकता है।
  - पी०ई० की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका विश्वास बनाना तथा उच्च जोखिम समूह के सदस्यों के साथ विश्वसनीयता स्थापित करना है, जिनका वह प्रतिनिधित्व कर रहा है।
  - पी०ई० के पास कुछ मूलभूत गुण होने चाहिए जो कि उनकी उनके कार्य में सहायता करे। जिनके पास यह गुण नहीं हैं तथा वे सहकर्मी शिक्षक हैं, उनको इन गुणों को ग्रहण करने के लिए कड़े प्रयासों की आवश्यकता है क्योंकि वे उन्हें उनकी भूमिका को बेहतर ढंग से अदा करने में सहायता करेंगे।

सत्र 3 : दवाओं की समझ

ए० दवाओं को मूलभूत

बी० दवाओं से सम्बधित जोखिम

सत्र 3ए० दवाओं का मूलभूत

उद्देश्य: प्रतिभागियों को दवाओं के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण जानकारी देना।

अपेक्षित परिणाम: प्रतिभागीयों की दवाओं तथा इनके उपयोग के ज्ञान की वृद्धि होगी।

अवधि: 45 मिनट

कार्य प्रणाली: प्रस्तुतिकरण, विचारावेश तथा चर्चा

सामग्री/आवश्यक: पावर-पुआईंट प्रस्तुतिकरण, लेपटॉप तथा प्रोजैक्टर, चित्रपट, चिन्हक पैन

प्रक्रिया:

- प्रतिभागीयों से विभिन्न प्रकार की दवाओं जो भी उनके दिमाग में आयें के बारे में विचारावेश तथा उन्हें चित्रपट पर सूचीबद्ध करने के लिए कहें।
- पावर-पुआईंट प्रस्तुतिकरण को दवाओं की तीन प्रमुख श्रेणीयों की व्याख्या के लिए उपयोग करें जैसे कि उत्तेजक औषधि, शमक औषधि तथा दिमाग स्थिल करने वाली दवा।
- प्रतिभागीयों को प्रस्तुतिकरण के माध्यम से दवा उपयोग के चरणों तथा दवा के प्रभावों से गुजारें।
- प्रस्तुतिकरण के दौरान प्रतिभागीयों की इस विषय की शंकाओं को स्पष्ट करें।
- निम्नलिखित पर रोशनी डालते हुए सत्र का समापन करें।
  - O दवाओं की तीन प्रमुख श्रेणीयाँ होती हैं: उत्तेजक औषधि, शमक औषधि तथा दिमाग स्थिल करने वाली ओषधि।
  - O दवाओं को कानूनी तथा गैर-कानूनी वर्गीकरण किया जा सकता है (दवा पर निर्भर करता है)।

- दवा उपयोग के कई चलन हैं जैसे कि पीने, निगलने, चूसने, टीके से, साँस से अन्दर लेने, सूंघने तथा धूम्रपान।
- दवा उपयोग चरणबद्ध ढंग से प्रयोग उपयोग से कभी-कभी उपयोग से नियमित उपयोग से निर्भरता (आश्रित) उपयोग द्वारा जगह बनाता है। यह "नशा करने वाले सामान्य जीविका" भी कहलाता है।
- दवाओं के प्रभाव कई कारकों पर निर्भर करते हैं: दवा के अपने (जैसे कि दवा के प्रकृति, इसकी मात्रा, उपयोग की अवधि तथा व्यवस्था को ढंग), व्यक्ति जो दवा उपयोग कर रहा है (उदाहरणतय: उसका दिमागी तथा शारीरिक स्वास्थय) तथा वातावरण जिसमें कि यह उपयोग की गई।
- दवा उपयोग परिणामवश: कई समस्याओं में बदल सकता है, जिसमें कि स्वास्थय, समाज, वित्तीय, परिवारिक तथा कानूनी (दूसरों में से) शामिल हैं।
- दवा की मदहोशी जोखिम यौन व्यवहार में बदल सकती है, जिससे कि एच०आई०वी० संक्रमण की सम्भावना बढ़ जाती है।

सत्र 3बी० दवाओं से सम्बधित क्षतियाँ

उद्देश्य: प्रतिभागियों को दवाओं के उपयोग से सम्बधित क्षतियों की समीक्षा प्रदान करना।

अपेक्षित परिणाम: प्रतिभागीयों के दवाओं से सम्बधित क्षतियों, क्षतियों को पारस्परिक प्रभाव, क्षतियों के अनुक्रम की अवधारणा तथा क्षति कटौति की प्राथमिकता के बारे में ज्ञान में वृद्धि होगी

अवधि: 1 घण्टा

कार्य प्रणाली: प्रस्तुतिकरण, विचारावेश

आवश्यक सामग्री की तैयारी : पावर-पुआईंट प्रस्तुतिकरण, लेपटॉप तथा प्रोजैक्टर, चित्रपट, चिन्हक पैन

प्रक्रिया:

- दवाओं से सम्बधित क्षतियों पर विचारावेश तथा नशा करने वाले के जीवन में यह क्षतियाँ दूसरी क्षतियों से कैसे परस्परता करती है। जैसे कि प्रतिभागी विचारावेश करते हैं, इन क्षतियों को चार्ट पेपर की छोटी छोटी पर्चीयों पर लिखें तथा इन्हें बोर्ड पर लगायें।
- समूह को सामूहिक रूप में इन क्षतियों को लघुत्तम गम्भीर से अधिकत्तम गम्भीर क्रम में श्रेणीबद्ध करने के लिए प्रोत्साहित करें। चार्ट पेपर की विभिन्न पर्चीयों को बोर्ड तदनुसार व्यवस्थित करें।
- 'क्षतियों के अनुक्रम' तथा क्षतियों पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए क्षति कटोति कार्यक्रम की आवश्यकता जो कि सार्वजनिक स्वास्थय प्राथमिकता है के वर्णन हेतू पावर-पुआईंट प्रस्तुतिकरण का उपयोग करें।
- निम्नलिखित अनुसार संक्षिप्त करें।
  - O दवा उपयोग से सम्बधित क्षतियाँ, मौटे तौर पर शारीरिक, व्यवसायिक, वित्तीय, परिवारिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक तथा कानूनी क्षतियाँ शामिल करें।
  - O नशा उपभोगी के जीवन के विभिन्न पहलूओं में हुई क्षतियाँ निकटत्तम परस्परता रखती हैं।
  - O दवा सम्बन्धी क्षतियों के आपसी सम्बन्ध अनैतिक गुटता गठित करते हैं।
  - O दूसरे मादक पदार्थों के समकालीन उपयोग से क्षतियाँ बढ़ अथवा भड़क सकती हैं।

- ‘क्षतियों का अनुक्रम’ क्षतियों की अलग-अलग गम्भीरता की विशिष्टता को दर्शाता है।
- हालांकि क्षतियाँ उनकी गम्भीरता में अलग-अलग हों, क्षति कटोति कार्यक्रम क्षतियों पर अवश्य केन्द्रित होना चाहिये जो कि सार्वजनिक स्वास्थय प्राथमिकता गठित करेंगी।

सत्र 4 : क्षति कटौति

सत्र 4	क्षति कटौति
उद्देश्य:	प्रतिभागियों को क्षति कटौति के प्रमुख अवधारणाओं, क्षति कटौति पुलिन्दे के कारकों तथा एच०आई०वी० रोकथाम के लिए क्षति कटौति की भूमिका से अवगत कराना।
अपेक्षित परिणाम:	प्रतिभागीयों को इसकी स्पष्ट समझ होगी कि क्षति कटौति क्या है तथा क्षति कटौति के लाभ तथा साथ ही दूसरी कार्यनीतियाँ
अवधि:	1 घण्टा
कार्य प्रणाली:	प्रस्तुतिकरण, विचारावेश तथा चर्चा
सामग्री/आवश्यक:	पावर-पुआईंट प्रस्तुतिकरण, लेपटॉप तथा प्रोजैक्टर, चित्रपट, चिन्हक पैन। सुकारक को एन०ए०सी०पी० III के अन्तर्गत क्षति कटौति रूपरेखा से अवश्य परिचित होना चाहिए (एन०ए०सी०पी० की टी०आई० दिशानिदेर्शों का संदर्भ लें)

प्रक्रिया:

- प्रतिभागियों को नशे के दुरूपयोग प्रबन्धन कार्यनीति से रूबरू करवाने के लिए पावॅर-पुआईंट प्रस्तुतिकरण को उपयोग करें।
- प्रतिभागियों को विभिन्न कार्यनीतियों के तर्क-वितर्क पर विचारावेश के लिए प्रोत्साहित करें।
- प्रस्तुतिकरण के उपयोग से क्षति कटौति रूपरेखा पर, इसकी प्रमुख धारणाओं, नियमों तथा कार्यनीतियों सहित प्रकाश डालें।
- प्रतिभागियों को दीर्घकालीन आदर्शवादी से ऊपर अल्पकालीन व्यवहारिक लक्ष्यों पर क्षति कटौति दृष्टिकोण की महत्वता पर चर्चा के प्रोत्साहित करें।
- निम्नलिखित तथ्यों को महत्व दें:

- क्षति कटौति एक ऐसी रूपरेखा है जिसमें आई०डी०यू० तथा उनके यौन सहकर्मीयों में प्रभावशाली एच०आई०वी० रोकथाम को चलाया जा सकता है।
- क्षति कटौति हस्तक्षेप का केन्द्र बिन्दु अवास्तविक लक्ष्य स्थापित करने के विपरीत समीपवर्ती तथा सहजता से रोके जा सकने वाली क्षतियों पर रहता है जैसे कि पूर्ण संयम।
- क्षति कटौति उच्च जोखिम व्यवहार से सम्बधित क्षतियों को कम करके एच०आई०वी० के संचरण की रोकथाम पर लक्षित है जैसे कि नशा करने के लिए सूईयों, सिरिंजों तथा दूसरे उपकरणों को सांझा करना तथा असुरक्षित यौन व्यवहार।
- क्षति कटौति के तीन चरण हैं: चरण 1 में सूई तथा सिरिंज विनिमय कार्यक्रम (एन०एस०ई०पी०) तथा आउटरीच शामिल हैं, चरण 2 का केन्द्र बिन्दु मौखिक स्थानापन्न उपचार (ओ०एस०टी०) है। चरण 1 और 2 मिलकर दूषित नशा करने वाले उपकरणों से सुरक्षित तरीकों का व्यवहारिक परिवर्तन लाते हैं तथा सूई से मौखिक स्थानापन्न करते हैं। चरण 3 संदर्भों तथा दूसरी सेवाओं और सामर्थ वातावरण से सम्पर्कों पर केन्द्रित है।
- सूई तथा सिरिंज विनिमय कार्यक्रम (एन०एस०ई०पी०) तथा मौखिक स्थानापन्न उपचार (ओ०एस०टी०) क्षति कटौति पुलिन्दे की विस्तृत श्रेणी के अनिवार्य भाग हैं। जबकि एन०एस०ई०पी० II चरण 1 तथा 3 पर, एन०एस०ई०पी० II भी चरण 2 – मौखिक स्थानापन्न उपचार (ओ०एस०टी०) पर केन्द्रित है।
- कार्यनीतियों तथा हस्तक्षेपों का विशिष्टता क्षति कटौति दृष्टिकोण के महत्वपूर्ण पहलू हैं।
- क्षति कटौति दवा सम्बन्धी तुरन्त क्षतियों को कम के लिए व्यवहारिक तथा लचीला दृष्टिकोण प्रदान करती है।

सत्र 5 : विश्वास तथा गोपनीयता की महत्वता

सत्र 5 विश्वास तथा गोपनीयता की महत्वता

उद्देश्य: आई०डी०यू० परियोजना का नेतृत्व करते समय प्रतिभागियों को गोपनीयता के मुद्दों की महत्वता समझने में सहायता करना तथा आचारनीति और संवेदनशीलता जैसे पहलूओं पर चिंतन को प्रोत्साहन देना।

अपेक्षित परिणाम: –

अवधि: 30 मिनट

कार्य प्रणाली: प्रस्तुतिकरण, विचारावेश तथा चर्चा

सामग्री / आवश्यक:

प्रक्रिया:

चेतावनी: यह अभ्यास यदि सच्चाई से किया जाये तो किसी की गोपनीयता दूसरे के हाथ में डालता है। यदि दूसरा व्यक्ति जिसके पास यह गोपनीयता है, पर्याप्त संवेदनशील नहीं है तथा गोपनीयता को पढ़ता है तो यह समस्या उत्पन्न कर सकता है। इसलिए सुकारक होने के नाते, यह सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि किसी भी प्रकार से किसी भी प्रतिभागी द्वारा गोपनीयता का अतिक्रमण नहीं हुआ है।

- प्रतिभागियों से गोलाकार में बैठने की प्रार्थना करें तथा बतायें कि यह विश्वास के प्रति एक गम्भीर अभ्यास है।
- प्रतिभागियों से एक रहस्य के बारे में सोचने के लिए कहें जो कि वे नहीं चाहेंगे कि कोई और इसे जाने।
- उनसे इसे एक कागज़ के टुकड़े पर लिखने, मोड़ कर बंद करने तथा किसी को इसे न दिखाने के लिए प्रार्थना करें।

- अब प्रतिभागियों से इस कागज़ के टुकड़े को उनके बायीं और बैठे व्यक्ति को देने को कहें।
- उन्हें पूछें कि उनकी गोपनीयता दूसरे के हाथ में अधिकार में देकर उन्हें कैसा प्रतीत हो रहा है तथा किसी और की गोपनीयता अपने हाथ में लेकर कैसा प्रतीत होता है।
- अब प्रतिभागियों से इस गोपनीयता को उस व्यक्ति को वापिस देने के लिए कहें जिसने कि यह उन्हें दी थी तथा यह कागज़ टुकड़े तब खत्म कर दिये जायें।
- एक बार जब प्रतिभागी अपनी ज्ञान में संतुष्ट, आश्रवस्त हो जायें कि किसी को भी उनकी गोपनीयता सांझी नहीं करनी चाहिए, उन्हें निम्नलिखित तथ्यों पर आभास करायें:-
  - खेल हमें आई०डी०यू० परियोजना में हमारे कार्य में गोपनीयता के बारे में क्या बताता है?
  - कौन सी बातें जो लोग सांझा कर जाते हैं जो कि हमें अवश्य गोपनीय रखनी चाहियें?
  - गोपनीयता तोड़ने के कौन से सम्भव परिणाम हो सकते हैं?
  - दूसरे पहलू संवेदनशील जनंसख्या के साथ कार्य करते वक्त क्या महत्वता रखते है?

'उपकरण अब एक साथ है' - अन्तरराष्ट्रीय एच०आई०वी०/एडस् मेत्री-सीमान्त रोकथाम परियोजना से रूपान्तरित

दिन 1 का आंकलन

तिथि प्रतिभागी का नाम (विकल्पित)

सत्र	विवरण	प्रतिपुष्टि			टिप्पणी
		☺अच्छी	😐ठीक	☹घटिया	
आज के सत्र को कुल मिलाकर प्रतिक्रिया					
1ए०	भूमिका				
1बी०	सूची से अपेक्षायें तथा बांट				
1सी०	बुनियादी नियम स्थापित करना				
2	सहकर्मी शिक्षक की भूमिका तथा गुण				
3ए०	दवाओं के मूल-तत्व				
3बी०	दवाओं से सम्बधित हानियाँ				
4	हानि कटौति				
5	विश्वास तथा गोपनीयता की महत्वता				

कोई और टिप्पणीयाँ

.....

.....

*कृप्या अवधि, विष्य-वस्तु, कार्य-प्रणाली तथा सचित्र सहायकों पर टिप्पणी दें।

दिन 2

दिन 2

सत्र योजना

दिन 1 की पुनरावृत्ति	10.00सुबह – 10.15सुबह	15 मिनट
– अवधारणाओं का प्रस्तुतिकरण	10.15सुबह – 11.15सुबह	45 मिनट
– चर्चा – पी०ई० की भूमिका		
चाय/कॉफी अन्तराल	11.00सुबह – 11.15सुबह	15 मिनट

सत्र 2: गर्भ निरोधक प्रचार

- 2ए० गर्भ निरोधक
  - O पुरूष तथा स्त्री गर्भ निरोधक – प्रस्तुतिकरण 11.15सुबह – 11.45सुबह 30 मिनट
  - O गर्भ निरोधक – प्रर्दशन
- 2बी० गर्भ निरोधक माँग तथा आपूर्ति 11.45सुबह – 1.15सुबह 1.30 घण्टे
  - O प्रस्तुति तथा अभ्यास – गर्भ निरोधक पहुँच तथा उपलब्धता मानचित्रण
  - O प्रस्तुति तथा अभ्यास – गर्भ निरोधक अनुमान
  - O प्रस्तुति तथा अभ्यास – गर्भ निरोधक अन्तर विश्लेषण

भोजन अन्तराल	1.15सुबह – 2.00सुबह	45 मिनट
सत्र 3: सूई सिरिंज विनिमय कार्यक्रम	2.00सुबह – 3.00सुबह	1 घण्टा

- O प्रस्तुतिकरण – अवधारणा तथा परिचालन पहलू
- O अभ्यास – सूई सिरिंज प्रदर्शन

सत्र 4: आउटरीच योजना	3.00सुबह – 4.00सुबह	1 घण्टा

- O प्रस्तुतिकरण
- O समूह कार्य – आउटरीच योजना
- O समूह प्रस्तुतिकरण

दिन 2 का आंकलन	4.00शाम – 4.15शाम	15 मिनट

सत्र 1 : यौन संचरित संक्रमण (एस०टी०आई०)

सत्र 1	यौन संचरित संक्रमण
उद्देश्य:	प्रतिभागियों को एस०टी०आई० पर बुनियादी जानकारी देना एस०टी०आई० के सम्बन्ध में धारणायें तथा गल्तफहमियाँ पर काबू पाना
अपेक्षित परिणाम:	प्रतिभागी हर तहर की एस०टी०आई०, एस०टी०आई० के चिन्ह तथा लक्षण, एस०टी०आई० के संचरण तथा उपचार तथा एस०टी०आई० और एच०आई०वी० में सम्बन्ध पर जानकारी पायेंगे। प्रतिभागी सोचते हैं तथा समुदायिक सदस्यों में एस०टी०आई० के नियंत्रण के लिए अपनी भूमिका पर स्पष्टता पाते हैं।
अवधि:	45 मिनट
कार्य प्रणाली:	चर्चा, प्रस्तुतिकरण, व्याख्या
सामग्री/आवश्यक: तैयारी	चित्र कार्ड - एस०टी०आई० (आगे-पीछे छपाई), चित्र पट तथा चिन्हक पैन जैसे कि यह तकनीकी सत्र है, यदि आवश्यकता हो तो सुकारक संसाधन व्यक्ति के रूप में डाक्टर का प्रबन्ध कर सकता है

प्रक्रिया:

नोट: जितना सम्भव हो स्थानीय शब्दावली का उपयोग करें जो प्रतिभागियों को विषय वस्तू समझने अथवा सीखने में सहायता करेगी।

- प्रतिभागियों के साथ एस०टी०आई० से सम्बन्धित महत्वपूर्ण तथ्य सांझे करें जो सत्र में शामिल किये जायेंगे। हर विषय की विस्तार से चर्चा कीजिए।
- प्रतिभागियों को पूछें, यदि उनको कोई शंका हो। सभी शंकाओं को निपटाने का प्रयत्न करें।

एफ०एस०डब्लयू०/एम०एस०एम०/आई०डी०यू० में एस०टी०आई० को फैला अधिक होता है तथा यह यौन कार्य व्यवसाय की व्यवसायिक अड़चनो में से एक है। एफ०एस०डब्लयू०/एम०एस०एम०/आई०डी०यू० में एस०टी०आई० की उच्च दर के जिम्मेवार कारक एस०टी०आई० का निम्न स्तर का ज्ञान तथा जानकारी हैं। इस समस्या के इलावा, इन समुदायों में एस०टी०आई० के बारे में बहुत से अंध विश्वास तथा गल्त धारणायें हैं। इससे अधिक ज्यादात्तर एफ०एस०डब्लयू० अनपढ़ होने के कारण वैज्ञानिक तथा तकनीकी जानकारी समझ पाने के योग्य नहीं, इसलिए वे एस०टी०आई० के बारे में जानने के इच्छुक नहीं हैं। उपरोक्त मुद्दों पर गौर करते हुए, एफ०एस०डब्लयू०/एम०एस०एम०/आई०डी०यू० समुदाये में एस०टी०आई० तथा इसके लक्षणों पर सही जानकारी को प्रचार अत्यधिक आवश्यक है।

- **एस०टी०आई० का अर्थः** एस०टी०आई० का अर्थ है यौन संचरित संक्रमण। यह विशाणु, कीटाणु अथवा फफूँदीय सूक्ष्मजीवों के कारण होती हैं जो कि संक्रमित साथी से असुरक्षित संभोग करने से गुजरते हैं।

एस०टी०आई० के लक्षण (चित्र कार्ड उपयोग करें)

पुरूषों में एस०टी०आई०:

मूत्रमार्ग रिसाव

मूत्रमार्ग रिसाव

- मूत्राशय के समय दर्द अथवा जलन
- मूत्राशय की बारम्बारता
- मूत्राशय छिद्र में से क्रीम अथवा पीले रंग का रिसाव आना
- रिसाव बलगम की तरह गाढ़ा अथवा पतला हो सकता है।

दर्दनाक अण्डकोश सूजन

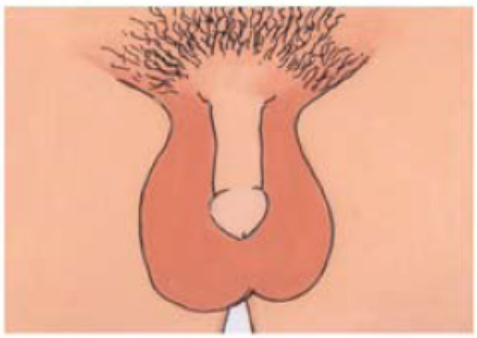

दर्दनाक अण्डकोश सूजन

- ऊसंधि क्षेत्र में सूजन तथा दर्द
- मूत्राशय के समय दर्द अथवा जलन
- प्रणालीगत लक्षण जैसे कि अस्वस्थता, बुखार
- मूत्राशय रिसाव की पाया जाना

वंक्षण गिल्टी

वंक्षण गिल्टी

- वंक्षण क्षेत्र में सूजन जो कि दर्दनाक हो सकती है
- पूर्ववर्ती जननांग फोड़ा अथवा रिसाव
- प्रणालीगत लक्षण जैसे कि अस्वस्थता, बुखार

जननांग फोड़ा गैर – ददहा

जननांग फोड़ा गैर – ददहा

- जननांग फोड़ा, एकल अथवा एकाधिक, दर्दनाक अथवा दर्दरहित
- जननांग क्षेत्र में जलन सनसनी
- बढ़े हुए लिंफ नोडस्

जननांग फोड़ा ददहा

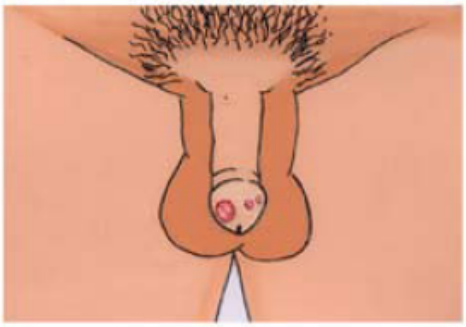

जननांग फोड़ा ददहा

- फुँसीयों का फटना, दर्दनाक, एकाधिक जननांग फोड़े
- जननांग क्षेत्र में जलन सनसनी
- पुनरावृत्ति

स्त्रियों में एस०टी०आई०:

योनि रिसाव

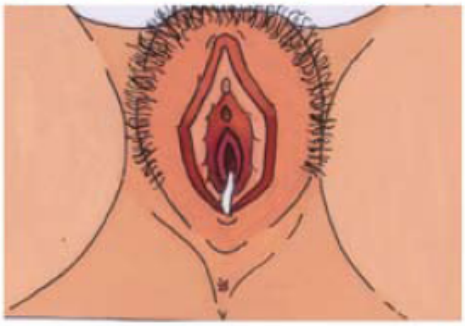

योनि रिसाव

- योनि रिसाव (पनीर, सफेद)
- रिसाव की प्रकृति तथा प्रकार - मात्रा, रंग तथा बास
- जननांग के इर्द-गिर्द खुजली

ग्रीवा रिसाव

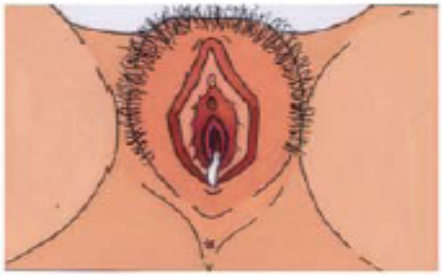

ग्रीवा रिसाव

- बदबूदार पीला रिसाव
- रिसाव की प्रकृति तथा प्रकार - मात्रा, रंग तथा बास
- मूत्राशय के समय जलन - बार बार आना

पेट के निचले हिस्से में दर्द

पेट के निचले हिस्से में दर्द

- पेट के निचले हिस्से में दर्द
- बुखार
- योनि रिसाव
- माहवारी में अनियमितता जैसे भारी, अनियमित योनि रक्तश्राव
- रक्तश्राव के समय दर्द
- पीठ के निचले हिस्से में दर्द
- ग्रीवा की गतिविधि में कोमलता

मौखिक तथा गुदा एस०टी०आई०

एस०टी०आई०

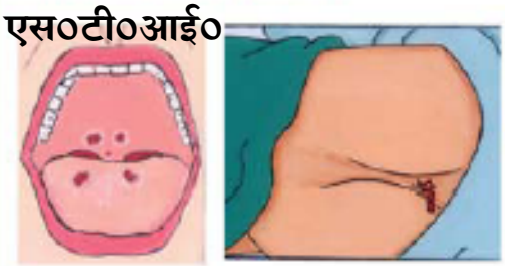

मौखिक तथा गुदा

- गिल्टी, घाव, छाले, रिसाव, मुँह तथा/अथवा गुदे में विकास

दूसरे एस०टी०आई०

- मस्से (एकल अथवा एकाधिक, कोमल दर्दहीन विकास, जो कि गोभी के फूल की तरह हो)
- जननांग का बुरा फैलाव (खुजली तथा खराश जोकि सारे शरीर में जननांग क्षेत्र में ही हो)
- मोलसकम कानटाजिओसॅम (एकाधिक, कोमल, दर्दहीन चिकनाहटयुक्त, मोती जैसी सूजन)
- जननांग खुजली (जननांग में खुजली, खास कर रात के समय)

संचरण तथा रोकथाम:

अधिकतर समय में एस०टी०आई० का संभोग के दौरान सचरण होता है। सिफालिस, हिपाटाईटिस बी, एच०आई०वी० इत्यादि जैसे बीमारियों का संचरण संक्रमित रक्त-आधान से हो सकता है अथवा संक्रमित सूईयाँ/सिरिंजों के उपयोग से। हालांकि, इनतें से अधिकत्तर को उपयुक्त साधनों द्वारा रोका जा सकता है। इन बीमारियों के लिए खून की जाँच एक महत्वपूर्ण कदम है।

इलाज

एस०टी०आई० का जितना जल्दी हो सके उपचार हो जाना चाहिए। अधिकत्तर एस०टी०आई० उपचारिक होती हैं (एच०आई०वी० तथा हिपाटाईटिस के इलावा)। जैसे ही कोई लक्षण दिखाई दें, एक निपुण डाक्टर के पास जाना महत्वपूर्ण है। परन्तु डाक्टर के पास परीक्षण के लिए हर महीने नियमित जाना सुरक्षित है (खासकर एफ०एस०डब्लयू० तथा एम०एस०एम० के मामले में)। जब डाक्टर आपको एस०टी०आई० की दवाई देता है, तो दवाई का पूरा क्रमानुसार लेना महत्वपूर्ण है। यदि यौन सम्बन्ध टालना सम्भव नहीं तो गर्भ निरोधक का इस्तेमाल सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

गैर-इलाज एस०टी०आई०:

- यह गंभीर बीमारी का कारण बन सकती हैं।
- ये एच०आई०वी० के सम्पर्क के अवसर बढ़ा सकती हैं (नासूर एस०टी०आई०)।
- उपचार से वंचित साईफिलिस दिमागी निष्क्रियता का नेतृत्व कर सकती है।
- यदि माँ गर्भवती हो तो कुछ एस०टी०आई० दूसरी पीढ़ी तक पहुँच जाती हैं (साईफिलिस, गनोहिरया)

- लम्बे समय की गनोहिरया मूत्र मार्ग को संकुचित कर सकती है यहाँ तक की इसे रोक सकती है।
- चिरकालिक सरवीसाईटिस निष्फलता का कारण बन सकती है।

लक्षणात्मक तथा गैर लक्षणात्मक एस०टी०आई०:

कुछ एस०टी०आई० बाहरी चिन्ह तथा लक्षण नहीं दिखाती, परन्तु चिन्ह अन्दर हो सकते हैं तथा इस लिए डाक्टर द्वारा अन्दरूनी जाँच आवश्यक है। कई बार साईफिलिस के लक्षण भी मिट जाते हैं तथा रक्त-जाँच ही इसकी उपस्थिती का पता कर सकती है।

स्त्रियों को पुरूषों की अपेक्षा संक्रमण का अधिक खतरा होता है:

– शारीरिक कारक:

- स्त्रियों में प्रजनन क्षेत्र में व्यापक चिकना क्षेत्र तथा वीर्य को योनि में लम्बी अवधि तक रहना।
- स्त्रियों के प्रजनन अंगों की गुप्त प्रवति के कारण लक्षण काफी देरी से प्रकट होते हैं।

– सामाजिक कारक:

- परिवार स्वास्थ्य मुद्दों तथा जननी स्वास्थ्य को अनदेखा अथवा असावधानी कर देता है, खास कर जब वे निम्न आर्थिक सामाजिक स्तर से सम्बन्ध रखते हों। यहां तक कि स्त्रियाँ अपने द्वारा भी मुश्किल से अपने स्वास्थ्य पर ध्यान देती हैं।
- बीमारी के बारे में जानकारी की कमी।
- स्त्रियों का अपने जननी स्वास्थ्य पर कम नियंत्रण
- एस०टी०आई० की यौन व्यवहार से सलंग्नता होती है तथा इसी लिए स्त्री का अपनी बीमारी बताना सामाजिक तौर पर स्वीकारणीय नहीं होता।

साथी के उपचार की महत्वता

यदि किसी भी साथी को एस०टी०आई० है, तो दुबारा संक्रमण से बचने के लिए दोनो को डाक्टर के सुझाव से दवाई लेनी चाहिए। यह तब भी किया जाना चाहिए यदि साथी को एस०टी०आई० के लक्षण नहीं हों।

(सलाहकार के लिए एस०टी०आई०/आर०टी०आई० क्लीनिक की प्रशिक्षण पुस्तिका, एन०ए०सी०ओ० तथा पी०ई० की बुनियादी प्रतिशक्षण पुस्तिका, पाथफाईंडर अन्तराष्ट्रीय मुक्त परियोजना द्वारा रूपान्तरित)

- अब चर्चा को पी०ई० की एस०टी०आई० प्रबंधन में भूमिका की तरफ ले जायें।
- एस०टी०आई० का जल्द उपचार के महत्त्व को ध्यान में रखते हुए, पी०ई० से पूछें कि वे स्थिति को बदलने के लिए क्या कर सकते हैं।
- प्रतिभागियों से परामर्श के बाद कोई भी भूमिका शामिल करें, इस तरह एस०टी०आई० प्रबंधन में पी०ई० की भूमिका की विस्तृत सूची बनायें।

एस०टी०आई० प्रबंधन में पी०ई० की भूमिका:

- समुदाये के प्राथमिक संभरकों के साथ नैटवर्क की पहचान करना।
- यौन कर्ताओं/एम०एस०एम०/आई०डी०यू० तथा उनके ग्राहकों में एस०टी०आई० की जानकारी को फैलाना।
- उन्हें स्वास्थय जाँच के लिए चिकित्सालय जाने के लिए प्रेरित करना।
- उनके साथ चिकित्सालय जाना (यदि वे इच्छुक हों) ताकि वे उत्साह पा सकें।
- समुदायिक सदस्यों को साईफिलिस जाँच (साल में दो बार) के लिए प्रेरित करें।
- उनसे उपचार के लिए पूछें तथा उपचार के अनुपालन की सलाह दें।
- साथीयों को चिकित्सालय लाने के लिए प्रयत्न करें।
- नियमित गर्भ निरोधक उपयोग के लिए जानकारी तथा परामर्श दें।
- सेवाओं की उत्तमता की निगरानी - गोपनीयता की अनुरक्षण, पर्दा, ध्यान दें कि क्या परियोजना कर्मीयों द्वारा निष्पक्ष रवैया तथा दोस्ताना व्यवहार बढ़ाया गया।
- चिकित्सालय प्रबंधन संघ का सक्रिय सदस्य बनें।
- चिकित्सालय बैठकों में संक्रिय भाग लें तथा प्रतिपुष्टि दें जो कि चिकित्सालय संघ तथा आउटरीच संघ द्वारा भी, त्रिकोणीय आंकड़े एकत्रित करने सहायता करे।
- चिकित्सालय संघ/एस०टी०आई० देख-रेख प्रदानकर्ताओं तथा समुदायिक सदस्यों में कड़ी बनें।
- समुदायिक सदस्यों/घटनास्थल जहाँ पर एस०टी०आई० चिकित्सालय में निम्न हाजिरी हो, के लिए ओ०आर०डब्लयू० के साथ एक आउटरीच योजना विकसित करें।
- नये समुदायिक सदस्यों को सेवायें लेने के लिए प्रोत्साहित तथा शामिल करें।

('पी०ई० आधारभूत प्रशिक्षण पुस्तिका' पथफाईंडर अन्तरराष्ट्रीय मुक्ता परियोजना में से रूपान्तिरित)

सत्र 2 : गर्भ निरोधक प्रचार
ए० पुरूष तथा स्त्री गर्भ निरोधक
बी० गर्भ निरोधक की माँग तथा आपूर्ति

सत्र 2ए० पुरूष तथा स्त्री गर्भ निरोधक

उद्देश्य: प्रतिभागियों को गर्भ निरोधक के उपयोग तथा प्रर्दशन के अभ्यास चरण की पूरी जानकारी पाने में सहायता करना।

अपेक्षित परिणाम: प्रतिभागी पुरूष तथा स्त्री गर्भ निरोधक के प्रर्दशन के चरण जान पायेंगे। प्रतिभागियों को उस जानकारी की स्पष्टता होगी जिसके संचार की अपेक्षा क्षेत्र स्तर पर उनसे की जायेगी।

अवधि: 30 मिनट

कार्य प्रणाली: चर्चा, प्रदर्शन, प्रस्तुतिकरण, व्याख्या

सामग्री/आवश्यक: तैयारी चित्र पट, चिन्हक पैन, पुरूष तथा स्त्री गर्भ निरोधक, लिंग के नमूने, योनि के नमूने (यदि उपलब्ध हों)

प्रक्रिया:

- गर्भ निरोधकों पर बातचीत के साथ सत्र का आरम्भ करें। समूह तथा उसकी रूचि अनुसार पुरूष गर्भ निरोधक अथवा दोनों पुरूष तथा महिला गर्भ निरोधकों पर बातचीत को चुना जा सकता है।

पुरूष गर्भ निरोधक	स्त्री गर्भ निरोधक
रबड़-क्षीर के बने हुए।	रंगों के लिए प्रयुक्त होने वाले प्लासटिक से बने हुए।
तेल पर आधारित चिकने पदार्थों द्वारा उपयोगित नहीं।	दोनों ही पानी तथा तेल पर आधारित चिकने पदार्थों द्वारा उपयोगित नहीं।
सीधे लिंग पर लुढ़काना चाहिए।	उपयोग उत्थापन पर आधारित नहीं।

लिंग तथा महिला जननाँग का आंतरिक बचाव।	लिंग (आधार सहित), आंतरिक तथा कुछ बाहरी महिला जननाँग का बचाव
स्खलन के तुरन्त बांद हटाना चाहिए।	स्खलन के तुरन्त बांद हटाने की आवश्यकता नहीं।
रबड़ – क्षीर गर्म तथा उमस में सड़ सकता है	गर्म तथा उमस से पोलीयुरीथेन पर कोई फर्क नहीं

पुरूष गर्भ निरोधक सम्बन्धी ध्यान रखने योग्य बातें:

1) गर्भ निरोधक डालते समय यदि यह लगे कि इसकी दिशा उल्टी है, तो इसकी दिशा बदल कर इसे दुबारा उपयोग नहीं करना चाहिये।
2) मौखिक यौन में संक्रमण के मौके कम होते हैं। परन्तु गर्भ निरोधक का इस्तेमाल तब भी महत्वपूर्ण है।
3) गर्भ निरोधक का इस्तेमाल एक कला है तथा किसी को भी इसके इस्तेमाल से ही आनन्द विकसित करना चाहिए।
4) गर्भ निरोधक को ठंडे तथा सूखे स्थान पर धूप तथा पानी से दूर रखना चाहिए।
5) गर्भ निरोधक के साथ चिकने पदार्थों को उपयोग करने की आवश्यक नहीं होती क्योंकि यह पहले से ही चिकनाहटयुक्त होते हैं, परन्तु यदि आवश्यकता हो तो आप पानी आधारित चिकने पदार्थ उपयोग सकते हैं (ना कि तेल)।
6) गर्भ निरोधक विभिन्न प्रकार के होते हैं जैसे कि सुगन्धित (जैसे कि चॉकलेट/स्टराबरी इत्यादि) तथा बनावट (जैसे कि बिन्दीदार/धारीदार इत्यादि)।
7) सरकार तथा विभिन्न कम्पनीयाँ गर्भ निरोधक बनाती हैं। सरकारी गर्भ निरोधक वितरण के लिए मुफ्त उपलब्ध होते हैं। वह भी वही गुणवत्ता वाले होते हैं (गुणवत्ता समान ख्याति वाली प्रयोगशालाओं से जाँची गई होती है)।
8) कुछ गर्भ निरोधकों का सामाजिक तौर पर बाजारीकरण किया जाता है। यह बाजारी मूल्यों से सस्ते होते हैं।
9) अब बाजार में स्त्री गर्भ निरोधक भी उपलब्ध हैं परन्तु वे बहुत मँहगे हैं। कुछ परियोजनायें इन्हें सामाजिक बाजारीकरण द्वारा उपलब्ध कराती हैं।

महिला गर्भ निरोधकों की विशेषतायें।

- अतिरिक्त पसन्द, एस०टी०आई०/एच०आई०वी०/एडस् तथा अनचाहे गर्भ से अतिरिक्त सुरक्षा।
- महिला तथा पुरूष को माननीय।
- महिलाओं के लिए सुरक्षा तथा नियंत्रण अनुभाव
- पसन्द तथा सुरक्षा में बढ़त।

- लाभ:
  - उपयोगित जब पुरूष गर्भ निरोधक को इस्तेमाल मुश्किल हो।
  - एस०टी०आई० /एच०आई०वी० /एडस् तथा अनचाहे गर्भ के प्रति प्रभावकारी
  - अविरूद्ध यौन
  - लम्बे समय तक चलना
  - यौन के समय आनन्द को बढ़ाना
  - यदि आवश्यकता हो तो साथी को बताये बिना भी उपयोग
  - माहवारी के समय उपयोग
  - महिलाओं को उनके स्वास्थ्य अपने हाथों में लेने के लिए सामर्थता
  - जिन्हें रबड़ से एलर्जी हो वे इसका उपयोग कर सकते हैं।

- गर्भ निरोधकों पर यह परिपेक्ष्य देने के बाद प्रतिभागियों से गर्भ निरोधकों तथा इनके उपयोग सम्बन्धी बड़ी-बड़ी कल्पित तथा अंधविश्वासों को सूची बनायें।
- इसे सूचीबद्ध करके आपके द्वारा सुनी गये अंधविश्वासों को इनमें शामिल करें। निम्नलिखित संदर्भ सूची का उपयोग करें।

गर्भ निरोधकों पर सामान्य कल्पित बातें तथा अंधविश्वास

- यौन के समय गर्भ निरोधक का उपयोग चिढ़ पैदा करता है।
- संभोग के समय गर्भ निरोधक फट सकता है।
- गर्भ निरोधक यौन को आनन्द को कम करता है।
- गर्भ निरोधक चिपचिपा तथा चिकना होता है।
- गर्भ निरोधक को उपयोग करने से पहले उत्थापन चला जाता है।
- दोहरा गर्भ निरोधक अधिक सुरक्षा प्रदान करता है।
- गर्भ निरोधक का उपयोग उसके साथी के प्रति उसके प्यार के भावनात्मक अनुभव में कमी करता है।
- गर्भ निरोधक दो साथीयों में "अविश्वास" का अवरोध है।

- इन कल्पित बातों को यह अभिव्यक्त करते हुए स्पष्ट करें।
  - O गर्भ निरोधक कोमल तथा चिकना होता है तथा गर्भ निरोधक का सही उपयोग चिढ़चिढ़ापन नहीं करता।
  - O एक समय दो गर्भ निरोधक कभी भी नहीं डालने चाहिये क्योंकि दोनों के फटने की संभावना बड़ जाती है।
  - O गर्भ निरोधक किसी प्रकार की भावना के लिए अवरोध नहीं है।

O गर्भ निरोधक डालने की प्रक्रिया भी एक आनन्दित एहसास है।

O यदि ग्राहक गर्भ निरोधक इस्तेमाल करता है वह एस०टी०आई० अथवा एच०आई०वीं०/एडस् से संक्रमित होने सम्बन्धी बिना किसी तनाव के अथवा शंका के अधिक आन्नद महसूस करता है।

- इन कल्पित बातों को और कम करने के लिए गर्भ निरोधक वितरण करें तथा प्रतिभागियों को इनका उपयोग करने दें। उन्हें इसे फुलाने को कहें, हाथ पर रख कर इसमें कुछ पानी भरने के लिए कहें। यह सब करते समय, गर्भ निरोधक की लम्बाई तथा चौड़ाई के बारे में बतायें, यह कितना फैलाया जा सकता है, इसमें कितना पानी भरा जा सकता है इत्यादि।
- अब पुरूष गर्भ निरोधक के प्रदर्शन के लिए 2 पुरूष प्रतिभागियों को बुलायें। बाकी के प्रतिभागीयों के लिए प्रदर्शन को ध्यान से देखना जरूरी है।
- प्रदर्शन के बाद प्रतिभागियों से पूछें कि क्या ये ठीक से हुआ है। यदि हाँ तो स्वंयसेवीयों के प्रयत्नों की सराहना करें, यदि नहीं, तो दूसरे प्रतिभागियों से सुधार के लिए सुझाव देने को कहें।
- प्रतिभागियों को फिल्म "कमला दीदी का एक नया पी०ई० बनना" में गर्भ निरोधक के प्रदर्शन की याद दिलायें । उसमें छूट गये चरणों पर चर्चा करें।
- पुरूष गर्भ निरोधक प्रदर्शन के चरणों को विस्तार से विवेचना करें।

पुरूष गर्भ निरोधक प्रदर्शनः

चरण 1:– अन्तिम तिथि जांचइये (वे जो पढ़ तथा लिख सकते हैं आवरण पर अन्तिम तिथि देख सकते हैं)। वे जो पढ़ तथा लिख सकते हैं, देखें कि गर्भ निरोधक अन्दर की तरफ आसानी से जाता है, जब वेएक किनारे को पकड़ कर इसे बाहर खींचते हैं। यदि ऐसा नहीं हैं, तो ऐसा गर्भ निरोधक उपयोग नहीं करना चाहिए।

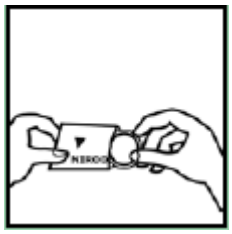

चरण 2:– आवरण को एक तरफ से ध्यान से काटिये, ताकि गर्भ निरोधक खराब न हो तथा गर्भ निरोधक को सावधानी से आवरण से बाहर खींचिये।

चरण 3:– गर्भ निरोधक की सही दिशा जांचइये तथा गर्भ निरोधक को अंगूठे तथा तर्जनी से पकड़िये, ताकि हवा गर्भ निरोधक के निपल से

निकल जाये। सुनिश्चित कीजिए कि गर्भ निरोधक की घूमती किनारी चोटी से बाहर की तरफ को घूमें।

चरण 4:– गर्भ निरोधक की चोटी पकड़े रखिये, गर्भ निरोधक को सीधे लिंग के ऊपरी हिस्से पर रखें, तथा गर्भ निरोधक को सावधानीपूर्वक लिंग के आधार की तरफ खोलते जायें। गर्भ निरोधक को साथी के मुँह, गुदे अथवा योनि के सम्पर्क में आने से पहले पहन लेना चाहिए।

चरण 5:– संभोग।

चरण 6:– स्खलन के बाद लिंग को योनि से बाहर खींचिए जबकि लिंग अभी भी सीधा है। लिंग को अपने साथी के शरीर से हटाते समय यह ध्यान रखें कि कंडोम फिसल न जाये। गर्भ निरोधक के कोर को लिंग के आधार की तरफ से पकडीये।

चरण 7:– गर्भ निरोधक के अन्दर के वीर्य को अपने साथी के कहीं भी योनि के पास, मुँह अथवा गुदे के ऊपर गिरने से बचाते हुए लिंग से निकालिये।

चरण 8:– वीर्य को फर्श पर गिरने तथा गडबड़ को कारण बनने से बचाने के लिए गर्भ निरोधक के खुल किनारे को गांठ लगाईये। बन्धे हुए गर्भ निरोधक को कागज में लपेट कर कूढ़े में फैंकिये।

(पाथफाईंडर मुक्ता परियोजना द्वारा रचित इश्तहार से रूपान्तरित)

- अब प्रतिभागियों को जोड़ों में बाँटीये तथा पहले चर्चित चरणों को दिमाग में रखते हुए हर जोड़े को प्रर्दशन के अभ्यास के लिए कहें।
- इस बात पर जोर रखते हुए जैसे कि प्रतिभागी क्षेत्र स्तर पर समुदायिक सदस्यों को शिक्षण दे रहे हैं, उन्हें इसे बिना गल्ती किये सीखना जरूरी है।

- जैसे कि प्रतिभागी अब गर्भ निरोधक के प्रदर्शन से स्वच्छंद हैं, उन्हें दूसरी तकनीकी चीजों की कोशिश के लिए कहें जैसे कि अन्धेरे में लिंग प्रतिरूप एक आँख बन्द करके गर्भ निरोधक चढ़ाना (जैसे कि अधिकांशतय जहाँ पर ग्राहकों को मनोंरजन किया जाता है, वहां अन्धेरा होता है तथा यह महत्त्वपूर्ण है कि गर्भ निरोधक तब भी ठीक डले)
- पुरूष गर्भ निरोधक के प्रदर्शन के बाद, यदि सुकारक को उचित लगे तथा यदि समूह उत्सुक हो, स्त्री गर्भ निरोधक के उपयोग का प्रदर्शन कीजिए।
- नोट: स्त्री गर्भ निरोधक के प्रदर्शन तथा अभ्यास के लिए, हर किसी को अलग गर्भ निरोधक नहीं मिल सकता, परन्तु सीखने के लिए, स्त्री गर्भ निरोधक दुबारा उपयोग किया जा सकता है।

स्त्री गर्भ निरोधक प्रदर्शन:

चरण 1: अन्तिम तिथि जाँचये। तीर के निशान से नीचे को फाडीये।

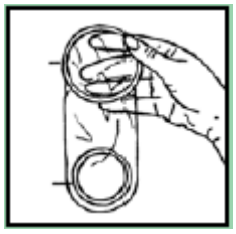

चरण 2: पुलिन्दे से गर्भ निरोधक को निकालिये।

चरण 3: अन्दररूनी कोर को अंगूठे तथा तर्जनी के मध्य पकडें। अन्दरूनी कोर से 8 का आकार बनायें अथवा अन्दरूनी को के किनारों को इक्कठा निचोडें तथा इसे मजबूती से पकड़ें।

चरण 4: स्त्री गर्भ निरोधक लगाने के लिए आरामदायक स्थिति में आईये। यह तीन स्थितियों में लगाया जा सकता है: बैठ कर, पालथी मार कर, लेट कर।

चरण 5: योनि के मुख को ढूँढीये तथा बाहरी होंठों को अलग कीजिए। अब जितना हो सके अन्दरूनी कोर योनि के अन्दर धकेलीये।

चरण 6: सूचक अथवा मध्य ऊंगली को स्त्री गर्भ निरोधक के अन्दर डाले करे इसे ठीक कीजिए। यह अभ्यास से आसान हो जायेगा।

चरण 7: आवरण का 1 इंच बाहरी कोर सहित आपके शरीर से बाह रहेगा।

चरण 8: स्त्री गर्भ निरोधक के बाहरी कोर को एक अथवा दो हाथों से पकड़ कर तथा आप यदि आप सुविधापूर्ण है तो लिंग को आवरण के अन्दर से योनि में संदर्शित कीजिए (अन्यथा यह हो सकता है कि लिंग योनि में जाते समय बाहरी कोर को योनि के अन्दर धकेल दे अथवा लिंग आवरण तथा योनि की भित्ति से होते हुए प्रविष्ट करे।

चरण 9: स्त्री गर्भ निरोधक को बाहर निकालने के लिए, बाहरी कोर को जकड़ कर पकड़िये, द्रव को बन्द करने के लिए इसे मोड़ कर लपेटिये तथा हल्के से हटाईये।

चरण 10: गर्भ निरोधक को किसी कागज अथवा खाली पुलिन्दे में रख कर कूढ़े में फैंकिये। इसे शौचालय में मत डालिये।

(www.condomdepot.com द्वारा रूपान्तिरित)

सत्र का समापन इससे कीजिए: –

- प्रतिभागियों को यह याद दिलाते हुए कियह ज्ञान उनको क्षेत्र स्तर पर समुदायिक सदस्यों से बांटना है।

- प्रतिभागियों को यह जानकारी देते हुए कि गर्भ निरोधक तथा गर्भ निरोधक के उपयोग पर जो जानकारी तथा संदेश उन्हें क्षेत्र स्तर पर सूचित करने हैं, अगले सत्र के समपर्क में विस्तार से चर्चित किये जायेंगे।

सत्र 2बी० : गर्भ निरोधक माँग तथा आपूर्ति

संदर्भ भाग 1 (दिन 3 सत्र 1बी०)

सत्र 3 : सूई तथा सिरिंज विनिमय कार्यक्रम (एन०एस०ई०पी०)

सत्र 3	सूई तथा सिरिंज विनिमय कार्यक्रम (एन०एस०ई०पी०)
उद्देश्य:	प्रतिभागियों को सूई तथा सिरिंज विनिमय कार्यक्रम (एन०एस०ई०पी०) तथा आई०डी०यू० में एच०आई०वी० की रोकथाम की महत्वता के प्रमुख उद्देश्यों की जानकारी प्रदान करना।
अपेक्षित परिणाम:	प्रतिभागीयों को एन०एस०ई०पी० के प्राथमिक मन्तव तथा इसके प्रमुख परिचालन पहलूओं की जानकारी मिलेगी।
अवधि:	1 घण्टा
कार्य प्रणाली:	प्रस्तुतिकरण, सूई तथा सिरिंज उपयोग अभ्यास, तथा चर्चा
सामग्री/आवश्यक: तैयारी	पावॅर-पुआईंट प्रस्तुतिकरण, लेपटॉप तथा प्रोजैक्टर, सूईयाँ तथा सिरिंजें, चिमटी, सूई तथा सिरिंज निपटान पात्र, सूचक पर्ची, टेप, चित्र पट, चिन्हक पैन

प्रक्रिया:

- सुकारक प्रतिभागियों को एन०एस०ई०पी० तथा इसके प्रमुख पहलूओं की अवधारणा में से गुजारने के लिए पावॅर पुआईंट प्रस्तुतिकरण का उपयोग करता है।
- प्रतिभागियों को सूईयाँ, सिरिंजें तथा टीका लगाने वाले उपकरण प्रदान करें तथा दिखायें कि आई०डी०यू० को सुरक्षित टीकाकरण विधि की सलाह कैसे देनी है।
- अभ्यास के दौरान निम्नलिखित पर जोर दें।
  - एच०आई०वी० दूषण नशीली दवा की तैयारी तथा इसके टीकाकरण में कई स्तरों पर सम्भव है।
  - उपयोगित सूईयों का एक ही बर्तन में वापिस आना अथवा दूसरे दवा पात्र का एच०आई०वी०/बी०बी०वी० पात्रों से मिलकर परिणामवश दूषित होना (बेशक एक ही व्यक्ति न अपनी अपनी सूईयाँ तथा सिरिंजें रखी हों)।
  - किसी दूसरे द्वारा उपयोग की गई एक सूई अथवा सिरिंज एच०आई०वी०/बी०बी०वी० का संचरण कर सकती है। याद रखने योग्य बात यह है कि जहाँ पर अलग सूई

अथवा सिरिंज उपयोग की जाती है, एच०आई०वी० सूई अथवा सिरिंज के सांझा करने से संचरित हा सकता है।

- O चम्मच तथा छलनी को सांझा करना परिणामवश: एच०आई०वी०/ बी०बी०वी० दूषण अथवा संचरण कर सकता है।
- O सूई लगाना - बेशक ठीक उपकरणों से - सार्वजनिक स्थल पर, जहाँ बहुत सारी सूईयाँ लगायी जाती है, जल्दबाजी में हो सकती है, जो कि एच०आई०वी० दूषण अथवा संचरण की गल्ती की सम्भावना को बढ़ा देती है।
- O असल जिन्दगी हालातों में, आई०डी०यू० को अक्सर विभिन्न प्रकार की सामग्री को सांझा करने का समझौता करना पड़ता है। दुबारा, यह फिर से जल्दी से करना पड़ता है, जो कि स्वास्थय जोखिम जैसे कि एच०आई०वी० के संचरण की सम्भावनायें बढ़ा देता है।

- निपटान हेतू सूईयाँ तथा सिरिंजों को एकत्रित करने सम्बन्धी ली जाने वाली सावाधानीयाँ के बारे में विचारावेश।
- सत्र का समापन इस बात पर बल देते हुए करें कि टी०आई० के पास यह सुनिश्चित करने के लिए कि तीखे कचरे का निपटान ठीक से हो रहा है, निम्नलिखित सामग्री उपलब्ध होनी चाहिए।
  - O छेद न होने वाले डिब्बे - क्रमांकित, जैव-खतरा चिन्ह से चिन्हित।
  - O मोटे रंगों द्वारा संकेतिक प्लासटिक के थैले - जैव-खतरा चिन्ह से चिन्हित।
  - O चिम्टे/लम्बे संडासे
  - O प्लासटिक के पात्र छलनी सहित
  - O प्लासटिक के पात्र छलनी रहित
  - O कीटाणुनाशक घोल - सोडियम हाईपोक्लाराईट, विरंजक
  - O बड़े प्लासटिक पात्र - (सफेद तथा नीले पारदर्शी)
  - O कीटाणुरहित सिरिंजों को विकृत करने के लिए कटर, यदि सिरिंजें मौके पर जला कर निपटाई जायें।

सत्र 4 : आउटरीच योजनाबद्धता

सत्र 4	आउटरीच योजनाद्धता
उद्देश्य:	प्रतिभागियों को आई०डी०यू० में आउटरीच योजनाबद्धता की व्यवहारिक जानकारी प्रदान करने के लिए।
अपेक्षित परिणाम:	प्रतिभागीयों को आई०डी०यू० में एच०आई०वी० रोकथाम के लिए आउटरीच योजनाबद्धता की अधिक जानकारी होगी।
अवधि:	1 घण्टा
कार्य प्रणाली:	पावॅर-पुआईंट प्रस्तुतिकरण, लेपटॉन तथा प्रोजैक्टर, चित्र पट, चिन्हक पैन
सामग्री/आवश्यक: तैयारी	पावॅर-पुआईंट प्रस्तुतिकरण, लेपटॉप तथा प्रोजैक्टर, सूईयाँ तथा सिरिंजें, चिमटी, सूई तथा सिरिंज निपटान पात्र, सूचक पर्ची, टेप, चित्र पट, चिन्हक पैन

प्रक्रिया:

- प्रतिभागियों को आउटरीच योजबद्धता के औचित्य तथा उद्देश्यों से गुजारने के लिए पॉवर पुआईंट प्रस्तुतिकरण का उपयोग करें।
- आउटरीच योजबद्धता प्रक्रिया में छ: बुनियादी चरणों की व्याख्या करें।
- प्रतिभागियों को छोटे समूहों में बांटे तथा उन्हें एक आउटरीच योजबद्धता का उत्तरादायित्व लेने को कहें (आउटरीच योजबद्धता के बुनियादी चरणों का अनुसरण करते हुए जैसे कि सामाजिक मानचित्रण, स्थल विश्लेषण, सम्पर्क मानचित्रण, जोखम/अतिसंवेदनशीलता आंकलन, कार्य योजना तथा व्यक्तिगत मार्गन अथवा निगरानी)।
- हर समूह को इसकी योजना तथा आउटरीच योजबद्धता प्रक्रिया में इसके द्वारा ध्यान दिये गये चरणों की रूपरेखा तैयार करने के लिए कहें।
- नीचे दिये अनुसार संक्षेप करें।

  O प्रभावशाली आउटरीच कायक्रमों के लिए योजनाबद्धता महत्वपूर्ण है।

- आउटरीच योजबद्धता आई०डी०यू० की व्यक्तिगत जोखिम तथा अतिसंवेदनशील रूपरेखा पर आधारित व्यक्तिगत स्तर की योजना को सुलभ बनाने के लिए विभिन्न उपकरणों को उपयोग करने की प्रक्रिया है तथा सेवा उद्ग्रहण की निरंतरता है।
- आउटरीच योजबद्धता आई०डी०यू० के लिए सामान्य तथा कार्यक्रम सेवाओं (यदि शुरू हों) को समझने तथा उपयुक्त वस्तु सेवा अन्तरों को पहचानने तथा निगरानी करने में सहायता करती है।
- आउटरीच योजबद्धता सेवा पहुँच की निगरानी तथा व्यवहार सुधार की पहचान के लिए महत्वपूर्ण है।
- एक प्रभावशाली आउटरीच योजना आई०डी०यू० की कार्यक्रमों में भागीदारी भी बढ़ाती है।
- व्यक्तिगत आउटरीच निगरानी के नवीनीकरण के लिए सप्ताहिक आधार पर व्यक्तिगत खोज तथा निगरानी प्रारूप उपयोग किये जाते हैं। यह आउटरीच/दी गयी सेवायों की उद्गहणता की कार्यनीतियों की पहचान में उपयोगी है अथवा इन्हें अभी भी विकसित करने की आवश्यकता है।

दिन 2 का आंकलन

तिथि प्रतिभागी का नाम (विकल्पित)

सत्र	विवरण	प्रतिपुष्टि			टिप्पणी
		☺अच्छी	😐ठीक	☹घटिया	
आज के सत्र को कुल मिलाकर प्रतिक्रिया					
1ए०	यौन सचंरण संक्रमण				
2ए०	गर्भ निरोधक				
2बी०	गर्भ निरोधक मांग तथा आपूर्ति (गर्भ निरोधक पहुँच तथा उपलब्धता मानचित्रण, गर्भ निरोधक अनुमान, गर्भ निरोधक अन्तर विश्लेषण				
3	सूई तथा सिरिंज विनिमय कार्यक्रम				
4	आउटरीच योजनाबद्धता				

कोई और टिप्पणीयाँ:

.....

.....

* कुप्या अवधि, विष्य-वस्तू, कार्य-प्रणाली तथा सचित्र सहायकों पर टिप्पणी दें।

दिन 3

दिन 3

सत्र योजना

दिन 2 की पुनरावृति 10.00सुबह - 10.15सुबह 15 मिनट

सत्र 1: निगरानी तथा दस्तावेज़ीकरण

- उपकरण 1: अवसर अन्तर विश्लेषण 10.00सुबह - 10.15सुबह 15 मिनट
  - O उपकरण का प्रस्तुतिकरण
  - O समूह कार्य - उपकरण का अभ्यास
  - O समूह द्वारा प्रस्तुतिकरण
- उपकरण 2: प्राथमिक श्रेणीक्रम 11.00सुबह - 11.30सुबह 30 मिनट
  - O उपकरण का प्रस्तुतिकरण
  - O समूह कार्य - उपकरण का अभ्यास
  - O समूह द्वारा प्रस्तुतिकरण

चाय/कॉफी अन्तराल 11.30सुबह - 11.45सुबह 15 मिनट

सत्र 1 जारी.....

- उपकरण 3: सहकर्मी मानचित्र 11.45सुबह - 12.15सुबह 30 मिनट
  - O उपकरण का प्रस्तुतिकरण
  - O समूह कार्य - उपकरण का अभ्यास
  - O समूह द्वारा प्रस्तुतिकरण
- उपकरण 4: सप्ताहिक योजना तथा गतिविधि पत्र 12.15दिन - 1.00दिन 45 मिनट
  - O उपकरण का प्रस्तुतिकरण
  - O समूह कार्य - उपकरण का अभ्यास
  - O समूह द्वारा प्रस्तुतिकरण

भोजन अन्तराल 1.00दिन - 1.45दिन 45 मिनट

सत्र 1: फोड़ा रोकथाम प्रबंधन 1.45दिन - 2.45दिन 1 घण्टा

- प्रस्तुतिकरण
- अभ्यास तथा प्रस्तुतिकरण - शारीरिक जाँच (सुरक्षित सूई स्थल)
- लघु चलचित्र प्रस्तुतिकरण तथा चर्चा

सत्र 3: जाँच केन्द्र (डी०आई०सी०) • प्रस्तुतिकरण – डी०आई०सी० की अवधारणा तथा उद्देश्य • हालात चित्र तथा चर्चा	2.45दिन – 3.45शाम	1 घण्टा
दिन 3 का आंकलन	3.45शाम – 4.00शाम	15 मिनट
सत्र 4: प्रशिक्षण आंकलन	4.00शाम – 4.30शाम	30 मिनट

सत्र 4 : निगरानी तथा दस्तावेज़ीकरण

उपकरण 1: अवसर अन्तर विश्लेषण

उपकरण 2: प्राथमिक श्रेणीक्रम

उपकरण 3: सहकर्मी मानचित्र

उपकरण 1: पी०ई० सप्ताहिक योजना तथा गतिविधि पत्र

संदर्भ: भाग 1 (दिन 4 सत्र 1)

सत्र 2 : फोड़ा रोकथाम तथा प्रबंधन

सत्र 2	फोड़ा रोकथाम तथा प्रबंधन
उद्देश्य:	प्रतिभागियों को बताना कि फोड़े कैसे बनते हैं तथा फोड़ा विकास के विभिन्न चरण।
अपेक्षित परिणाम:	प्रतिभागीयों को बुनियादी रोकथाम उपायों को पता लगेगा तथा साथ ही फोड़ों के प्रबंधन तथा देख-रेख की विधियों का पता लगेगा।
अवधि:	1 घण्टा
कार्य प्रणाली:	प्रस्तुतिकरण, शारीरिक जाँच, श्रव्य (सुनना) तथा चलचित्र प्रदर्शन तथा चर्चा
सामग्री/आवश्यक: तैयारी	पावॅर-पुआईंट प्रस्तुतिकरण, लेपटॉप तथा प्रोजैक्टर, एस०पी०वाई०एम० फिल्म, चित्र पट, चिन्हक पैन

प्रक्रिया:

- प्रतिभागियों को फोड़े के उत्पत्ति तथा इसके विकास के चरणों से गुजारने के लिए पॉवर पुआईंट प्रस्तुति का उपयोग करें। फोड़े की देखरेख तथा जटिलताओं के प्रबंधन की विधियाँ पर भी चर्चा करें।
- एक प्रतिभागी को शरीर की रूपरेखा बनवाने के लिए कहें। तब प्रतिभागियों से कहें कि उन स्थानों को दशार्ये जो सुई लगाने के लिए सुरक्षित हैं तथा वे जिन पर सूई नहीं लगानी चाहिए।
- सूई लगाने की सही विधियों पर चर्चा करने के लिए पॉवर पुआईंट प्रस्तुति का उपयोग करें (उधारणतय: नसों तथा धमनियों में अन्तर तथा शरीर में विभिन्न क्षेत्रों पर सूई लगाने के जोखिम स्तरों को पहचानने के लिए)।
- फोड़ा रोकथाम तथा प्रबंधन पर एक लघु फिल्म दिखायें (युवा तथा जनता समृद्धि समिति, एस०पी०वाई०एम०), दिल्ली। आठवें मिनट पर फिल्म को रोकें तथा फिल्म में बताये मुद्दों की चर्चा करें।

- सत्र का निम्नलिखित अनुसार समापन करें:
  - फोड़े न घुलने वाले पदार्थों, कीटाणु द्वारा सूई के स्थान को दूषित करने तथा/अथवा किसी सूई के स्थान पर किसी क्षतिग्रस्त उत्तक के परिणाम स्वरूप हो सकते हैं।
  - रोकथाम के उपायों में प्रतिभागियों को सुरक्षित सूई लगाने की विधियों, सूई लगाने की सही विधियाँ तथा सूई लगे स्थानों की देख-रेख आदि शामिल हैं।
  - फोड़ा देख-रेख का उद्देश्य फोड़े के आकार की वृद्धि तथा जटिलताओं में रोकथाम है। यह फोड़े को भरने के जल्द उपचार प्रबन्ध जितना जल्दी हो सके, से सम्भव है, उचित दर्द निवारण तथा जल्द चिकित्सा उपचार के लिए जटिल मामलों का संदर्भ लें।
  - फोड़ों के प्रबंधन के लिए समय से पहचान, उपचार तथा जटिलताओं की सूचना आवश्यक है।

सत्र 3 : जाँच केन्द्र (डी०आई०सी०)

सत्र 3	जाँच केन्द्र
उद्देश्य:	प्रतिभागियों को डी०आई०सी० की आवश्यकता तथा कार्यविधि के बारे में समझ प्रदान करना।
अपेक्षित परिणाम:	प्रतिभागीयों की डी०आई०सी० के उद्देश्यों, खास प्रक्रियाओं तथा डी०आई०सी० को चलाने की जानकारी में वृद्धि होगी।
अवधि:	1 घण्टा
कार्य प्रणाली:	प्रस्तुतिकरण, हालात चित्र तथा चर्चा
सामग्री/आवश्यक: तैयारी	पावॅर-पुआईंट प्रस्तुतिकरण, लेपटॉप तथा प्रोजैक्टर, मामला अध्ययन कार्ड 1 तथा 2, चित्र पट, चिन्हक पैन

प्रक्रिया:

- प्रतिभागियों को डी०आई०सी० की अवधारणा तथा उद्देश्यों से गुजारने के लिए पॉवर पुआईंट प्रस्तुतिकरण का उपयोग करें।
- आगे, प्रतिभागियों को दो समूहों में बांटें तथा आउटरीच कार्यक्रम और आई०डी०यू० दृष्टिकोण से डी०आई०सी० के फायदों को उजागर करने के लिए मामला अध्ययन का उपयोग करें।
- ओ०आर०डब्लयू० को समूह कार्य तथा चर्चा के लिए प्रोत्साहित करें।

मामला अध्ययन न० 1 : सुनील भीड़ का संचालन करता है।

सुनील, एक ओ०आर०डब्लयू० जोकि आई०डी०यू० परियोजना से कार्यरत है, कार्य सम्बन्धी आता है तथा पाता है कि एक उग्र भीड़ उनके इलाके में डी०आई०सी० खुलने का विरोध करने के लिए एकत्रित हुई है। वे डरते हैं कि उनके पड़ोस में अपराध बढ़ेगा। सुनील जानता है उसकी परियोजना के लिए डी०आई०सी० बहुत आवश्यक है तथा यह इस इलाके में अवश्यक खुलनी चाहिए।

प्रतिभागियों से पूछें

- सुनील क्यों सोचता है कि डी०आई०सी० आई०डी०यू० परियोजना के लिए महत्वपूर्ण है?
- डी०आई०सी० के खुलने से समुदाये को कौनसे कुछ डर हैं?
- क्या समुदायें की स्वीकृति पाना आवश्यक है?
- सुनील उग्र लोगों को डी०आई०सी० की आवश्यकता समझाने के लिए क्या कह सकता है?
- क्या ऐसे हालात सम्भवत: टाले जा सकते हैं? यदि हाँ, कैसे?

मामला अध्ययन 2 : रिकी कामयाबी की कोशिश करता है।

मोईना पिछले तीन वर्षों से दवा की सुईयाँ ले रहा है। रिकी, एक पी०ई० जो कि एक आई०डी०यू० परियोजना के साथ कार्य कर रहा है, मोईना को डी०आई०सी० आने के लिए समझा रहा है, परन्तु मोईना ऐसा करने में हिचक रहा है। यह रिकी की उसके साथ दूसरी मुलाकात है।

प्रतिभागियों से पूछें

- आप क्या समझते है कि मोईना डी०आई०सी० आने से क्यों हिचक रहा है?
- रिकी उसे कैसे समझा सकता है?
- मोईना जिन कुछ सेवाओं को डी०आई०सी० में प्राप्त कर सकता है वे कौन सी है?
- मोईना के इलावा और कौन डी०आई०सी० आ सकता है?

- समूहों को उनके विचार प्रस्तुत करने दें।
- प्रस्तुतिकरण तथा चर्चा के समय यह सुनिश्चित करें कि निम्नलिखित को शामिल किया गया है।

  O मामला अध्ययन 1:

  - डी०आई०सी० एक आउटरीच परियोजना में उपयोगिता कैसे शामिल कर सकता है पर चर्चा।

- डी०आई०सी० के आदर्श स्थान पर विचारावेश
- इन प्रयोजनों के बताये जाने पर चर्चा तथा आई०डी०यू० परियोजना पर सलाह के प्रयत्नों की उपयोगिता।

O मामला अध्ययन 2:

- प्रेरणा तथा धारणा की उत्पति पर कार्यनीतियाँ।
- डी०आई०सी० सेवाओं का सूचीकरण (मनोरंजन/विश्राम, गर्भ निरोधकों की पहुँच, एस०टी०आई० का प्रबधंन, परामर्श, सामूहिक विचार विमर्श, संदर्भ इत्यादि)।
- गोपनीयता के बुनियादी नियम तथा डी०आई०सी० पर सूचित सहमति पर जोर देना।
- संदर्भों के विभिन्न तथ्यों पर चर्चा तथा साथ ही डी०आई०सी० पर किसकी पहुँच है (आई०डी०यू०, आई०डी०यू० के साथी, आई०डी०यू० के परिवारिक सदस्य, सामान्य समुदाय)
- डी०आई०सी० के स्थान की महत्त्वता, डी०आई०सी० की प्रक्रियायें तथा नियम, डी०आई०सी० पर प्रदान की जाने वाली सेवाऐं तथा डी०आई०सी० कर्मी और उनकी भूमिकाओं को उजागर करते हुए चर्चा का समापन करें।

O डी०आई०सी० का प्रमुख उद्देश्य उपयोक्ता-मैत्रीपूर्ण केन्द्रों/चिकित्सालयों के द्वारा सेवायें प्रदान करना है जो कि आई०डी०यू० के लिए भूगोलिक तौर पर पहुँच में हो।

O डी०आई०सी० विभिन्न पदार्थ तथा सेवायें प्रदान करता है, जैसे कि आउटरीच, एन०एस०ई०पी०, आई०ई०सी० प्रसार, मनौवैज्ञानिक सहायता, गिल्टी/फोड़ा प्रबधंन, एस०टी०आई० उपचार, गर्भ निरोधक कार्यक्रम, संदर्भ तथा मनोरंजन/विश्राम सुविधायें। डी०आई०सी० एक सुरक्षित स्थान होते हैं जहाँ पर आई०डी०यू० इक्कठे को एक आवाज़ पर सकते हैं।

O डी०आई०सी० पर आई०डी०यू०, आई०डी०यू० की पत्नीयाँ/यौनसाथी, आई०डी०यू० के परिवारिक सदस्य, सामान्य समुदाये की पहुँच हो सकती है।

दिन 3 का आंकलन

तिथि प्रतिभागी का नाम (विकल्पित)

सत्र	विवरण	प्रतिपुष्टि			टिप्पणी
		☺अच्छी	😐ठीक	☹घटिया	
आज के सत्र को कुल मिलाकर प्रतिक्रिया					
1	निगरानी तथा दस्तावेज़ीकरण				
2	फोड़ा रोकथाम तथा प्रबंधन				
3	जांच-केन्द्र (डी०आई०सी०)				

कोई और टिप्पणीयाँ:

.....

.....

* कुप्या अवधि, विष्य-वस्तू, कार्य-प्रणाली तथा सचित्र सहायकों पर टिप्पणी दें।

सत्र 4 : प्रशिक्षण आंकलन

सत्र 4	प्रशिक्षण आंकलन
उद्देश्य:	प्रतिभागियों के प्रशिक्षण कार्यशाला को उत्तर को समझना।
अपेक्षित परिणाम:	प्रतिभागीयों प्रशिक्षण कार्यशाला सम्बन्धी अपने विचार सांझे करेंगे तथा प्रशिक्षक को प्रतिपुष्टि प्रदान करेंगे।
अवधि:	30 मिनट
कार्य प्रणाली:	अभ्यास
सामग्री/आवश्यक: तैयारी	हर प्रतिभागी के लिए एक 18 टोकनों का पुलिन्दा (6 लाल, 6 हरे, 6 पीले), प्रश्नों की सूची, 6 डिब्बे। यदि टोकन उपलब्ध न हों तो सुकारक स्थानीय तौर पर उपलब्ध सामग्री जैसे कि दाने, मटर अथवा पत्थर का उपयोग कर सकता है।

प्रक्रिया:

- प्रतिभागियों से प्रार्थना करें की वे प्रशिक्षण कार्यशाला सम्बन्धी अपनी निष्पक्ष प्रतिपुष्टि दें।
- हर प्रतिभागी को 18 टोकनों का एक पुलिन्दा दें। हर प्रतिभागी को 6 लाल, 6 पीले तथा 6 हरे टोकन मिलेंगे। इस समय दौरान सुकारक 6 डिब्बे तैयार करेगा (इन डिब्बों में एक छिद्र होना चाहिए ताकि टोकन अन्दर सरकाये जा सकें)।
- तक सुकारक प्रतिभागियों को समझायेगा कि वह एक प्रश्न पढ़ेगा। प्रतिभागी को यह निर्णय करना होगा कि कौनसा टोकन उस प्रश्न के लिए लिए उचित उत्तर है तथा उस प्रश्न के लिए वह टोकन डिब्बे में डालना होगा। इस तरह जैसे कि उत्तर है:-
  - 'बहुत अच्छा' अथवा 'बहुत उपयोगी' तब एक हरा टोकना डालना होगा।
  - 'ठीक है' तब एक पीला टोकना डालना होगा।
  - 'इतना अच्छा नहीं' अथवा 'इतना उपयोगी नहीं' तब एक लाल टोकना डालना होगा।

- हर प्रश्न के लिए सुकारक एक अलग डिब्बा उपयोग करेगा।

प्रतिपुष्टि के लिए प्रश्नः

1. क्या प्रशिक्षण कार्यशाला में शामिल की गयी विष्य-वस्तू प्रतिभागियों के लिए उस कार्य में उपयोगी है जो वे कर रहे हैं?
2. प्रशिक्षण कार्यशाला में उपयोग की गई कार्यप्रणालीयाँ कैसे उपयोगी है?
3. समय प्रबन्धन कैसा था?
4. निवास व्यवस्थायें कैसी थीं?
5. भोजन व्यवस्थायें कैसी थीं?
6. समुच्चय प्रशिक्षण को वे क्या दर देंगे।

- प्रतिभागियों से बाकी टोकन एकत्रित करें तथा बाद में प्रतिभागियों के उत्तरों का विश्लेषण करें।
- यह सुझावों के आधार पर चर्चा गठित करने में भी उपयोगी होगा जो प्रतिभागियों को ऐसे प्रशिक्षण को आगे बेहतर बनाने तथा उन क्षेत्रों जिन्हें वे समझते हैं कि उनके लिए पुनश्चर्या प्रशिक्षण की आवश्यकता है, में उपयोगी होगा।
- सुकारक अब सभी सदस्यों को उनकी सहभागिता का धन्यवाद करते हुए कार्यशाला को बन्द करेगा।

अनुलग्नक
जीवनदाता

1) प्रतिभागियों को पाँच अथवा छः के छोटे समूहों में बाटें। समूह सदस्यों को हाथ पकड़ने होंगे, परन्तु आगे दी गई शर्तों अनुसार। कोई भी उसके आगे के व्यक्ति को हाथ नहीं पकडेगा, कोई भी एक ही व्यक्ति के दोनों हाथ नहीं पकड़ेगा। समूह तब एक दूसरे से गाँठ के रूप में गठित होगा। खेल को उद्देश्य है कि किसी भी स्तर पर हाथ छूटे बिना तथा फिर से गोलाकार बनाने बिना गाँठ को खोलना। प्रतिभागियों को गाँठ खोलने के लिए विभिन्न रास्ते अपनाने को कहें - हाथों के नीचे से निकलना, पीछे घूमना तथा इसी तरह। अधिकत्तर समूह कुछ एक मिनटों में इस कार्य में सफल होंगे, इसलिए उन्हें प्रयत्न जारी रखने के लिए प्रोत्साहित करें।

अगले चक्र में आपको सभी छोटे समूहों को एक-दूसरे से जोड़ना होगा ताकि एक बड़ा दायरा बन जाये। खेल तब इसी ढंग से खेला जायेगा। इस अवस्था में गाँठ को खोलना अधिक कठिन होगा, परन्तु प्रतिभागियों को जब तक वे चाहें तब तक यह प्रयत्न करने दें।

अन्त में एक संक्षिप्त चर्चा करें, यह निश्चित करने के लिए कि वहाँ कुछ ऐसी समस्यायें हो सकती हैं जो कि एक पी०ई० को सुलझाने के लिए बहुत बड़ी तथा जटिल हों (जैसे कि दूसरी गाँठ खोलना कठिन था), ऐसे ही कई और हैं जिन पर वह अपने साथीयों की सहायता तथा अपने दृढ़ सकंल्प से काबू पा सकती है। पी०ई० के लिए यह भी समरण रखना महत्त्वपूर्ण है कि समुदाये इसकी अपनी समस्याओं को हल कर सकता है इस लिए पी०ई० को एक उत्प्रेरक की भांति कार्य करना चाहिये तथा समुदाये को गांठें खोलने में मदद करनी चाहिए।

2) प्रतिभागियों को जोड़ों में बाँटीये। एक व्यक्ति को कमरा छोड़ने के लिए कहें। प्रतिभागियों को तब अपना एक नेता चुनना होगा जिसे कि कुछ संकेत जैसे तालीयाँ, पैर दोहरा करना अथवा अपने हाथ हिलाना आदि करने होंगे। समूह को नेता के संकेतों को पालन करना होगा। बाहर भेजा व्यक्ति तब अन्दर आ जायेगा, उसे यह अनुमान लगाना होगा कि नेता कौन है? नेता को अपने संकेत हर कुछ मिनटों में बदलने होंगे तथा बाकी के समूह को इनका पालन करना होगा। परन्तु समूह को यह ध्यान रखना होगा कि ऐसा वह नेता की और देखे बिना करे तथा वे उसके पीछे न रहें। यदि नेता पकड़ा जाता है, तक वह कमरा छोडेगी, दूसरा नेता चुना जायेगा तथा खेल जारी रहेगा।

4) प्रतिभागियों को जोड़ों में बांटें तथा हरेक से कहें कि वह अपने साथी का ध्यान से अनुपालन करें। तब हर समूह से एक व्यक्ति कमरे से बाहर जाये जबकि उसका साथी

अपने दिखावट में कुछ बदलाव करे (उधारणतय: वह अपनी चूड़ीयाँ उतार ले अथवा अपना दुप्पटा अलग ढंग से पहन ले अथवा यह कि अपने जूते किसी और से बदल ले)। पहला व्यकित तब वापिस बुलाया जाये, उसे यह बताना होगा कि उसके साथी में अलग क्या है। यदि वह सही अनुमान लगाये तो दिखावट बदलने की अब उसकी बारी होगी जबकि उसकी साथी बाहर जायेगी।

5) प्रतिभागियों को खड़ा होने के लिए कहें तथा उन्हें बतायें की आप जो कहें वे उसका अनुसरण अवश्य करें। अब कुछ सकेंत करते हुए निर्देश दें (उदारहणत: अपने हाथ उठा कर कहें, "अपने हाथ उठायें", तब अपनी आँखें बन्द करके कहें "अपनी आँखें बन्द करें")। पहले शुरूआती कुछ समय बाद, करनी तथा कथनी उससे काफी अलग होंगे जो कि आप कह रहे हैं (उदारहणत: अपनी दायीं टांग यह कहते हुए उठायें "अपनी दायीं बाजु उठायें"), यह अधिक सम्भव है कि समूह आपके शब्दों की अपेक्षा आपके संकेतों का अनुसरण करे। इसे सूचित करें, तब इस खेल की कुछ और पारीयाँ खेलें, कभी कभार कोई नकल जो कि आपके निदेर्शों से बिल्कुल भिन्न होगी।

6) प्रतिभागियों को गोलाकार में खड़ा होने के लिए कहें, जबकि आप मध्य में खड़े हों। खेल को उद्देश्य एक कहानी रचने का है जिसमें कि हरेक द्वारा एक वाक्य का योगदान हो। आप एक संकेत की कुछ वाक्यों में व्याख्या से आरम्भ कर सकते हैं (उधाहरण के तौर पर "लड़के को लगता है कि वर्षा होने वाली है। उसे यह पक्का नहीं है कि वह बस पकड़ पायेगा") तथा तब एक प्रतिभागी को कहानी को आगे बढ़ाने के लिए एक वाक्य जोड़ने को कहें ' उधाहरणतय: वह कह सकती है, "अचानक उनसे देखा कि कोइ सड़क पर कर रहा है"), अगला प्रतिभागी एक और वाक्य जोड़ता है, तथा इसी तरह जब तक हर कोई कहानी में योगदान नहीं कर देता। सुनिश्चित करें कि प्रतिभागी यह समझें कि उनका वाक्य अवश्य कुछ शामिल करता है जिससे कि कहानी आगे बढ़ती है, यदि किसी को भी कोई समस्या हो तो आप एक और वाक्य के साथ हस्तक्षेप कर सकते हैं तथा प्रतिभागीयों को जारी रखने में सहायता कर सकते हैं। खेल खत्म होगा जब हर किसी ने अपना कुछ कह दिया हो अथवा जब कहानी का साफ समापन हो जिसे कि उन्होंने रचा है।

शब्दकोष

एडस्	एकवायर्ड आईम्यूनो डैफीसियैन्सी सिंडरोम
ए०एन०एम०	सहायक नर्स प्रसाविका
ए०आर०टी०	एण्टी रैट्रवाईरल थैरेपी
सी०बी०ओ०	समुदाय आधारित संगठन
डी०आई०सी०	जाँच केन्द्र
एफ०एस०डबल्यू०	स्त्री यौनकर्ता
एच०आई०वी०	हयूमैन आईम्यूनो डैफीसियैन्सी वायरस
एच०आर०जी०	उच्च जोखिम समूह
आई०सी०टी०सी०	संकलित परामर्श तथा जाँच केन्द्र
आई०डी०यू०	सूई द्वारा नशा करने वाला उपयोक्ता
आई०पी०सी०	परस्पर वार्तालाप
एल०ए०पी०	निचले पेट में दर्द
एम०एस०एम०	पुरूष जो पुरूष से यौन कार्य करे
एन०ए०सी०ओ०	राष्ट्रीय एडस् नियंत्रण संगठन
एन०ए०सी०पी० II	राष्ट्रीय एडस् नियंत्रण परियोजना, चरण 2
एन०ए०सी०पी० III	राष्ट्रीय एडस् नियंत्रण परियोजना, चरण 3
एन०जी०औ०	गैर-सरकारी संगठन
एम०एस०ई०पी०	सूई तथा सिरिंज विनिमय कार्यक्रम
ओ०आर०डब्लयू०	आउटरीच कार्यकर्ता
ओ०एस०टी०	मौखिक स्थानापन्न चिकित्सा
पी०ई०	सहकर्मी शिक्षक
पी०एल०एच०आई०वी०	एच०आई०वी०/एडस् के साकारात्मक लोग
आर०टी०आई०	प्रजननीय क्षेत्र संक्रमण
एस०ए०सी०एस०	राज्य एडस् नियंत्रण समिति
एस०पी०वाई०एम०	युवा तथा जनता समृद्धि समिति
एस०टी०आई०	यौन संचरित संक्रमण
टी०जी०	ट्रांस जैंडर
टी०आई०	लक्षित हस्तक्षेप